पेयजल एवं स्वच्छता विभाग
जल शक्ति मंत्रालय
DEPARTMENT OF DRINKING WATER & SANITATION
MINISTRY OF JAL SHAKTI

Har Ghar Jal
Jal Jeevan Mission

Transformational Stories:
Redefining Lives Through Water

The Impactful Journey of Jal Jeevan Mission

Contents

Arunachal Pradesh 1

1.Water Changes Everything: 1

1.पानी सब कुछ बदल देता है: अरुणाचल प्रदेश में पानी के बदलाव की एक प्रेरक कहानी.....3

2.A Transformation Story: Empowering Women Through Water.....5

2. पानी तक पहुंच से सशक्त होती महिलाएं: एक बदलाव की कहानी.....6

Assam.....7

3.Jyoti Thakur: A Beacon of Women Empowerment 7

3.জ্যোতি ঠাকুৰঃ জল ব্যৱস্থাপনাত মহিলা.....8

4.Ajit's training of Nal Jal Mitra Initiative: 9

4.অজিতৰ নল জল মিত্ৰ পদক্ষেপৰ প্ৰশিক্ষণ:.....10

5.Collaboration with Assam State Rural 11

5.জীৱন পৰিৱৰ্তন কৰা অসম ৰাজ্যিক গ্ৰাম্য জীৱিকা 13

6.Ashima's Triumph: Safe Water Amid Assam's Floods.....14

6.আশিমাৰ জয়ঃ অসমৰ বানপানীৰ মাজত নিৰাপদ পানীআশিমাৰ জয়ঃ 15

7.Relief from Long Walks to Clean Water at Home.....16

7.ঘৰতে পৰিষ্কাৰ পানী 'লং ৱাক'ৰ পৰা সকাহ।.....18

Chhattisgarh.....19

8.The Village's Hope: Gomti's Story,.....19

8. गाँव की उम्मीद: गोमती की कहानी, गाढाकुसमी में जल क्रांति की मिसाल.....20

9.From Water Crisis to Empowerment:.....21

9. कहानी: जल संकट से सशक्तिकरण की ओर.....22

10. From Water Supply to Empowerment:.....23

10. कहानी: जल आपूर्ति से सशक्तिकरण तक की यात्रा.....24

11. The Story of Badaanji where, once every drop counted.....25

11. कहानी: बदांजी की बूंद-बूंद की कहा.....26

12.Badlawand: Every Home with a Tap,.....27

12. हर घर नल, हर घर सुकून.....28

13.Ramchandra Sahu's Journey:.....29

13.रामचंद्र साहू की यात्रा: स्वच्छ पानी के लिए एक नेता.....30

14.Transformation Through Innovation:.....31

14.नवाचार से बदलाव:.....32

15.From Struggle to Relief:.....33

15.संघर्ष से राहत तक:.....35

16.The Transformative Power of Community 36

16.खाला गांव में सामुदायिक नेतृत्व की परिवर्तनकारी शक्ति.....37

Haryana.....32

17.Geeta Devi's Unique Take On 'Water Conservation'.....38

17.गीता देवी का अनोखा दृष्टिकोण 'जल संरक्षण' पर: 40

Madhya Pradesh 42

18.Clean Water Transforms the Future of Children.....42

18.शुद्ध जल से बदला बच्चों का भविष्य.....43

19.Tap Water Brings Sweetness to Relationships.....44

19.नल का पानी लाया - रिश्तों में मिठास.....45

20.Success Story:.....46

20.सफलता की कहानी:.....47

21.Elixir of Life: 48

21.अमृतरूपी जल से बदली ग्राम की तस्वीर.....49

22.Curse to Blessing:.....50

22.सफलता की कहानी:.....51

Mizoram.....52

23.Khualen: A Village Transformed by Water.....52

23.Khualen: Tuiin a thlakdang lam khua.....55

24.Turning Tides: Clean Drinking Water 57

24.Zangkhua a bungbu : 58

25.Zokhawthar's Story: Struggle for Water.....59

25.Zokhawthar Thawnthu : Tui Harsatna leh Hlawhtlinna tlang.....61

Sikkim.....63

26.From Struggle to Ease,.....63

26.सङ्घर्षदेखि सहजतासम्म,.....65

Uttar Pradesh.....66

27.A Tharu Woman's Triumph:.....66

27. एक थारू महिला की विजयगाथा: 68

28.Reining in Migration: 70

28. प्रवास पर लगाम: बलबेहट में नई उम्मीद.....72

29.Happy Families, Happy Homes:.....73

29.खुशहाल परिवार, खुशहाल घर: एक पुनर्मिलन की कहानी.....74

30.Education Unlocked:..75

30.शिक्षा का मार्ग प्रशस्त: सिद्धि ठाकुर का नया अध्याय......................................76

31.The big transformation:..77

31.महत्वपूर्ण परिवर्तन: पानी की समस्याओं से शादी के वादों तक 78

32.'As if my son has arrived'..79

32.शोकाकुल दंपति के जीवन में जल जीवन मिशन की संजीवनी........................81

Uttarakhand..83

33.Transforming Lives with Water:...83

33.जीवन में जल से परिवर्तन: दुधाली गांव की यात्रा...84

West Bengal..85

34.Empowering Tribal Communities:...85

34.পিছিয়ে পড়া সম্প্রদায়ের এক স্বপ্নের বাস্তবায়ন:..87

35.From Scarcity to Transformation:...88

35.পিছিয়ে পড়া সম্প্রদায়ের এক স্বপ্নের বাস্তবায়ন :..90

36.From Grief to Relief: A Widow's Journey to Safe Water.............92

36."নিরাপদ পানীয় জলের ছোঁয়ায় লুইটেল নায়েকের জীবনে নতুন সূচনা"..................93

37.A tribal young girl forms water use..94

37.এক তরুণী তার গ্রামে নলবাহিত পানীয় জল সরবরাহ..95

38.From Struggle to Strength: 96

38."লক্ষ্মী মুর্মুর জীবনে নিরাপদ পানীয় জলের 97

39.Raghuramer Chhat Village:..98

39."রঘুরাম এর ছাত গ্রাম:..99

Tamil Nadu..100

40.Smt. Navaneedham's Story:...100

40 .திருமதி நவநீதம் அவர்களின் கதை:..............................101

41.Smt. Vanitha's Story:...102

41.திருமதி வனிதாவின் கதை:...103

42.Smt. Meena's Story:...104

42.திருமதி. மீனாவின் கதை...105

43.From Sickness to Safety:...106

43. நோயிலிருந்து பாதுகாப்பு வரை: 107

44.Dhanalakshmi's Story:...108

44.தனலட்சுமியின் கதை:..109

45.Success Story of Har Ghar Jal in Kurandi Village,........................110

45.விருதுநகர் மாவட்டம், காரியாபட்டி........................112

The UT of Ladakh..114

46.From Struggle to Strength:...114

46.ཉུར་ཇ་ཧྲན་གིས་གཡོན་བསྐྱར་ལས་སྤྱོད་སྐྱིད་དུ..115

47.We Too Can Now Go To School!..116

47. ང་རང་ད་ལྟ་སློབ་གྲྭ་ལ་འགྲོ་ཆོག་པའི་སྐུར་འདུག!..117

48.Leading the Way to Clean Water:.. 118

48.'ཧྲིམ་ཧྲཏ་ནང་ཆུ་དཀོན་པོ་མེད་པ་བཟོ་རྒྱུའི་ན་ཇ་མ་ཧྲ་ནོ་ཡི་ལས་འགན་ཡིན།....................119

49.Flowing Against the Freeze,...121

49.མ་ཏ་ཡིན་གྱི་ཆུ་རགས་ཀྱིས་འཚོ་བ་- 40°C ལ་སླེབས་ཡོད.................................123

The UT of Jammu and Kashmir.................................125

50. Jal Diwali: The Gift of Water in Machil, Shojan 125

جل دیوالی: مچل، شـــــــوجن اور نارســــــــتان میں پانی کا تحفه....................۵۰.۱۲۶

51. Jal Jeevan Mission Fulfills Piped Water 127

پانی کا خواب پورا کـــــــرنا.. ....۵۱. ۱۲۸

सत्यमेव जयते

Foreword

सी. आर. पाटिल

केंद्रीय जल शक्ति मंत्री
भारत सरकार

जल के बिना जीवन संभव ही नहीं है। यह जीवन की आधारशिला है, जो न केवल हमारी जरूरतों को पूरा करता है, बल्कि हमारे अस्तित्व और विकास की दिशा तय करता है। यह वह स्तंभ है जिस पर सभ्यताएं खड़ी होती हैं और विकसित होती हैं। फिर भी, स्वतंत्रता के दशकों बाद भी, भारत के कई ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छ और सुरक्षित पेयजल तक पहुंच एक सपना मात्र ही रह गया था। आज, माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के दूरदर्शी नेतृत्व में, यह सपना, जल जीवन मिशन के माध्यम से साकार हो रहा है।

आज जल जीवन मिशन ने जनशक्ति को एक सूत्र में बांधते हुए ग्रामीण भारत को शाश्वत प्रगति के पथ पर अग्रसर किया है। इस मिशन के माध्यम से हर घर तक नल से जल पहुंचाने का लक्ष्य साकार हो रहा है।

यह पुस्तक आपको ग्रामीण भारत में चल रहे उस अभूतपूर्व परिवर्तन से परिचित कराती है, जो स्वच्छ पेयजल सुविधाओं के माध्यम से हो रहा है। जल जीवन मिशन एक जन आंदोलन बन चुका है, जो हर गांव, हर घर, और हर व्यक्ति के जीवन में बदलाव ला रहा है। यह मिशन स्थानीय समुदायों को सशक्त कर रहा है, खासकर महिलाओं और बच्चों को, जो अब पानी के लिए संघर्ष करने की बजाय शिक्षा, स्वास्थ्य और विकास के बेहतर अवसरों का लाभ उठा पा रहे हैं।

पुस्तक के पन्नों को पलटते हुए, आप ऐसी प्रेरक कहानियों से रूबरू होंगे जो संघर्ष, आशा और सशक्तिकरण की गाथा कहती हैं। आप देखेंगे कि कैसे स्वच्छ पेयजल ग्रामीण समाज में स्वास्थ्य में सुधार, शिक्षा के अवसर बढ़ाने और गरिमा की भावना को पुनर्जीवित करने का माध्यम बना है।

यह पुस्तक न केवल इस ऐतिहासिक पहल के प्रभावों को उजागर करती है, बल्कि इसमें उन चुनौतियों और समाधानों की भी चर्चा की गई है, जो इस मिशन के सफर का हिस्सा रहे हैं। यह समुदायों, सरकार और भागीदारों की सामूहिक भागीदारी को भी रेखांकित करती है, जिन्होंने यह सुनिश्चित करने के लिए अथक प्रयास किया है कि कोई भी व्यक्ति इस परिवर्तन से वंचित न रहे।

आइए, हम सब इस परिवर्तन का हिस्सा बनें और अपने प्रयासों से इसे और अधिक सफल बनाएं।

जल है तो जीवन है, जल है तो कल है!

जय हिन्द!

सी आर पाटील

जल शक्ति अभियान
संचय जल, बेहतर कल

Office : 210, Shram Shakti Bhawan, Rafi Marg, New Delhi-110 001
Tel: No. (011) 23711780, 23714663, 23714200, Fax : (011) 23710804
E-mail : minister-jalshakti@gov.in

सत्यमेव जयते

Foreword

Veeranna Somanna

Union Minister of State (MoS)
Ministry of Jal Shakti and Railways
Government of India

The Jal Jeevan Mission – one of the world's most ambitious programs in the WASH sector, has successfully reached more than 15.42 crore rural households. This milestone is not just of functional household tap connections, but of the kaleidoscope of transformations the Mission has brought across India's rural landscape, addressing the challenges posed by the country's vast diversity.

For millions in rural India, the daily struggle for clean water had long cast a shadow on their lives, limiting opportunities and hindering progress. The Jal Jeevan Mission was conceived as a decisive intervention, a strategic initiative to not just deliver tap water, but to fundamentally transform rural communities and unlock a future of health, prosperity, and resilience.

The Jal Jeevan Mission (JJM) has emerged as a transformative force, a revolution that has touched millions of lives, promoting dignity, equity, and ease of living. Every drop of water delivered to a home represents a step towards a healthier, more prosperous India.

Today, we stand witness to a historic transformation, one where water is not merely a necessity but a symbol of progress and dignity. The book is full of such experiences from different parts of the country. For example, in Shivhar village, Uttar Pradesh, the story of Ram Saran and his wife whose life, once marked by heartache and hardship, now brims with hope. In Uttarakhand's Dudhali village, the transformation is equally profound. Clean water now reaches every household, school, and Anganwadi center, marking an end to decades of struggle. Children, once burdened with the task of fetching water, are now attending school regularly, and women have reclaimed their time and energy for more productive pursuits. Gone are the days of disputes and endless waits at public taps; today, water flows seamlessly, bringing with it peace and progress.

This book serves as both an inspiration and a guide, offering readers valuable insights into the transformative power of collective efforts under Jal Jeevan Mission. By highlighting real stories of change and resilience, it reflects the profound impact of ensuring access to safe drinking water in rural India. As readers delve into these experiences, they will witness the tangible progress achieved and also gain a deeper understanding of the importance of sustainable water management in shaping a healthier, equitable, and prosperous future.

Jai Hind!

V. Somanna

(Veeranna Somanna)

Har Ghar Jal
Jal Jeevan Mission

Department of Drinking Water and Sanitation: Room No.- 901, B-1 Wing,
Pandit Deendayal Antyodaya Bhawan, CGO Complex, Lodhi Road, New Delhi-110003,
Tel : 011-24368617, 24368618, 24368622, E-mail - mosoffice-mdws@nic.in

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

सत्यमेव जयते

Foreword

Ashok K.K. Meena

Secretary
Government of India
Ministry of Jal Shakti
4th Floor, Pandit Deendayal Antyodaya Bhawan, Lodhi Rd, CGO Complex, Pragati Vihar, New Delhi, Delhi 110003

The story of water management in rural India is one of resilience, challenges, and an evolving quest for solutions. For generations, access to water was shaped by geography, local ingenuity, and seasonal variations. Communities lived in harmony with traditional practices, such as drawing water from stepwells, harvesting rain, and using natural springs. However, these methods were fragile, heavily reliant on the whims of nature, and often insufficient for the growing needs of a developing nation.

The post-independence era marked the beginning of a new chapter, with modern water supply schemes striving to bridge the gap between need and access. While these initiatives brought infrastructure and resources, they also revealed a deeper, systemic issue – water was abundant in some regions, scarce in others, and rarely accessible to all. The burden of fetching water fell disproportionately on women and children, and the quest for safe drinking water remained an ongoing challenge.

The Jal Jeevan Mission (JJM), launched in 2019, arrived as a watershed moment in this journey. Its promise of providing functional household tap connections to every rural household redefined not just how water was delivered but how communities engaged with it. For the first time, the vision of "Har Ghar Jal" brought water security within reach for millions, creating ripples of transformation that extended far beyond the availability of clean drinking water.

As we move into 2025, this Mission stands as a symbol of possibility – reshaping lives, empowering rural communities, and building a foundation for health, dignity, and prosperity. The transformation is profound: women finding time for economic activities and education, children free from the burden of water collection, and communities becoming stewards of their own water resources.

This booklet celebrates the real-life narratives of individuals and villages whose lives have been transformed through Jal Jeevan Mission. Each story is an example of the power of collective effort, the strength of community participation, and the resolve of a nation to ensure no one is left behind. In the following pages, we invite you to witness the incredible journey of how a promise made to millions has become a reality – one drop, one tap, one village at a time.

(Ashok K. K. Meena)

सत्यमेव जयते

Foreword

Kamal Kishore Soan

Additional Secretary & Mission Director (NJJM)
Department of Drinking Water & Sanitation

Rural India is changing like never before. It is a story of growth and hope which is both inspiring and encouraging. Since the launch of Jal Jeevan Mission (JJM) in 2019, many rural households have not only been benefitted from the infrastructural development, but have also seen paradigm shifts in the way they live, work together as communities and envision their future.

JJM, through its inclusive and community-driven approach, has delivered a wave of initiatives that have transformed rural society, especially benefitting women and children. Safe drinking water is being reached around 15.42 crore households across 5.82 lakh villages. 24.80 lakh women have been trained as water champions, testing water quality in 5.07 lakh villages. These are a few transformations that have not just improved daily life but have also empowered people and brought social and economic progress.

This booklet is an attempt to bring you closer to such realities of transformation, success stories from the villages of our dynamic and diverse country that reflect resilience, collaboration and the true spirit in the journey towards Viksit Bharat.

While Jal Jeevan Mission has laid a strong foundation, the road ahead is equally important. Evolving scenario of drinking water sector necessitates a paradigm shift in the drinking water governance mechanism. As there is a shift of focus towards service delivery, the end point delivery institutions, GPs and/ or micro utilities/ VWSCs should be kept in the centre of the entire development process. Now the way forward is to create an enabling PWS ecosystem of sustainable water future with, defined ownership and responsibility at every level. JJM has charted a path where empowered communities take charge, paving the way for self-reliant, thriving rural communities.

I extend my congratulations to the IEC team of DDWS for this amazing collection. As we look ahead, JJM will continue to build on these reforms, unlocking opportunities for every household and ensuring that clean drinking water as a source of dignity, health, and prosperity for all.

With this booklet, I invite you to celebrate the stories of change, to draw inspiration from the lives touched by JJM, and to envision a rural India where clean water flows freely, and dreams are realized every day.

(Kamal Kishore Soan)

Arunachal Pradesh

1. Water Changes Everything: A Riveting Tale of Water Transformation in Arunachal Pradesh

Tara Bomjen, a mother of two, has lived a life shaped by the relentless struggle for clean water. For years, fetching water consumed her days, leaving little time for her family or livelihood. Her home, the remote village of Soi in Arunachal Pradesh's Leparada district, sits amidst the breathtaking landscapes of the Eastern Himalayas, where snow-fed rivers flow, but access to clean drinking water was once a distant dream. Like many women in her village, Tara would leave home before sunrise, walking for hours to a spring deep in the forest. The water was often murky and insufficient, yet it sustained them. For Tara and her family, these struggles meant lost opportunities. Nima, her eldest son, frequently skipped school to help carry water when supplies dwindled, and seasonal

outbreaks of diarrheal diseases reminded them of the risks. Life seemed trapped in an endless loop of hardship. Change began trickling in with the arrival of the Jal Jeevan Mission in 2021. The promise of "Har Ghar Jal" (water to every home) sparked cautious hope. The challenge of Arunachal's steep terrains, coupled with skepticism from villagers who had lived without reliable water systems, meant that the transformation required more than just pipes and tanks. It demanded trust.

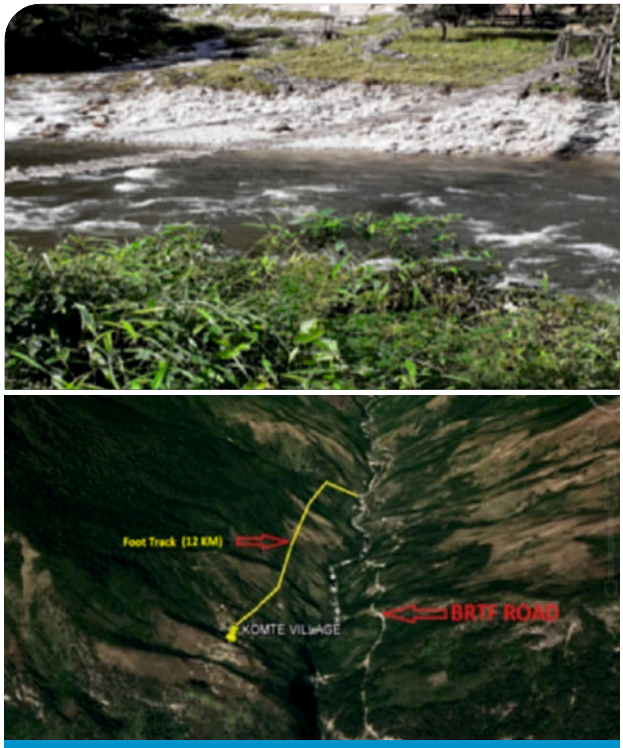

The village's location is as seen on the maps. A River borders it, limiting accessibility only through the bridges.

Source: PHED Arunachal Pradesh

A foot-road (pakhdandi) to the village which was earlier used to fetch water to houses.

Source: PHED Arunachal Pradesh

"Ngom unii, diika laagaan ngini chijey. Ango par langnam ayi anii tapa kaam kardung," says Tara Bomjen in her soft-spoken Adi dialect. (In those days, fetching water was our only task. All other work—farming or sending children to school—came after that.)

Tara became an active member of the Village Water and Sanitation Committee (VWSC), where discussions were held in local dialects to ensure no voice was overlooked.Villagers like Tara helped plant native trees in the spring's catchment area and built recharge pits to revitalize water flow as amicably discussed in the pani samiti meetings.

Over months, the tired spring regained its vigor, ensuring a steady water supply even during dry spells. By 2023, every home in Soi—including Tara's—had clean, running water. For Tara, this was a transformation beyond convenience. Her mornings, once consumed by grueling walks, are now spent tending to a thriving kitchen garden.

The impact spread quickly. Neighboring villages, inspired by Soi's success, began adopting similar approaches. The rejuvenated spring also attracted eco-tourists curious about the village's transformation. Funds from these visits are reinvested into rainwater harvesting systems and maintaining water infrastructure.

Standing by the tap in her courtyard, Tara reflects on the journey. "Diika aro, chay kaam ey, sobo asom. Sobo lam loi lami sobo diika poongto lomi" (Water is life, a gift for all. Working together, we have ensured that it flows for everyone), she said, her words a testament to community resilience.

Spring shed development Practice by the community, Longding, Arunachal Pradesh.
Source: PHED Arunachal Pradesh

"Abaa payee, ngapo kaam, sobo soi loonni ai. Diika maan sobo share longna peenye angtam dong" (Now, our work is for everyone in the village. Water is something we share and protect), she said, in voice filled with pride. The mission introduced spring shed management, blending modern techniques with indigenous knowledge.

Soi's story, through Tara's eyes, is not just about overcoming water scarcity. It's a reminder of how unity, blended with indigenous wisdom and modern solutions, can rewrite destinies. In a village once defined by struggle, clean water now flows as a symbol of hope, health, and harmony.

"Diika Jarni tako, ngama chai tenni. Ngama soom-chaat tama ayong kam lagna aane diika tagdong pangee" (With water at home, I can work peacefully. My children no longer miss school, and we drink clean water daily), she explained, her smile radiating relief.

1. पानी सब कुछ बदल देता है: अरुणाचल प्रदेश में पानी के बदलाव की एक प्रेरक कहानी

तारा बोमजन, दो बच्चों की माँ, ने स्वच्छ पानी के लिए लगातार संघर्ष से प्रभावित जीवन जिया है। वर्षों तक, पानी लाने में उनके दिन व्यतीत हो जाते थे, जिससे उनके परिवार या आजीविका के लिए बहुत कम समय बचता था। उनका घर, अरुणाचल प्रदेश के लेपराडा जिले के दूरस्थ गाँव सोई में स्थित है, जो पूर्वी हिमालय की खूबसूरत घाटियों के बीच बसा है। यहाँ बर्फ से पोषित नदियाँ तो बहती हैं, लेकिन स्वच्छ पेयजल तक पहुँचना कभी एक दूर का सपना था। अपने गाँव की कई महिलाओं की तरह, तारा सूर्योदय से पहले ही घर छोड़ देती थीं, जंगल में गहराई तक स्थित एक झरने तक पहुँचने के लिए घंटों पैदल चलती थीं। पानी अक्सर गंदा और अपर्याप्त होता था, फिर भी वही उनका सहारा था। तारा और उनके परिवार के लिए, इन संघर्षों का मतलब था खोए हुए अवसर। उनका बड़ा बेटा नीमा अक्सर पानी लाने में मदद करने के लिए स्कूल छोड़ देता था, और मौसमी दस्त रोगों के प्रकोप उन्हें जोखिम की याद दिलाते थे। जीवन कठिनाई के एक अंतहीन चक्र में फँसा हुआ लगता था।

2021 में जल जीवन मिशन के आगमन के साथ परिवर्तन की शुरुआत हुई। "हर घर जल" (हर घर में पानी) के वादे ने सतर्क आशा

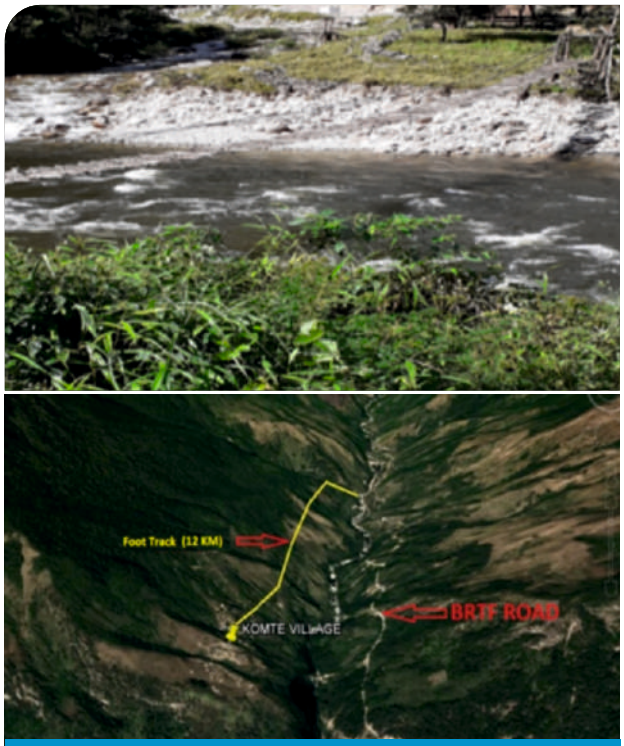

Fig 1 and 2 : गाँव का स्थान मानचित्रों पर देखा जा सकता है। इसे एक नदी सीमित करती है, जहाँ केवल पुलों के माध्यम से पहुँचा जा सकता है।

स्रोत: पीएचईडी, अरुणाचल प्रदेश।

गाँव के लिए एक पैदल सड़क (पखडंडी) जिसका उपयोग पहले घरों में पानी लाने के लिए किया जाता था।

स्रोत: पीएचईडी, अरुणाचल प्रदेश

"नगोम उनि, दीका लगान नगिनी चिजे। अंगो पार लंगनम आई अनी तपा काम करदुंग," तारा बोम्जेन अपनी मृदुभाषी आदि बोली में कहती हैं।

(उन दिनों पानी लाना ही हमारा एकमात्र काम था। बाकी सारे काम-खेती करना या बच्चों को स्कूल भेजना-उसके बाद आते थे।)

को जन्म दिया। अरुणाचल की खड़ी पहाड़ियों और विश्वसनीय जल प्रणालियों के बिना रहने वाले ग्रामीणों के संशय ने इस बदलाव को केवल पाइप और टैंकों से अधिक चुनौतीपूर्ण बना दिया। इसके लिए विश्वास की आवश्यकता थी।

तारा ने गाँव जल और स्वच्छता समिति (वीडब्ल्यूएससी) की एक सक्रिय सदस्य के रूप में काम करना शुरू किया, जहाँ स्थानीय बोलियों में चर्चाएँ की जाती थीं ताकि कोई भी आवाज अनसुनी न रहे। पानी समिति की बैठकों में सहमति के साथ, तारा और अन्य ग्रामीणों ने झरने के जलग्रहण क्षेत्र में देशज पेड़ लगाए और पानी के प्रवाह को पुनर्जीवित करने के लिए रिचार्ज पिट बनाए। महीनों के बाद, थका हुआ झरना अपनी ताकत वापस पाने लगा, जिसने सूखे के मौसम में भी लगातार जल आपूर्ति सुनिश्चित की।

2023 तक, सोई के हर घर—तारा के घर सहित—में स्वच्छ, बहता पानी उपलब्ध हो गया। तारा के लिए, यह बदलाव केवल सुविधा से कहीं अधिक था। उनकी सुबह, जो पहले कठिन चलने में व्यतीत होती थी, अब एक समृद्ध रसोई उद्यान को सँवारने में बितती हैं।

समुदाय द्वारा स्प्रिंग शेड विकास अभ्यास, लोंगडिंग, अरुणाचल प्रदेश।

स्रोत: पीएचईडी, अरुणाचल प्रदेश

अबा पयी, नगापो काम, सोबो सोई लूनी ऐ। दिका मान सोबो शेयर लोंगना पीने अंगतम डोंग" (अब, हमारा काम गांव में सभी के लिए है। पानी एक ऐसी चीज है जिसे हम साझा करते हैं और संरक्षित करते हैं), उन्होंने गर्व से भरी आवाज में कहा। मिशन ने स्वदेशी ज्ञान के साथ आधुनिक तकनीकों का मिश्रण करते हुए स्प्रिंग शेड प्रबंधन की शुरुआत की।

इस प्रभाव ने जल्दी ही अन्य क्षेत्रों को भी प्रेरित किया। पड़ोसी गाँव, सोई की सफलता से प्रेरित होकर, समान दृष्टिकोण अपनाने लगे। पुनर्जीवित झरने ने उन पर्यटकों को भी आकर्षित किया जो गाँव के इस बदलाव को देखने के इच्छुक थे। इन यात्राओं से प्राप्त धन वर्षा जल संचयन प्रणालियों और जल बुनियादी ढाँचे को बनाए रखने में पुनर्निवेशित किया गया। अपने आँगन में लगे नल के पास खड़ी तारा इस यात्रा को याद करती हैं।

तारा की नज़र से देखी गई सोई की कहानी केवल पानी की कमी को दूर करने की नहीं है। यह एक अनुस्मारक है कि कैसे एकता, देशज ज्ञान, और आधुनिक समाधान के संयोजन से भाग्य को फिर से लिखा जा सकता है। एक ऐसा गाँव जो कभी संघर्ष से परिभाषित था, अब स्वच्छ पानी एक आशा, स्वास्थ्य, और सामंजस्य के प्रतीक के रूप में बहता है।

"दिका जर्नी ताको, नगामा चाय टेनी। नगमा सूम-चाट तम आयोंग कम लगना अने दिका टैगडोंग पांगी" (घर पर पानी होने से, मैं शांति से काम कर सकती हूं। मेरे बच्चे अब स्कूल नहीं छोड़ते हैं, और हम रोजाना साफ पानी पीते हैं), उन्होंने समझाया, उनकी मुस्कान से राहत मिल रही थी।

2. A Transformation Story: Empowering Women Through Water Access

Akom, a doting mother and homemaker in Doji Jelly village, West Siang District, vividly remembers the exhausting days of her past. Every morning began with a long, difficult trek to fetch water, balancing pots on her head while navigating the rocky mountain paths. One incident remains etched in Akom's memory—slipping on a wet slope while carrying water and falling hard on the rocky path. The pots shattered, and she was left bruised and bleeding. That day, she not only lost the water she had worked so hard to fetch but also hurt badly. She felt completely defeated. She recalls, the pain still vivid in her mind. It was moments like these that made the daily struggle for water feel unbearable.

Doji Jelly, home to 275 residents and 56 households, struggled with an unreliable water supply. Such incidences were common among the people of the hamlet. Earlier attempts to solve the problem had failed, forcing families like Akom's to dedicate much of their time and energy to securing water for drinking, cooking, and cleaning. Women bore the brunt of this burden, and during dry spells, their lives revolved entirely around fetching water.

In 2019, hope arrived with the Jal Jeevan Mission (JJM). Gram Sabha meetings were held, and the community came together to form a Village Water and Sanitation Committee (VWSC). Guided by the Public Health Engineering and Water Supply Department, the villagers created a plan to build a reliable water supply system.

Akom, a beneficiary of the JJM and a member of VWSC feels empowered by receiving tap connection.

Source: PHED, Arunachal Pradesh.

"Now, my family's life is healthier, and I feel more at peace. I no longer worry about fetching water, and my children have more time to study and play. Thanks to JJM, my family has found stability and hope for a better future." says Akom

After years of struggle, their efforts bore fruit in March 2022, when a gravity-based water supply scheme was completed.

For Akom, the transformation was life-changing. The endless treks for water became a thing of the past as clean water began flowing directly to her home. With her time freed up, she started tending to her kitchen garden and spending more time with her children. "Now, my family's life is healthier, and I feel more at peace," she says. Her children, too, no longer miss school due to water-fetching duties. The villagers didn't just stop at installing the system; they took full ownership of its maintenance. Each household began contributing Rs. 10 per month, a small fee that Akom and others paid willingly. Some families even paid the annual fee in advance, helping the VWSC collect Rs. 45,000 to fund future repairs and upkeep.

Akom is now an active member of the VWSC, participating in discussions about the system's sustainability and sharing her input on decisions like tariff adjustments.

For Akom, "Jal Jeevan Mission" has brought more than water—it has brought dignity, freedom, and a renewed sense of purpose. "We no longer have to live each day worrying about water," she says with a smile. "Now, I can dream of a better life for my children and our community."

2. पानी तक पहुंच से सशक्त होती महिलाएं: एक बदलाव की कहानी

अकोम, पश्चिम सियांग जिले के डोजी जेली गांव की एक समर्पित मां और गृहिणी, अपने बीते दिनों की थकाऊ यादों को आज भी जीवंत महसूस करती हैं। हर सुबह उनके दिन की शुरुआत पानी लाने के लिए लंबे और कठिन सफर से होती थी। वह अपने सिर पर भारी मटके संतुलित करते हुए खतरनाक पहाड़ी रास्तों से गुजरती थीं। एक घटना उन्हें आज भी स्पष्ट याद है—एक गीली ढलान पर फिसलना और चट्टानी रास्ते पर जोर से गिरना। मटके टूट गए, और वह चोटिल और लहूलुहान हो गईं। उस दिन उन्होंने केवल पानी ही नहीं खोया बल्कि आत्मविश्वास भी खो दिया। "मैंने खुद को पूरी तरह पराजित महसूस किया," वह आज भी उस दर्द को याद करते हुए कहती हैं। ऐसे क्षणों ने पानी के लिए रोज़ाना की इस जद्दोजहद को असहनीय बना दिया।

डोजी जेली, जहां 275 निवासी और 56 घर हैं, पानी की अनियमित आपूर्ति से जूझ रहा था। ऐसे हादसे वहां आम थे। इस समस्या को हल करने के लिए पहले किए गए प्रयास विफल रहे, जिससे अकोम जैसे परिवारों को पीने, खाना बनाने और साफ-सफाई के लिए पानी जुटाने में काफी समय और ऊर्जा लगानी पड़ती थी। महिलाएं इस बोझ का मुख्य हिस्सा उठाती थीं, खासकर सूखे के समय, जब उनकी जिंदगी पूरी तरह पानी लाने पर निर्भर हो जाती थी।

2019 में, जल जीवन मिशन (JJM) के साथ उम्मीद की किरणें फूटने लगीं। ग्राम सभा की बैठकों का आयोजन किया गया, और समुदाय ने एकजुट होकर एक गांव जल एवं स्वच्छता समिति (VWSC) का गठन किया। लोक स्वास्थ्य इंजीनियरिंग और जल आपूर्ति विभाग के मार्गदर्शन में, गांववासियों ने एक विश्वसनीय जल आपूर्ति प्रणाली बनाने की योजना तैयार की। मार्च 2022 में उनका प्रयास सफल हुआ, जब गुरुत्वाकर्षण आधारित जल आपूर्ति योजना पूरी हुई।

जेजेएम के लाभार्थी और वीडब्ल्यूएससी के सदस्य अकोम नल कनेक्शन प्राप्त करके सशक्त महसूस करते हैं।

स्रोत: पीएचईडी, अरुणाचल प्रदेश।

अकोम के लिए यह बदलाव जीवन को बदल देने वाला था। पानी लाने के लिए अंतहीन यात्राएं अब बीते दिनों की बात हो गईं क्योंकि साफ पानी सीधे उनके घर पहुंचने लगा। खाली समय में, अकोम ने एक सुंदर किचन गार्डन बनाया और अपने बच्चों के साथ अधिक समय बिताने लगीं। "अब, मेरे परिवार का जीवन स्वस्थ है, और मुझे मानसिक शांति मिली है," वह कहती हैं। उनके बच्चे भी अब पानी लाने के लिए स्कूल से छुट्टी नहीं लेते, जिससे परिवार को बड़ी राहत मिली है।

गांववाले सिर्फ प्रणाली की स्थापना पर नहीं रुके; उन्होंने इसके रखरखाव की पूरी जिम्मेदारी ले ली। हर घर ने महीने में 10 रुपये का योगदान देना शुरू किया, जो अकोम और अन्य ने खुशी-खुशी दिया। कुछ परिवारों ने तो सालाना शुल्क पहले ही दे दिया, जिससे VWSC ने भविष्य के रखरखाव और मरम्मत के लिए 45,000 रुपये इकट्ठा किए। अकोम, अब VWSC की एक सक्रिय सदस्य हैं। वह प्रणाली की स्थिरता के बारे में होने वाली चर्चाओं में भाग लेती हैं और टैरिफ समायोजन जैसे फैसलों पर अपनी राय देती हैं। उन्हें अपने इस योगदान पर गर्व है, यह जानते हुए कि उनकी कोशिशें समुदाय के लंबे समय के कल्याण में सहायक हैं।

अकोम के लिए, जल जीवन मिशन ने केवल पानी ही नहीं लाया, बल्कि सम्मान, स्वतंत्रता और उद्देश्य की नई भावना भी दी है। "अब हमें हर दिन पानी की चिंता में नहीं जीना पड़ता," वह मुस्कुराते हुए कहती हैं। "अब मैं अपने बच्चों और हमारे समुदाय के बेहतर भविष्य का सपना देख सकती हूं।" डोजी जेली, जो कभी कमी का प्रतीक था, अब उम्मीद का गांव बन गया है। साफ पानी तक पहुंच ने स्वास्थ्य में सुधार किया, सामुदायिक संबंधों को मजबूत किया और निवासियों को एक उज्जवल भविष्य की कल्पना करने का आत्मविश्वास दिया है।

"अब, मेरे परिवार का जीवन स्वस्थ हो गया है, और मुझे अधिक शांति महसूस होती है। अब मुझे पानी लाने की चिंता नहीं होती, और मेरे बच्चों को पढ़ाई और खेलने के लिए अधिक समय मिलता है। जे.जे.एम. की बदौलत, मेरे परिवार को स्थिरता और बेहतर भविष्य की उम्मीद मिली है," अकोम ने कहा।

Assam

3. Jyoti Thakur: A Beacon of Women Empowerment and Commitment in Water Management

Jyoti Thakur, a resident of Phulbari line in the Thakurbari Tea estate, was appointed as a Jal Mitra under the Water User Committee (WUC) for the Thakurbari Tea Estate Piped Water Supply Scheme. Following the untimely death of her father, who had previously been a volunteer in a scheme, Jyoti stepped up to take on the responsibility of ensuring the community's water needs were met. Access to safe and reliable drinking water was a challenge in many rural areas of Assam, particularly for women and marginalized communities. This role gave Jyoti the support she needed. It not only provided her with means of living but also access to water, which previously took a lot of time to fetch. Now, she can balance her life and also look after her family.

After taking on her role, Jyoti underwent a 10-day “Jal Mitra” training at ITI located at Tezpur, equipping her with the skills needed to operate the water supply system effectively.

She now ensures that water is supplied to beneficiaries twice daily at 6 AM and 4 PM. Despite the challenges of balancing work and education, Jyoti is committed to her role and pursues her graduation at Rangapara College. Jyoti's dedication to her job has significantly impacted her community.

“The commitment of Jyoti has been exceptional for her age. She ensured that the Thakurbari Scheme remained functional not just by supplying water but also by engaging with the Water User Committee,” said Jyotishman Sharma, Sub-Divisional Engineer, Dhekiajuli. Jyoti maintains a strong relationship with the Water User Committee, regularly meeting with committee members and assisting them with necessary tasks. Her leadership and commitment have made her a role model for women's empowerment within the Jal Jeevan Mission, alleviating the water-related challenges faced by other women in her community and uplifting her own family through her efforts.

Jyoti expressed her gratitude for this opportunityHer story highlights the importance of local leadership and the potential for individuals to drive change within their communities, ensuring access to safe drinking water for all..

Jyoti Thakur, a Jal Mitra, has ensured the functioning of the scheme The mission has transformed her life and allowed her to earn her daily bread with pride.

Source: PHED, Assam

Jyoti’s eyes light up as she recounts her childhood memories. She recalls sitting beside her father, fascinated by how he managed the machinery and interacted with the community. That bond not only shaped her admiration for him but also planted the seeds of her resolve to step up when he was no longer there.

"Mor deutake pani kal cholai diya somoyot moi tar logot thakiboloi bhal paisilu. Jetia pump machine cholai pani jogan disil, tetia taku dekhi mor agadh gourav hoisil. Teu mor nayak asil." Said Jyoti.

(I loved accompanying my father when he worked on the water supply system. Watching him operate the pump machines to provide water made me so proud. He was my hero.)

3. জ্যোতি ঠাকুৰঃ জল ব্যৱস্থাপনাত মহিলা সৱলীকৰণ আৰু দায়বদ্ধতাৰ এক উজ্জ্বল উদাহৰণ

ঠাকুৰবাৰী চাহ বাগিচাৰ ফুলবাৰী লাইনৰ বাসিন্দা জ্যোতি ঠাকুৰক ঠাকুৰবাৰী চাহ বাগিচাৰ নলযুক্ত পানী যোগান আঁচনিৰ বাবে পানী উপভোক্তা সমিতিৰ অধীনত জলমিত্ৰ হিচাপে নিযুক্তি দিয়া হৈছিল। পূৰ্বে এখন পানী যোগান আঁচনিৰ স্বেচ্ছাসেৱক হিচাপে কৰ্মৰত পিতৃৰ অকাল মৃত্যুৰ পিছত জ্যোতিয়ে সেই ঠাইৰ ৰাইজৰ পানীৰ প্ৰয়োজনীয়তা পূৰণ কৰাটো নিশ্চিত কৰাৰ দায়িত্ব ল'বলৈ আগবাঢ়ি আহে। বিশুদ্ধ আৰু নিৰ্ভৰযোগ্য খোৱাপানীৰ সুবিধা লাভ কৰাটো অসমৰ বহু গ্ৰাম্য অঞ্চলত, বিশেষকৈ মহিলা আৰু পিছ পৰা জনগোষ্ঠীৰ লোকৰ বাবে এক প্ৰত্যাহ্বান আছিল। জলমিত্ৰ হিচাপে নিযুক্তিৰ এই সুযোগে জ্যোতিক এই ক্ষেত্ৰত প্ৰয়োজনীয় সহায় আগবঢ়াইছিল। এই সুযোগে তাইক কেৱল জীৱন-যাপনৰ উপায়েই নহয়, পানীৰ সুবিধাও প্ৰদান কৰিছিল, য'ত পানী আনিবলৈ আগতে বহু সময় লাগিছিল। এতিয়া, তাই নিজৰ জীৱনটো সুস্থিৰ ভাৱে কটাব পাৰিব আৰু লগতে পৰিয়ালৰো যত্ন ল'ব পাৰিব।

জলমিত্ৰ হিচাপে দায়িত্ব গ্ৰহণ কৰাৰ পিছত জ্যোতিয়ে তেজপুৰত অৱস্থিত আই টি আইত ১০ দিনীয়া "জল মিত্ৰ"ৰ প্ৰশিক্ষণ গ্ৰহণ কৰি পানী যোগান ব্যৱস্থাটো সুচাৰুভাৱে চলাবলৈ প্ৰয়োজনীয় দক্ষতা আহৰণ কৰে। তাই এতিয়া হিতাধিকাৰীসকলক দৈনিক দুবাৰকৈ পুৱা ৬ বজাত আৰু বিয়লি ৪ বজাত পানী যোগান ধৰে। কৰ্ম আৰু শিক্ষা আহৰণ – এই দুয়োটা কামৰ মাজত ভাৰসাম্য ৰক্ষাৰ প্ৰত্যাহ্বানৰ মাজতো জ্যোতিয়ে নিজৰ দায়বদ্ধতাৰ পৰিচয় দি ৰঙাপাৰা মহাবিদ্যালযৰ পৰা স্নাতক ডিগ্ৰী লাভ কৰে।"জ্যোতিৰ নিজৰ দায়িত্বৰ প্ৰতি থকা সমৰ্পিত ভাৱনাই তাই বাস কৰা সমাজ খনত যথেষ্ট প্ৰভাৱ পেলাইছে। 'জ্যোতিৰ দায়বদ্ধতা তাইৰ বয়সৰ বাবে এক ব্যতিক্ৰমী উদাহৰণ। কেৱল পানী যোগানৰ দ্বাৰাই নহয়, পানী উপভোক্তা সমিতিৰ সৈতে জড়িত হৈও ঠাকুৰবাৰী আঁচনি কাৰ্যক্ষম হৈ থকাটো তাই নিশ্চিত কৰিছিল।

"- ঢেকীয়াজুলিৰ মহকুমা অভিযন্তা জ্যোতিষ্মান শৰ্মাই জ্যোতিৰ বিষয়ে এইদৰে মন্তব্য কৰে। জ্যোতিয়ে পানী উপভোক্তা সমিতিৰ সৈতে এক সুদৃঢ় সম্পৰ্ক বজাই ৰাখে, সমিতিৰ সদস্যসকলৰ সৈতে নিয়মীয়াকৈ বৈঠকত মিলিত হয় আৰু প্ৰয়োজনীয় কামত সহায় কৰে। তেওঁৰ নেতৃত্ব আৰু দায়বদ্ধতাই তেওঁক জল জীৱন মিছনৰ ভিতৰত মহিলা সবলীকৰণৰ বাবে আদৰ্শ হিচাপে গঢ়ি তুলিছে, তেওঁৰ সমাজৰ আন মহিলাসকলে সন্মুখীন হোৱা পানী সম্পৰ্কীয় প্ৰত্যাহ্বানসমূহ লাঘৱ কৰিছে আৰু তেওঁৰ প্ৰচেষ্টাৰ জৰিয়তে নিজৰ পৰিয়ালক উন্নীত কৰিছে।এই সুযোগৰ বাবে জ্যোতিয়ে সকলোলৈ কৃতজ্ঞতা জ্ঞাপন কৰে।তেওঁৰ কাহিনীয়ে স্থানীয় ব্যক্তিসকলৰ নিজৰ সমূহীয়া প্ৰচেষ্টাৰে সামাজিক পৰিৱৰ্তনৰ যাত্ৰাক আগুৱাই নিয়াৰ সম্ভাৱনাক আৰু অধিক উজ্জ্বল কৰি তুলিছে আৰু লগতে সকলোৰে বাবে বিশুদ্ধ খোৱাপানীৰো সুবিধা নিশ্চিত কৰিছে।

শৈশৱৰ স্মৃতিবোৰৰ কথা কওঁতে জ্যোতিৰ চকু দুটা উজ্জ্বল হৈ উঠে। দেউতাকৰ কাষত বহি তেওঁ কেনেকৈ যন্ত্ৰপাতি পৰিচালনা কৰিছিল আৰু সমাজৰ সৈতে কেনেকৈ যোগাযোগ ৰক্ষা কৰিছিল তাক লৈ আকৰ্ষিত হোৱাৰ কথা তাইৰ মনত আছে। "দেউতাই পানী যোগান ব্যৱস্থাত কাম কৰাৰ সময়ত লগত থাকি ভাল পাইছিলোঁ। পানী যোগান ধৰিবলৈ পাম্প মেচিনবোৰ চলাই থকা দেখি মোৰ বৰ গৌৰৱ হৈছিল। তেওঁ মোৰ নায়ক আছিল।"– জ্যোতিয়ে এইদৰে কয়।

Jyoti Thakur, a Jal Mitra, has ensured the functioning of the scheme The mission has transformed her life and allowed her to earn her daily bread with pride.

Source: PHED, Assam

Jyoti's eyes light up as she recounts her childhood memories. She recalls sitting beside her father, fascinated by how he managed the machinery and interacted with the community. That bond not only shaped her admiration for him but also planted the seeds of her resolve to step up when he was no longer there.

"Mor deutake pani kal cholai diya somoyot moi tar logot thakiboloi bhal paisilu. Jetia pump machine cholai pani jogan disil, tetia taku dekhi mor agadh gourav hoisil. Teu mor nayak asil." Said Jyoti.

(I loved accompanying my father when he worked on the water supply system. Watching him operate the pump machines to provide water made me so proud. He was my hero.)

4. Ajit's training of Nal Jal Mitra Initiative: Strengthening Community Leadership

For the people of Namchuk village in Assam's Jorhat district, water was always a necessity that came at a heavy price. The village relied on distant, often unsafe sources for drinking water, leaving families vulnerable to illnesses and daily struggles. Ajit Kalita, a resident of Namchuk, recalled her father and forefathers lived their entire lives without clean water. They all believed it was something they'd never have. The burden of this scarcity was particularly felt, by women and children, who spent hours fetching water while neglecting education and work. The absence of a sustainable water supply wasn't just inconvenient—it was life-altering, trapping the community in a cycle of health crises and lost opportunities. Ajit decided that his generation would not pass this problem on to the next. When the Jal Jeevan Mission (JJM) initiated efforts to provide piped water in Namchuk, Ajit donated a portion of his own land for the construction of the scheme. This gesture of goodwill became an example for change in the village.

As part of the initiative, Ajit was trained as a Jal Mitra, a community water volunteer. The training equipped him with the skills to operate and maintain the water supply system. Today, he ensures the scheme runs smoothly, dedicating his mornings to cleaning the system and operating the pump.

The introduction of clean water has brought noticeable improvements to daily life in Namchuk. Families now enjoy safe drinking water at home, reducing illnesses caused by unsafe sources. Women, once burdened by the time-consuming task of collecting water, now have the freedom to focus on other responsibilities. Children can attend school regularly, their health and future no longer compromised.

Namchuk's story is one of many across Assam, where Jal Mitras like Ajit are reshaping their villages. At the Indo-Bhutan border, in Chikajhora village, Shyamal Mandal carries out similar responsibilities, ensuring that the community's water needs are met. Equipped with technical skills and a sense of responsibility,.

Beneficiaries happy to receive Tap Water Connection.
Source: PHED Assam

Ajit's father, using the FHTC provided by JJM. He is happy to receive the connection.

For Ajit, the change has been deeply personal. "Pratidin moi uthilu aru moi jano je moi ekti gurutwopurna kaajor hissa hoi asu," he shares. (Every day, I wake up with the satisfaction that I'm part of something meaningful)

Despite his age and physical challenges, Ajit continues to dedicate himself wholeheartedly to his role, taking immense pride in the improved lives and happiness his efforts have brought to his community

He maintains the pipeline, conducts minor repairs, and ensures uninterrupted access to water for the village. These individuals exemplify how local leadership and simple, practical solutions can address long-standing challenges. Through their dedication, Jal Jeevan Mission has turned the vision of safe, accessible drinking water into a reality for thousands of families across Assam.

What was once a distant dream is now an everyday reality for the people of Namchuk. The availability of clean water has brought health, dignity, and new possibilities for a brighter future. Ajit's story reminds us that even small acts of determination can ripple outwards, touching the lives of an entire community and beyond. Assam has taken a pioneering step in training and employing Scheme Volunteers, known as Jal Mitras, under the Jal Jeevan Mission (JJM). To date, over 19,400 Jal Mitras have been selected and trained to manage the daily operations of water supply schemes, ensuring consistent access to water for rural beneficiaries throughout the state.

4. অজিতৰ নল জল মিত্র পদক্ষেপৰ প্রশিক্ষণ: সমূহীয়া নেতৃত্বক শক্তিশালী কৰা

অসমৰ যোৰহাট জিলাৰ নামচুক গাঁৱৰ জনসাধাৰণৰ বাবে পানী সদায় এক বহুমূলীয়া প্রয়োজনীয় বস্তু আছিল। গাঁওখনে খোৱাপানীৰ বাবে দূৰৈৰ, প্রায়ে অসুৰক্ষিত উৎসৰ ওপৰত নির্ভৰ কৰিছিল, যাৰ ফলত পৰিয়ালবোৰে ৰোগ আৰু দৈনন্দিন সংগ্রামৰ সন্মুখীন হ'বলগীয়া হৈছিল। নামচুকৰ বাসিন্দা অজিত কলিতাই মনত পেলায় কিদৰে তেওঁৰ পিতৃ আৰু পূর্বপুৰুষসকলে গোটেই জীৱন বিশুদ্ধ পানী নোহোৱাকৈয়ে কটাবলগীয় হৈছিল। তেওঁলোকে সকলোৱে ধৰি লৈছিল যে বিশুদ্ধ পানী তেওঁলোকৰ বাবে কেতিয়াও উপলব্ধ নহব। এই অভাৱৰ বোজা বিশেষকৈ অনুভৱ কৰিছিল, মহিলা আৰু শিশুসকলে, যিসকলে শিক্ষা আৰু দৈনন্দিন কামক অৱহেলা কৰি ঘণ্টাৰ পিছত ঘণ্টা পানী আনিবলৈ ব্যৱহাৰ কৰিছিল। বহনক্ষম পানী যোগানৰ অনুপস্থিতি কেৱল অসুবিধাজনকেই নাছিল—ই জীৱন সলনি কৰিছিল, সমাজখনক স্বাস্থ্য সংকট আৰু হেৰুৱা সুযোগৰ চক্রবেহুত আবদ্ধ কৰি ৰাখিছিল।

অজিতে সিদ্ধান্ত ল'লে যে তেওঁৰ প্রজন্মই এই সমস্যা পৰৱর্তী প্রজন্মলৈ আগবঢ়াই নিদিয়ে। যেতিয়া জল জীৱন মিছনে নামচুকত পাইপ পানী যোগান ধৰাৰ প্রচেষ্টা আৰম্ভ কৰিছিল, অজিতে আঁচনিখন নির্মাণৰ বাবে নিজৰ মাটিৰ এটা অংশ দান কৰে। এই সদিচ্ছাৰ ইংগিত গাঁৱৰ পৰিৱর্তনৰ আদর্শ হৈ পৰিল। এই পদক্ষেপৰ অংশ হিচাপে অজিতে জল মিত্র নামৰ সামূহিক পানীৰ স্বেচ্ছাসেৱক হিচাপে প্রশিক্ষণ লাভ কৰে। প্রশিক্ষণে তেওঁক পানী যোগান ব্যৱস্থা পৰিচালনা আৰু ৰক্ষণাবেক্ষণৰ দক্ষতাৰে সজ্জিত কৰি তুলিছিল। আজি তেওঁ আঁচনিখন সুচাৰুৰূপে চলি থকাটো নিশ্চিত কৰে, নিজৰ ৰাতিপুৱাৰ সময় বোৰ আচঁনি খুন পৰিষ্কাৰ কৰা আৰু পাম্পটো চলোৱাৰ বাবে উৎসর্গা কৰে। বিশুদ্ধ পানীৰ উপলব্ধতাই নামচুক গাৱঁৰ ৰাইজৰ দৈনন্দিন জীৱনৰ লক্ষণীয় উন্নতি সাধন কৰিছে।

পৰিয়ালসমূহে এতিয়া ঘৰতে বিশুদ্ধ খোৱাপানী উপভোগ কৰে, যাৰ ফলত অসুৰক্ষিত উৎসৰ ফলত হোৱা ৰোগ হ্রাস পায়। এসময়ত পানী সংগ্রহৰ সময়সাপেক্ষ কামৰ বোজা ভর্তি মহিলাসকলে এতিয়া আন দায়িত্বত মনোনিৱেশ কৰাৰ স্বাধীনতা লাভ কৰিছে। শিশুসকলে নিয়মিতভাৱে স্কুললৈ যাব পাৰে, তেওঁলোকৰ স্বাস্থ্য আৰু ভৱিষ্যতৰ লগত আৰু আপোচ নহয়। নামচুকৰ কাহিনী সমগ্র অসমৰ বহুতো কাহিনীৰ ভিতৰত অন্যতম, য'ত অজিতৰ দৰে জল মিত্রসকলে নিজৰ গাঁওখনক নতুন ৰূপ দিছে। ভাৰত-ভূটান সীমান্তত, চিকাঝোৰা গাঁৱত শ্যামল মণ্ডলেও একেধৰণৰ দায়িত্ব পালন কৰি সম্প্রদায়টোৰ পানীৰ প্রয়োজনীয়তা পূৰণ কৰাটো নিশ্চিত কৰে। কাৰিকৰী দক্ষতা আৰু দায়িত্ববোধেৰে সজ্জিত তেওঁ পাইপলাইনৰ ৰক্ষণাবেক্ষণ কৰে, সৰু সৰু মেৰামতি কৰে, আৰু গাঁৱৰ বাবে পানীৰ নিৰৱচ্ছিন্ন সুবিধা নিশ্চিত কৰে।

টেপ ৰাটাৰ কানেকচন লাভ কৰি সূখী হিতাধিকাৰী।
উৎসঃ পি এইচ ই ডি অসম

Ajit's father, using the FHTC provided by JJM. He is happy to receive the connection.

এই ব্যক্তিসকলে স্থানীয় নেতৃত্ব আৰু সহজ, ব্যৱহাৰিক সমাধানে দীর্ঘদিনীয়া প্রত্যাহ্বানসমূহ কেনেকৈ মোকাবিলা কৰিব পাৰে তাৰ উদাহৰণ দাঙি ধৰে। তেওঁলোকৰ নিষ্ঠাৰ জৰিয়তে জল জীৱন মিছনে সমগ্র অসমৰ হাজাৰ হাজাৰ পৰিয়ালৰ বাবে সুৰক্ষিত, সুলভ খোৱাপানী যোগানৰ সপোনক বাস্তৱত পৰিণত কৰিছে। এসময়ত যিটো অলীক কল্পনা আছিল, সেয়া এতিয়া নামচুকবাসীৰ বাবে এক দৈনন্দিন বাস্তৱ।

বিশুদ্ধ পানীৰ উপলব্ধতাই স্বাস্থ্য, মর্যাদা, আৰু উজ্জ্বল ভৱিষ্যতৰ নতুন সম্ভাৱনা কঢ়িয়াই আনিছে। অজিতৰ কাহিনীয়ে আমাক মনত পেলাই দিয়ে যে দৃঢ়তাপুর্ণ এনে সৰু সৰু কার্য্যইও পৰিৱর্তনৰ টো তুলিব পাৰে, যিয়ে এটা সমগ্র জন সমূদায় আৰু ইয়াৰ বাহিৰৰ জীৱনক স্পর্শ কৰিব পাৰে। জল জীৱন মিছনৰ অধীনত জল মিত্র নামেৰে পৰিচিত আঁচনি স্বেচ্ছাসেৱকক প্রশিক্ষণ আৰু নিয়োগ কৰাৰ ক্ষেত্রত অসমে এক অগ্রণী পদক্ষেপ গ্রহণ কৰিছে। আজিলৈকে ১৯,৪০০ৰো অধিক জল মিত্রক নির্বাচিত কৰি পানী যোগান আঁচনিৰ দৈনন্দিন পৰিচালনাৰ বাবে প্রশিক্ষণ দিয়া হৈছে, যাৰ ফলত সমগ্র ৰাজ্যখনৰ গ্রাম্য হিতাধিকাৰীসকলৰ বাবে পানীৰ নিৰৱচ্ছিন্ন সুবিধা নিশ্চিত হৈছে।

5. Collaboration with Assam State Rural Livelihood Mission transforming lives

For the people of rural Assam, water has always been more than just a necessity – it's been a constant struggle. In many villages, access to clean and safe drinking water was limited, especially for women and children who bore the brunt of the water crisis. For years, families relied on distant, unreliable water sources. Water wasn't something we could always count on, and the struggle to get clean water took up much of our day.

But things have started to change with the Jal Jeevan Mission (JJM). Today, over 27,000 Piped Water Supply Schemes (PWSS) have been set up across Assam, and now, nearly 81% of rural households have Functional Household Tap Connections (FHTCs). This transformation hasn't just been about infrastructure – it's been about the way we, the people, live and thrive. Since the mission's launch on 15th August 2019, the State has achieved significant progress, with rural households' Functional Household Tap Connections (FHTCs) rising from 1.6% in 2019 to approximately 81% today. Before the Jal Jeevan Mission, people had to travel long distances, often in harsh conditions, just to fetch water for our families. For many of women and children who bore the heavy load, their life was difficult.

Today, they no longer have to worry about where our next drop of water will come from. With the installation of tap water systems right in our homes, life has become easier, healthier, and more secure. The success of JJM doesn't just lie in the pipes and taps – it's about community involvement. People like us are now directly involved in making sure the water keeps flowing. Through the formation of local Water User Committees (WUCs) and Village Water & Sanitation Committees (VWSCs), we are taking ownership of our water supply systems. People from the community are the ones who are actively involved in the operation and maintenance of the water schemes, ensuring that they stay functional and that clean water continues to flow into their homes.

With the help of local groups like the Cluster Level Federations (CLFs), we have learned how to manage the water supply systems in our villages. These CLFs trained us, showing us how to form committees, maintain the water infrastructure, and even manage finances.

These stories are just a few examples of how JJM has transformed our lives. We are no longer just recipients of aid; we are now active participants in managing and maintaining the systems that provide us with clean water. Through the efforts of community groups and the Jal Jeevan Mission, we have taken control of our water future. The ability to ensure that clean, safe water flows into our homes has brought a sense of empowerment and pride.

Happy Faces receiving tap water.
Source: PHED Assam

Shyamal Mandal, Chikajhora Village, Indo-Bhutan Border: "Moi je training pailu, taate mor jibonot eku boro poriborton anise. Ekhon, mur biswas ase je moi sorbaap shahajjo kori, chhoto dhongor khati-poni aru pipeline babe sab kisu thik-thak rakhi, jate amari gaonot pani niyor bostha bhal thake. Amara gaon bilak eta purbottor passote thaka, tai eta dangor chahida, kintu moi lagatar thik-thak pani di thaki. Mur gaonwar jati ho, moi jitu bhal-pabai pani pao, etiya he ame phiri thoka, aru etu amar samudaayor bhobishyotor babe boro poriborton anise."

(The training I received was a turning point for me. I have gained the confidence to handle minor repairs and manage the entire water supply system for our village. Despite the challenges of living in such a remote area, I ensure that the water supply remains steady and reliable. For me, it's a matter of pride to ensure that my fellow villagers have access to clean, uninterrupted water. The impact on our community's well-being is immeasurable, and I feel truly honoured to be part of this change.)

It's not just about the water – it's about the opportunity to improve our own lives and the lives of our families. involved in the operation and maintenance of the water schemes, ensuring that they stay functional and that clean water continues to flow into their homes.

With the help of local groups like the Cluster Level Federations (CLFs), we have learned how to manage the water supply systems in our villages. These CLFs trained us, showing us how to form committees, maintain the water infrastructure, and even manage finances.

These stories are just a few examples of how JJM has transformed our lives. We are no longer just recipients of aid; we are now active participants in managing and maintaining the systems that provide us with clean water. Through the efforts of community groups and the Jal Jeevan Mission, we have taken control of our water future.

The ability to ensure that clean, safe water flows into our homes has brought a sense of empowerment and pride. It's not just about the water – it's about the opportunity to improve our own lives and the lives of our families.

Santi Devi, a resident of our village, shared her experience with pride. "Mor gaonot, aide aim Jun bat deka ase, aru Ei obligate jibonot bahu Bhabha poriborton anise," she said. "Katiana, jol power babe sibilant kotha house. Amar gaonot hukou Manu khubz Dhaniya babe jol loin Jabo pare, kintu aide jol power aru bule bout best sohoj hoise. Ahise, mor gaonor manuhar manobikota aru sorbotra jol rakhila ase. Ami jitu kisuman din dhori bahiror sahara laage thaakilu, heitu ahibo nai. Ajiye, amar gaonor manuhaloi apunarai jol uthoi thake, aru surakshit thake.

(Santi Devi, a resident of our village, shared her experience with pride. "

In our village, we have seen so many changes in our lives today. Once, fetching water was a daily struggle. But now, getting water and carrying it has become much easier. Today, everyone in my village feels proud and confident, knowing water is available at our doorstep. What once made us dependent on external help is no longer an issue. Now, the people of our village manage the water supply themselves, and it's secure for everyone.)

5. জীৱন পৰিৱৰ্তন কৰা অসম ৰাজ্যিক গ্ৰাম্য জীৱিকা অভিযানৰ সৈতে সহযোগিতা

অসমৰ গ্ৰাম্যাঞ্চলৰ জনসাধাৰণৰ বাবে পানী সদায় কেৱল এক প্ৰয়োজনতকৈও অধিক গুৰুত্বপূৰ্ণ বুলি বিবেচিত হৈ আহিছে – ই এক অহৰহ সংগ্ৰাম হিচাপে পৰিগণিত হৈ আহিছে। বহু গাঁৱত বিশেষকৈ পানীৰ সংকটৰ বোজা বহন কৰা মহিলা আৰু শিশুসকলৰ বাবে বিশুদ্ধ আৰু নিৰাপদ খোৱাপানীৰ সুবিধা সীমিত আছিল। বছৰ বছৰ ধৰি পৰিয়ালবোৰে দূৰৈৰ, অসুৰক্ষিত পানীৰ উৎসৰ ওপৰত নিৰ্ভৰ কৰিছিল। পানী আমি সদায় ভৰসা কৰিব পৰা বস্তু নাছিল আৰু বিশুদ্ধ পানী পোৱাৰ সংগ্ৰামে আমাৰ দিনটোৰ বহুখিনি সময় কাঢ়ি লৈছিল।

কিন্তু জল জীৱন মিছন (জে জে এম)ৰ লগে লগে কথাবোৰ সলনি হ'বলৈ আৰম্ভ কৰিছে। আজি সমগ্ৰ অসমতে ২৭,০০০ৰো অধিক নলযুক্ত পানী যোগান আঁচনি (PWSS) স্থাপন কৰা হৈছে, আৰু এতিয়া, প্ৰায় ৮১% গ্ৰাম্য পৰিয়ালত Functional Household Tap Connections (FHTC) আছে। এই ৰূপান্তৰ কেৱল আন্তঃগাঁথনিৰ ক্ষেত্ৰতেই নহয় – আমাৰ জীৱন-যাপনৰ পদ্ধতিৰ ওপৰতো হৈছে।

২০১৯ চনৰ ১৫ আগষ্টত এই অভিযান আৰম্ভ হোৱাৰ পিছৰে পৰা ৰাজ্যখনে উল্লেখযোগ্য অগ্ৰগতি লাভ কৰিছে, গ্ৰাম্য পৰিয়ালৰ কাৰ্য্যকৰী ঘৰুৱা টেপ সংযোগ (এফএইচটিচি) ২০১৯ চনত ১.৬%ৰ পৰা আজি প্ৰায় ৮১%লৈ বৃদ্ধি পাইছে। জল জীৱন মিছনৰ আগতে কেৱল পৰিয়ালৰ বাবে পানী আনিবলৈ মানুহে প্ৰায়ে কঠোৰ পৰিস্থিতিত বহু দূৰলৈ যাবলগীয়া হৈছিল। গধুৰ বোজা বহন কৰা বহু মহিলা আৰু শিশুৰ বাবে তেওঁলোকৰ জীৱনটো আছিল কঠিন। আজি তেওঁলোকে আৰু চিন্তা কৰিব নালাগে যে তেওঁলোকৰ পৰৱৰ্তী পানী খিনি ক'ৰ পৰা আহিব। তেওঁলোকৰ ঘৰতে টেপৰ পানীৰ ব্যৱস্থা স্থাপন কৰাৰ লগে লগে জীৱনটো সহজ, সুস্থ আৰু সুৰক্ষিত হৈ পৰিছে।

জে জে এমৰ সফলতা কেৱল পাইপ আৰু টেপত নিহিত নহয় – ই সামূহিক অংশগ্ৰহণৰ কথা। আমাৰ দৰে মানুহ এতিয়া পোনপটীয়াকৈ জড়িত হৈ পৰিছে যাতে পানীৰ টেপৰে পানী অহৰহ বৈ থাকে। স্থানীয় পানী উপভোক্তা সমিতি (WUC) আৰু গাঁও পানী আৰু অনাময় সমিতি (VWSC) গঠনৰ জৰিয়তে আমি আমাৰ পানী যোগান ব্যৱস্থাৰ মালিকীস্বত্ব লৈছো। সমাজৰ লোকসকলেই পানী যোগান আঁচনিসমূহৰ পৰিচালনা আৰু ৰক্ষণাবেক্ষণৰ কামত সক্ৰিয়ভাৱে জড়িত হৈ থাকে, যাতে সেইবোৰ কাৰ্যক্ষম হৈ থাকে আৰু বিশুদ্ধ পানী তেওঁলোকৰ ঘৰলৈ বৈ থাকে।

ক্লাষ্টাৰ লেভেল ফেডাৰেচন (CLF)ৰ দৰে স্থানীয় গোটৰ সহায়ত আমি আমাৰ গাঁৱৰ পানী যোগান ব্যৱস্থা কেনেকৈ পৰিচালনা কৰিব লাগে সেই বিষয়ে শিকিছো। এই চিএলএফসকলে আমাক প্ৰশিক্ষণ দিছিল, কমিটী গঠন কৰা, পানীৰ আন্তঃগাঁথনি ৰক্ষণাবেক্ষণ কৰা, আনকি বিত্তীয় ব্যৱস্থাও দেখুৱাইছিল।

এই কাহিনীবোৰ মাত্ৰ কেইটামান উদাহৰণ মাত্ৰ যে জে জে এম এ আমাৰ জীৱনটোক কেনেদৰে ৰূপান্তৰিত কৰিছে। আমি এতিয়া কেৱল সাহায্যপ্ৰাপ্ত গ্ৰাহক নহয়; আমি এতিয়া আমাক বিশুদ্ধ পানী প্ৰদান কৰা ব্যৱস্থাসমূহ পৰিচালনা আৰু ৰক্ষণাবেক্ষণৰ ক্ষেত্ৰত সক্ৰিয় অংশগ্ৰহণকাৰী। সামূহিক গোট আৰু জল জীৱন মিছনৰ প্ৰচেষ্টাত আমি আমাৰ জল ভৱিষ্যতৰ ওপৰত নিয়ন্ত্ৰণ লাভ কৰিছো। আমাৰ ঘৰলৈ যাতে বিশুদ্ধ, নিৰাপদ পানী বৈ থাকে, তাৰ ভাৱনাই সৱলীকৰণ আৰু গৌৰৱৰ ভাৰ কঢ়িয়াই আনিছে। ই কেৱল পানীৰ কথা নহয় – নিজৰ জীৱন আৰু পৰিয়ালৰ জীৱন উন্নত কৰাৰ সুযোগৰ কথা।

টেপৰ পানী গ্ৰহণ কৰি সুখী মুখ।
উৎসঃ পি এইচ ই ডি অসম

6. Ashima's Triumph: Safe Water Amid Assam's Floods

In the monsoon of 2024, when the Brahmaputra River once again broke its banks, wreaking havoc across Assam, the Arunamukhchuk village in Jorhat District faced nature's fury. Fields submerged, homes half-drowned, and roads swept away, it seemed like survival itself was in question. Amid the chaos, 36-year-old Anima Devi, a farmer's wife, clung to a sliver of hope—her tap.

For decades, floods brought relentless hardships to Anima's family. Every inundation not only wiped out their crops but left them grappling with waterborne diseases. "We could handle hunger, but unsafe water meant illness followed us like a shadow," Anima recalled in her Assamese dialect, her voice quivering with emotion. This year was different. Anima turned the tap installed through the Jal Jeevan Mission (JJM) in her modest kitchen. Out poured clean, potable water—a miracle in the midst of a calamity. The tap wasn't just another infrastructure; it was thoughtfully placed three feet above the ground, a part of JJM's flood-resilience measures.

Anima's home, located near the Arunamukhchuk Water Supply Scheme, had access to one of the 1,394 water supply schemes affected by the floods in Assam that year. While many schemes faced

minor disruptions, like pipeline leaks, the elevated infrastructure ensured Anima's tap remained operational.

Behind the scenes, this reliability owed much to the efforts of Jal Mitra Prabhat Mili, a local hero in every sense. Braving waist-deep water and torrential rains, Prabhat worked tirelessly to keep the water supply functional.

In many ways, JJM's intervention had rewritten survival stories in villages like Arunamukhchuk. Before the mission, water during floods was an unmanageable crisis. Now, families like Anima's could rely on Functional Household Tap Connections (FHTCs) for safe water even during nature's worst.

For Anima Devi, the simple act of turning on her tap during those dark days meant more than just quenching thirst—it symbolized survival, hope, and resilience. Her family emerged from the floods unscathed, thanks to JJM's foresight and the unyielding spirit of people like Prabhat.

Flooding is a recurring challenge in Assam, where the Brahmaputra River system often inundates large areas, causing widespread damage to infrastructure, agriculture, and local communities. These annual floods significantly disrupt lives and present a major hurdle in delivering essential services, including safe drinking water. Ensuring resilient water supply systems in flood-prone areas is critical to maintaining consistent access to potable water.

Anima receiving safe, potable water even during the floods is a boon for her in the tough time.

Source: PHED Assam

6. আশিমাৰ জয়ঃ অসমৰ বানপানীৰ মাজত নিৰাপদ পানীআশিমাৰ জয়ঃ অসমৰ বানপানীৰ মাজত নিৰাপদ পানী

২০২৪ চনৰ বাৰিষাত যেতিয়া ব্ৰহ্মপুত্ৰ নদীয়ে পুনৰবাৰ পাৰ ভাঙি সমগ্ৰ অসমতে বিধ্বংসী ৰূপ ধাৰণ কৰিছিল, তেতিয়া যোৰহাট জিলাৰ অৰুণামুখচুক গাঁওখনে প্ৰকৃতিৰ ক্ৰোধৰ সন্মুখীন হৈছিল। পথাৰবোৰ ডুব গৈছিল, ঘৰবোৰ আধা ডুব গৈছিল, ৰাস্তাবোৰ বুৰ গৈছিল, এনে লাগিছিল জীয়াই থকাটোৱেই এটা প্ৰশ্নৰ দৰে হৈ পৰিছিল। বিশৃংখলতাৰ মাজতে কৃষকৰ পত্নী ৩৬ বছৰীয়া অনিমা দেৱীয়ে আশাৰ টুকুৰা এটাত আঁকোৱালি লৈছিল— তাইৰ টেপটো।

দশক দশক ধৰি বানপানীয়ে অনিমাৰ পৰিয়াললৈ সীমহীন কষ্ট কঢ়িয়াই আনিছিল। প্ৰতিটো বানপানীয়ে তেওঁলোকৰ শস্যবোৰ ধংস কৰি পেলোৱাই নহয়, পানীজনিত ৰোগৰ সৈতেও যুঁজিবলৈ বাধ্য কৰাইছিল। “আমি ভোক চম্ভালিব পাৰিছিলো, কিন্তু অসুৰক্ষিত পানী মানে বেমাৰে ছাঁৰ দৰে আমাৰ পিছে পিছে ঘুৰি ফুৰিছিল,” অনিমাই আৱেগেৰে কঁপি থকা মাতেৰে অসমীয়া উপভাষাত স্মৰণ কৰিছিল। এই বছৰটো আছিল বেলেগ। অনিমাই নিজৰ সৰু পাকঘৰটোত জল জীৱন মিছন (জে জে এম)ৰ জৰিয়তে স্থাপন কৰা টেপটো ঘূৰাই দিলে য’ৰ পৰা বৈ আহিল পৰিষ্কাৰ, খোৱাপানী— যেন দুৰ্যোগৰ মাজত এক আশ্চর্য।

টেপটো কেৱল এটা সাধৰণ আন্তঃগাঁথনি নাছিল; ইয়াক মাটিৰ পৰা তিনি ফুট ওপৰত চিন্তাশীলভাৱে ৰখা হৈছিল, যিটো জে জে এমৰ বান-স্থিতিস্থাপক ব্যৱস্থাৰ এটা অংশ।

অৰুণামুখচুক পানী যোগান আঁচনিৰ ওচৰত অৱস্থিত অনিমাৰ ঘৰত সেই বছৰ অসমৰ বানপানীৰ ফলত ক্ষতিগ্ৰস্ত হোৱা ১৩৯৪খন পানী যোগান আঁচনিৰ ভিতৰত এখন আঁচনিৰ সুবিধা আছিল । বহু আঁচনিয়ে পাইপলাইন লিক হোৱাৰ দৰে সৰু সৰু বিঘিনিৰ সন্মুখীন হ’লেও উচ্চ আন্তঃগাঁথনিয়ে অনিমাৰ টেপটো কার্যক্ষম হৈ থকাটো নিশ্চিত কৰিছিল।

এই ক্ষেত্ৰত বহুখিনি ঋণী আছিল সকলো অর্থতে স্থানীয় নায়ক জল মিত্ৰ প্ৰভাত মিলিৰ ওচৰত। কঁকালৈকে পানী আৰু প্ৰচণ্ড বৰষুণকো নেওঁচি পানী যোগান কার্যক্ষম কৰি ৰাখিবলৈ অক্লান্তভাৱে কাম কৰিছিল প্ৰভাতে।

বহু দিশত জে জে এমৰ হস্তক্ষেপে অৰুণামুখচুকৰ দৰে গাঁৱত পুনৰ জীয়াই থকাৰ কাহিনীৰ সপোন ৰচিছিল। মিছনৰ আগতে বানপানীৰ সময়ত পানী আছিল এক অব্যৱস্থিত সংকট। এতিয়া অনিমাৰ দৰে পৰিয়ালে প্ৰকৃতিৰ আটাইতকৈ বেয়া সময়তো নিৰাপদ পানীৰ বাবে ফাংচনেল হাউচহ’ল্ড টেপ কানেকচন (এফএইচটিচি)ৰ ওপৰত নির্ভৰ কৰিব পাৰিব।

অনিমা দেৱীৰ বাবে সেই আন্ধাৰ দিনবোৰত টেপ খোলাৰ দৰে সৰল কার্য্যৰ অর্থ আছিল কেৱল পিয়াহ নিবাৰণ কৰাতকৈও অধিক— ই আছিল জীয়াই থকা, আশা আৰু স্থিতিস্থাপকতাৰ প্ৰতীক। জে জে এমৰ দূৰদর্শিতা আৰু প্ৰভাতৰ দৰে মানুহৰ অদম্য মনোভাৱৰ বাবেই তাইৰ পৰিয়ালটো বানপানীৰ পৰা কোনো ক্ষতি নোহোৱাকৈ বাচি আহিল।

অসমত বানপানী পুনৰাবৃত্তিমূলক প্ৰত্যাহ্বান, য’ত ব্ৰহ্মপুত্ৰ নদী ব্যৱস্থাই প্ৰায়ে বৃহৎ অঞ্চল প্লাৱিত কৰি আন্তঃগাঁথনি, কৃষি, স্থানীয় জনগোষ্ঠীৰ ব্যাপক ক্ষতিসাধন কৰে। এই বার্ষিক বানপানীয়ে জীৱন যথেষ্ট বিঘ্নিত কৰে আৰু বিশুদ্ধ খোৱাপানীকে ধৰি অত্যাৱশ্যকীয় সেৱাসমূহ প্ৰদানৰ ক্ষেত্ৰত এক ডাঙৰ বাধাৰ সৃষ্টি কৰে। বানপানীৰ প্ৰৱণ অঞ্চলত স্থিতিস্থাপক পানী যোগান ব্যৱস্থা নিশ্চিত কৰাটো খোৱাপানীৰ সামঞ্জস্যপূর্ণ সুবিধা বজাই ৰখাৰ বাবে অতি গুৰুত্বপূর্ণ।

বানপানীৰ সময়তো অনিমাই নিৰাপদ, খোৱাপানী লাভ কৰাটো তাইৰ বাবে কঠিন সময়ত এক আশীর্বাদ।
উৎসঃ পি এইচ ই ডি অসম

7. Relief from Long Walks to Clean Water at Home. Potable Water for Hilly and Riverine Areas

The hilly areas, including Karbi Anglong, Dima Hasao, and West Karbi Anglong districts, face acute water scarcity despite being ecologically rich. Here, uneven terrain, porous soil, and limited groundwater yield make it difficult to establish a consistent water supply, often leaving communities reliant on seasonal streams. Riverine areas, on the other hand, suffer from perennial flooding, erosion, and water contamination, requiring resilient yet costly infrastructure.

For Karuna, the transformation went beyond water access. With the time saved, she could focus on farming and even start weaving traditional Karbi shawls to sell in the local market. Her children, now free from the daily chore of fetching water, had more time for school. “This water has changed everything,” Karuna said. “Our health, our work, and our future.”

Karuna’s story is one of resilience and ingenuity, mirroring the broader impact of JJM across the hilly regions of Assam. By blending modern engineering with traditional knowledge, and fostering community-led management, the mission is rewriting narratives in remote villages.

Through community meetings, Karuna learned how gravity-based water systems, a blend of traditional bamboo piping and modern filtration methods, could bring safe water directly to their homes. Skeptical yet hopeful, she watched as engineers worked alongside local villagers to set up the system, tapping into mountain springs and guiding the flow through sturdy bamboo pipelines.

The day the tap in Karuna’s courtyard finally came to life was one she would never forget. “It felt like a miracle,” she said, turning the handle and watching the water gush out, clear and cool.

She no longer needs to walk miles or worry about her children falling ill from contaminated streams. The gravity-based solution wasn’t the only innovation in Kheroni.

Solar-powered pumps ensured a steady supply even on cloudy days, while elevated storage tanks safeguarded water during heavy rains. With the infrastructure thoughtfully placed on higher ground, the system withstood the region’s unpredictable weather.

For Karuna, every drop from her tap carries a newfound dignity and security. “The hills may still be steep, but now we climb them with hope, not despair,” she said, her voice filled with gratitude for the simple yet life-changing gift of clean water.

Mor pratidinor jeebon, paanior jonno uporot porikhya hoi gol," (My daily life has become a constant struggle for water) said Karuna Teronpi, a 42-year-old mother of three from Kheroni village. Each day began with a two-hour trek down rugged terrain to fetch water from a seasonal stream—a lifeline that often dried up in the scorching months."Paani loi patwase pothor duare, or ghor bore bez jolir sorbot, ame anuporikhito hoy thaki,”

(Carrying pots of water uphill every day was not just tiring; it left us deprived of family time and farm work) Karuna shared. Despite the natural abundance around her, the porous soil and low groundwater availability made the dream of a steady water supply feel impossible for her community.

JJM Assets in the hilly regions of Assam.
Source: PHED Assam

7. ঘৰতে পৰিষ্কাৰ পানী 'লং ৰাক'ৰ পৰা সকাহ। পাহাৰীয়া আৰু নদীৰ পাৰৰ অঞ্চলৰ বাবে খোৱাপানী

কার্বি আংলং, ডিমা হাছাও, আৰু পশ্চিম কার্বি আংলং জিলাকে ধৰি পাহাৰীয়া অঞ্চলসমূহ প্ৰাকৃতিকভাৱে চহকী হোৱাৰ পিছতো তীব্ৰ পানীৰ অভাৱৰ সন্মুখীন হৈ আহিছে। ইয়াত অসমান ভূখণ্ড, ছিদ্ৰযুক্ত মাটি আৰু ভূগর্ভস্থ পানীৰ সীমিত উৎপাদনে সামঞ্জস্যপূর্ণ পানী যোগান আচঁনি স্থাপন কৰাটো কঠিন কৰি তোলে, যাৰ ফলত প্ৰায়ে ৰাইজে ঋতুভিত্তিক নৈৰ ওপৰত নির্ভৰশীল হৈ পৰে। আনহাতে নদীৰ পাৰৰ অঞ্চলসমূহে বহুবর্ষজীৱী বানপানী, খহনীয়া আৰু পানীৰ দূষণৰ ফলত ক্ষতিগ্ৰস্ত হয়, যাৰ বাবে স্থিতিস্থাপক অথচ ব্যয়বহুল আন্তঃগাঁথনিৰ প্ৰয়োজন হয়।

কৰুণাৰ বাবে এই ৰূপান্তৰ পানীৰ সুবিধাৰো বাহিৰলৈ গৈছিল। সময় ৰাহি কৰি তাই খেতিৰ কামত মনোনিৱেশ কৰিব পৰা হ'ল আনকি স্থানীয় বজাৰত বিক্ৰী কৰিবলৈ পৰম্পৰাগত কার্বি চাদৰ বোৱাও আৰম্ভ কৰিব পৰা হ'ল। এতিয়া পানী অনাৰ দৈনন্দিন কামৰ পৰা মুক্ত হৈ পৰা তাইৰ ল'ৰা-ছোৱালীবোৰে স্কুলৰ বাবে অধিক সময় পোৱা হ'ল । কৰুণাই কয়, 'এই পানীয়ে সকলো সলনি কৰি পেলাইছে। "আমাৰ স্বাস্থ্য, আমাৰ কাম, আৰু আমাৰ ভৱিষ্যত।"

কৰুণাৰ এই সহন্শীলতা আৰু কৌশলৰ কাহিনী সমগ্ৰ অসমৰ পাহাৰীয়া অঞ্চলত জে জে এমৰ বহল প্ৰভাৱৰ প্ৰতিফলন।আধুনিক অভিযান্ত্রিক প্ৰযুক্তিক পৰম্পৰাগত জ্ঞানৰ সৈতে মিহলাই, আৰু ৰাইজৰ নেতৃত্বত এনে ব্যৱস্থাপনাক পৰিচালিত কৰি, মিছনে দুর্গম গাঁৱত এক নতুন আখ্যান লিখিছে।

জনসভাৰ জৰিয়তে কৰুণাই জানিব পাৰিলে যে পৰম্পৰাগত বাঁহৰ পাইপিং আৰু আধুনিক পৰিশোধন পদ্ধতিৰ মিশ্রণ মাধ্যাকর্ষণ ভিত্তিক পানী ব্যৱস্থাই কেনেকৈ পোনপটীয়াকৈ তেওঁলোকৰ ঘৰলৈ নিৰাপদ পানী আনিব পাৰে। সন্দেহী অথচ আশাবাদী তাই চাই আছিল যেতিয়া অভিযন্তাসকলে স্থানীয় গাঁৱৰ মানুহৰ সৈতে কাম কৰি আচঁনি খ্ন স্থাপন কৰিছিল, পাহাৰৰ জুৰিবোৰত টেপ সংযোগ কৰিছিল আৰু মজবুত বাঁহৰ পাইপলাইনৰ মাজেৰে পানীৰ প্ৰবাহক পথ প্ৰদর্শন কৰিছিল।

কৰুণাৰ চোতালৰ টেপটো অৱশেষত সক্ৰীয় হৈ উঠা দিনটো তাই কেতিয়াও পাহৰিব নোৱাৰা দিন আছিল। "এটা অলৌকিক ঘটনা যেন লাগিল," তাই হেণ্ডেলটো ঘূৰাই পানী ওলাই যোৱাটো চাই ক'লে, স্পষ্ট আৰু ঠাণ্ডা।

তাই আৰু মাইলৰ পিছত মাইল খোজ কাঢ়ি যোৱাৰ প্ৰয়োজন নাই বা দূষিত নৈৰ পৰা সংগ্ৰহ কৰা পানী সেৱন কৰি সন্তান অসুস্থ হৈ পৰাৰ চিন্তা কৰাৰ প্ৰয়োজন নাই। মাধ্যাকর্ষণ ভিত্তিক সমাধানটোৱেই খেৰ'নিৰ একমাত্ৰ উদ্ভাৱন নাছিল।

সৌৰশক্তি চালিত পাম্পে ডাৱৰীয়া দিনতো অবিৰত যোগান নিশ্চিত কৰিছিল, আনহাতে উচ্চ ষ্ট'ৰেজ টেংকে প্ৰচণ্ড বৰষুণৰ সময়ত পানী সুৰক্ষিত কৰিছিল। আন্তঃগাঁথনিবোৰ চিন্তাশীলভাৱে ওখ ঠাইত স্থাপন কৰাৰ লগে লগে ব্যৱস্থাটোৱে অঞ্চলটোৰ অভাৱনীয় বতৰক সহ্য কৰিছিল।

কৰুনাৰ বাবে তাইৰ টেপৰ পৰা ওলোৱা পানীৰ প্ৰতিটো টোপালেই নতুনকৈ পোৱা মর্যাদা আৰু নিৰাপত্তা কঢ়িয়াই লৈ ফুৰে। "পাহাৰবোৰ হয়তো এতিয়াও ঠেক, কিন্তু এতিয়া আমি আশাৰে বগাই যাওঁ, হতাশাৰে নহয়," তাই ক'লে, সহজ অথচ জীৱন সলনি কৰা বিশুদ্ধ পানীৰ উপহাৰটোৰ প্ৰতি কৃতজ্ঞতাৰে ভৰি থকা তাইৰ মাতটোৰে।

Mor pratidinor jeebon, paanior jonno uporot porikhya hoi gol," (My daily life has become a constant struggle for water) said Karuna Teronpi, a 42-year-old mother of three from Kheroni village. Each day began with a two-hour trek down rugged terrain to fetch water from a seasonal stream—a lifeline that often dried up in the scorching months."*Paani loi patwase pothor duare, or ghor bore bez jolir sorbot, ame anuporikhito hoy thaki,"* (Carrying pots of water uphill every day was not just tiring; it left us deprived of family time and farm work) Karuna shared. Despite the natural abundance around her, the porous soil and low groundwater availability made the dream of a steady water supply feel impossible for her community.

Chhattisgarh

8. The Village's Hope: Gomti's Story, an Example of Water Revolution in Gadakusmi

Gadakusmi, a small village in Palapari block of Balodabazar district, Chhattisgarh, was once plagued by severe water scarcity. Home to nearly 230 families, the village had struggled with water shortages for generations. Women and the elderly bore the brunt of this crisis, spending countless hours fetching water from wells and other natural sources. Life in Gadakusmi was a daily battle against water scarcity—until the vision of one woman, Gomti Devi, became the cornerstone of change. At around 55 years of age, Gomti Devi's life was shaped by this struggle. Every morning began with the arduous task of collecting water, consuming hours of her day and leaving little time for household chores, childcare, or her own well-being. Despite the hardships, Gomti refused to give up hope. Her resilience and determination became the driving force behind the transformation of her village. With the combined efforts of the village sarpanch, local leaders, and government support, a water supply project worth ₹97.10 lakh was implemented. A high-level reservoir was constructed, ensuring a reliable water supply to every household. This project incorporated advanced methods of water conservation and distribution, providing safe drinking water to all villagers.

The impact of this project on Gomti Devi's life was profound. She no longer spends her days fetching water, freeing her time and energy for her family and other meaningful activities. Women across the village now use their time productively, children are focusing more on their education, and the elderly no longer endure the physical strain of fetching water. Deputy Sarpanch Baldev and other villagers played a pivotal role in making the project a success. They attribute this achievement to collective effort and determination, proving that community-driven initiatives can solve even the most challenging problems.

Construction of high level water reservoir
Source: PHED, Chhattisgarh

Today, Gadakusmi stands as a beacon of hope and inspiration. Gomti Devi's story highlights how access to water has transformed her life and improved the quality of life for every woman and child in the village. The success of Gadakusmi serves not only as a testament to the power of unity and sustainable solutions but also as a source of inspiration for neighboring communities.

Village resident Mrs. Gomti is sharing her story.
Source PHED, Chhattisgarh

Gomti Devi shares, "Earlier, I had to walk several miles both in the morning and evening to fetch water. Whether it was summer or winter, bringing water was my responsibility. This often delayed other household tasks, and my health was deteriorating too. But now that the water issue has been resolved, it feels like a new beginning in my life. I can now complete household chores on time and also take care of myself."

8. गाँव की उम्मीद: गोमती की कहानी, गाढाकुसमी में जल क्रांति की मिसाल

छत्तीसगढ़ के बलौदाबाजार जिले के पलापरी विकासखंड का गाढाकुसमी गाँव एक समय ऐसा था, जब पानी की कमी यहाँ की सबसे बड़ी समस्या थी। लगभग 230 परिवारों वाला यह गाँव पीढ़ियों से पानी की कमी का सामना करता आ रहा था। इस संकट के चलते ग्रामीणों को प्रतिदिन कुएं और अन्य प्राकृतिक स्रोतों से पानी लाने में संघर्ष करना पड़ता था, विशेष रूप से महिलाओं और बुजुर्गों के लिए यह चुनौती बेहद कठिन हो जाती थी। लेकिन गाँव की स्थिति को बदलने का सपना देखने वाली श्रीमती गोमती के जीवन में एक नया मोड़ तब आया, जब गाँव में एक नई जल परियोजना का शुभारंभ हुआ। घंटे लग जाते थे। इस दौरान वह घर के अन्य काम, बच्चों का ध्यान रखना और खुद का स्वास्थ्य भी ठीक से नहीं रख पाती थीं। लेकिन इस जल संकट से जूझते हुए भी उन्होंने उम्मीद नहीं छोड़ी।

गोमती देवी, जिनकी उम्र लगभग 55 साल है, का जीवन इस जल संकट से सबसे अधिक प्रभावित था। दिन की शुरुआत से ही उन्हें पानी लाने के लिए घर से बाहर निकलना पड़ता था, जिसमें उनके कई गाँव के सरपंच, स्थानीय नेताओं और सरकार के सहयोग से ₹97.10 लाख की लागत से एक उच्च स्तरीय जला गार का निर्माण किया गया। इस परियोजना ने गाँव में एक नई ऊर्जा भर दी। जला गार के निर्माण से हर घर तक पानी की आपूर्ति सुनिश्चित हुई और जल संचयन एवं वितरण के बेहतरीन तरीके अपनाए गए, जिससे गाँव के हर व्यक्ति को पीने का साफ पानी मिल सका। गोमती देवी के जीवन को बदला है

उच्च स्तरीय जला गार का निर्माण

स्रोत: पीएचईडी, छत्तीसगढ़

> गोमती देवी बताती हैं, "पहिली मोला बिहन अउ साँझ, दूनो बेरा पानी बर कई कोस चलना परथे। गरमी होय या जाड़ा, पानी लाना मोर जम्मेदारी रिहिस। एके करके घर के दूसर काम मा देरी हो जाथे अउ मोर सेहत घलो बिगड़त रिहिस। फेर अब जब पानी के दिक्कत खतम हो गे हे, मोर जिनगी माने नई सुरुआत होय हे। अब मोला घर के काम सही समय मा पूर करना मिलथे अउ मोर खुद के देखभाल घलो कर सकत हंव।"

बल्कि पूरे गाँव को एक नई दिशा दी है।

अब गाँव की महिलाएं अपने समय और ऊर्जा को पानी लाने की जगह अपने परिवार और अन्य जरूरी कामों में लगा पा रही हैं। बच्चे भी अपनी पढ़ाई पर अधिक ध्यान देने लगे हैं, और बुजुर्गों को अब पानी के लिए संघर्ष नहीं करना पड़ता।

गाँव के उप सरपंच बलदेव और अन्य ग्रामीणों ने एकजुट होकर इस परियोजना को सफल बनाया। उन्होंने बताया कि यह सफलता सामुदायिक प्रयासों और दृढ़ संकल्प का परिणाम है। इस सफलता से गाढाकुसमी गाँव के लोग एक उदाहरण बन गए हैं कि कैसे एकजुट होकर सामुदायिक समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। गाढाकुसमी गाँव की इस प्रेरणादायक कहानी ने साबित कर दिया है कि बड़े बदलाव सामुदायिक प्रयासों और स्थायी समाधान से ही संभव हैं। गोमती देवी की कहानी बताती है कि पानी की उपलब्धता ने उनके जीवन में कितना बड़ा बदलाव लाया है और कैसे यह बदलाव गाँव की हर महिला और बच्चे के जीवन को सहज बना रहा है। गाढाकुसमी की यह सफलता न केवल गाँव के लिए बल्कि आस-पास के समुदायों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बन गई है।

गांव की निवासी श्रीमती गोमती अपनी कहानी साझा कर रही हैं

स्रोत: पीएचईडी, छत्तीसगढ़

9. From Water Crisis to Empowerment: The Story of Khonsli Village

Nestled in the Kharsia block of Raipur district, Chhattisgarh, Khonsli village once battled an acute water crisis. Home to around 250 families, the village faced daily hardships due to severe water scarcity. Women, in particular, bore the brunt of this challenge, walking miles each day to fetch water from distant wells. This grueling task not only affected their health but also hindered their children's education and the overall development of the village. However, the women of Khonsli refused to surrender to adversity.

The launch of the Jal Jeevan Mission became a turning point, sparking hope and determination. The village formed the “Khushi Cluster Organization,” a collective of women dedicated to finding sustainable solutions to the water crisis. Under the leadership of Mamta, the organization’s president, they began spreading awareness about water conservation and the mission’s objectives.

In the initial phase, the organization educated villagers about the goals of the Jal Jeevan Mission and the "Har Ghar Jal" initiative. They explained that active community participation could resolve the village’s water issues. Gradually, this awareness transformed into a collective interest in water management.

Village resident Shrimat Usha Sharma is sharing her story

Source: PHED, Chhattisgarh

As their first step, the Khushi Cluster Organization conducted water conservation workshops for every family in the village. These sessions focused on building earthen tanks and harvesting rainwater. Women actively participated, not just in workshops but by implementing these techniques in their homes. Over time, a culture of water conservation took root in the village. This transformation brought remarkable changes. Water availability in the village improved significantly, and every household now had access to clean drinking water. The resolution of the water crisis led to an improvement in the quality of life for the women. Tasks that once consumed their days were replaced by time spent on developmental activities, such as supporting their children’s education and engaging in agricultural work.

The most profound outcome of this change was the empowerment of Khonsli’s women. They became self-reliant and confident. Mamta remarked, “Today, we are not just working for ourselves but for the betterment of our families and the entire village.” The Khushi Cluster Organization became a beacon of inspiration for neighbouring communities. Khonsli is no longer just a village free of water scarcity—it now symbolizes an empowered and aware community. Thanks to the Jal Jeevan Mission, the village has embraced unity, awareness, and self-confidence. Women are not only managing water resources effectively but are also more conscious of their rights.

The story of Khonsli demonstrates how collective efforts and empowerment can tackle significant challenges like water scarcity. This village now serves as a shining example, showcasing that water management is not merely a technical challenge but a catalyst for social transformation.

Formation of 'Khushi Cluster Organization' in the village, in which women are united and trying to solve the water crisis.

Source PHED, Chhattisgarh

9. जल संकट से सशक्तिकरण की ओर

छत्तीसगढ़ के रायपुर जिले के खरसिया विकासखंड में बसा खोंसली गाँव एक समय पानी की भयंकर कमी से जूझ रहा था। गाँव में लगभग 250 परिवार रहते थे, और पानी की किल्लत ने जीवन को बेहद कठिन बना दिया था। ग्रामीणों, विशेषकर महिलाओं को, हर दिन कुएं से पानी लाने के लिए कई किलोमीटर चलना पड़ता था। यह ना केवल उनके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक था, बल्कि उनके बच्चों की पढ़ाई और गाँव के विकास को भी प्रभावित कर रहा था। लेकिन गाँव की महिलाएं हार मानने वाली नहीं थीं। जब जल जीवन मिशन की शुरुआत हुई, तो उन्होंने इसे एक अवसर के रूप में देखा। गाँव में "खुशी क्लस्टर संगठन" का गठन हुआ,

जिसमें महिलाएं एकजुट होकर जल संकट के समाधान के लिए काम करने लगीं। ममता, संगठन की अध्यक्ष, ने इस बदलाव की कहानी को जीवंत किया। उन्होंने अपनी साथी महिलाओं को एकत्रित किया और जल संरक्षण के महत्व के बारे में जागरूकता फैलाना शुरू किया। और "हर घर जल" योजना के बारे में जानकारी दी। उन्होंने लोगों को समझाया कि अगर वे इस योजना में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं, संगठन ने पहले चरण में गाँव के लोगों को जल जीवन मिशन के लक्ष्यों तो गाँव की पानी की समस्या हल हो सकती है। धीरे-धीरे, गाँव के लोग जागरूक होने लगे और उनके मन में जल प्रबंधन के प्रति रुचि जागृत होने लगी।

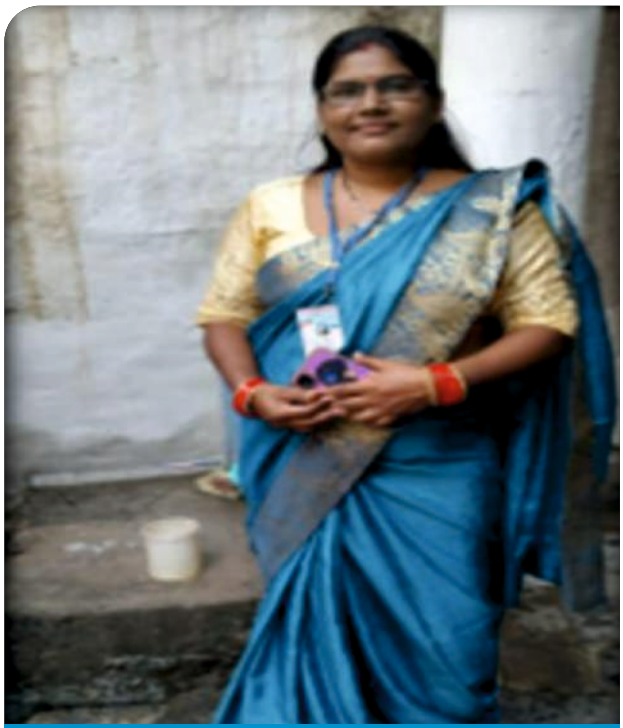

गांव की निवासी श्रीमत उषा शर्मा अपनी कहानी साझा कर रही हैं

स्रोत: पीएचईडी, छत्तीसगढ़

खुशी क्लस्टर संगठन ने अपने पहले कार्यक्रम के तहत, गाँव के सभी परिवारों के लिए जल संरक्षण कार्यशालाएँ आयोजित कीं। इनमें मिट्टी के टांके बनाने और वर्षा जल संचयन की तकनीकों के बारे में जानकारी दी गई। महिलाएं न केवल कार्यशालाओं में शामिल हुईं, बल्कि उन्होंने अपने घरों में भी इन तकनीकों को लागू करना शुरू किया। धीरे-धीरे, गाँव में जल संचयन की एक संस्कृति विकसित होने लगी।

इस परिवर्तन के बाद, गाँव में जल की उपलब्धता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। अब प्रत्येक घर में साफ पानी की पहुँच थी। इससे केवल जल संकट का समाधान नहीं हुआ, बल्कि महिलाओं का जीवन स्तर भी सुधारने लगा। पहले जिन महिलाओं को पानी लाने में लंबा समय बिताना पड़ता था, वे अब अपने समय का उपयोग अन्य विकासात्मक कार्यों, जैसे कि बच्चों की पढ़ाई और कृषि कार्य में करने लगीं। इस बदलाव का सबसे बड़ा लाभ यह था कि गाँव की महिलाएं अब आत्मनिर्भर और सशक्त बन गई थीं। ममता ने कहा, "आज हम सिर्फ अपने लिए नहीं, बल्कि अपने परिवारों और गाँव के विकास के लिए काम कर रही हैं।" उनके संगठन ने अन्य गाँवों के लिए एक प्रेरणा स्रोत बनकर उभरा। अब, खोंसली गाँव न केवल जल संकट से मुक्त हो चुका था, बल्कि यह एक सशक्त और जागरूक समुदाय का प्रतीक बन चुका था।

जल जीवन मिशन ने इस गाँव की तस्वीर को बदल दिया है। अब, गाँव में एकता, जागरूकता, और आत्मविश्वास का माहौल है। महिलाएं अब न केवल पानी के स्रोतों का प्रबंधन कर रही हैं, बल्कि वे अपने अधिकारों के प्रति भी सजग हैं। खोंसली गाँव की कहानी यह दर्शाती है कि सामुदायिक प्रयासों और सशक्तिकरण से जल संकट जैसी बड़ी चुनौतियों का सामना किया जा सकता है। यह गाँव अब दूसरों के लिए एक उदाहरण है कि कैसे जल प्रबंधन केवल एक तकनीकी समस्या नहीं, बल्कि एक सामाजिक परिवर्तन का माध्यम भी है।

गाँव में 'खुशी क्लस्टर संगठन' का गठन, जिसमें महिलाएं एकजुट होकर जल संकट के समाधान के लिए प्रयासरत हैं।

स्रोत: पीएचईडी, छत्तीसगढ़

10. From Water Supply to Empowerment: The Journey of Khonsli

Khonsli, a small village in Kharsia block of Raipur district, Chhattisgarh, was once gripped by a severe water crisis. Home to nearly 250 families, the lack of clean water made everyday life an arduous struggle. Women like Mamta and her companions bore the brunt, walking several kilometers daily to fetch water. This not only caused immense physical strain but also robbed them of precious time that could have been spent on productive pursuits.

The burden of water collection weighed heavily on Khonsli's women. Carrying heavy containers for hours left them with little energy or opportunity to focus on anything else. Children, especially girls, often dropped out of school to assist their families. Health issues arising from consuming unsafe water and the loss of developmental opportunities painted a grim picture of life in the village. As Mamta recalls, “For us, water was a dream that slipped through our fingers every day.”

In 2021, the Jal Jeevan Mission brought a ray of hope to Khonsli with its promise of “Har Ghar Jal” (water in every home). Recognizing this as a chance for transformation, the village women formed the "Khushi Cluster Organization" under Mamta’s leadership. The group began spreading awareness about water conservation and organized community discussions to ensure everyone’s voice was heard. With Mamta at the helm, the women embraced the mission and took decisive steps toward change.

Villagers often echoed, “Where there is water, there is a future,” as they united to adopt these changes. By 2023, every household in Khonsli had access to clean water. This new resource not only resolved the water crisis but also transformed lives. The hours women once spent fetching water were now devoted to agriculture, supporting their children’s education, and participating in developmental activities.

Mamta proudly shares, “We are no longer just working for water; we are working for our families and our village.” She adds, “Earlier, we fought for water; now, we stand for our rights. Water is the essence of life, and unity is its foundation.”

Khonsli’s transformation has become a source of inspiration for neighboring villages. The Khushi Cluster Organization has set an example of effective community-led water management. Moreover, the women of Khonsli have emerged as empowered and confident individuals, aware of their rights and responsibilities.

The story of Khonsli underscores the power of collective efforts and empowerment in overcoming even the most daunting challenges. Today, the village stands as a symbol of unity, awareness, and self-confidence. Khonsli’s journey proves that water management is not just a technical issue but a means for social transformation—a model that can inspire communities everywhere.

The senior woman was relieved from the daily struggle of fetching water.
Source: PHED, Chhattisgarh

“Fetching water meant a whole day's work,” recalls Mamta, a key changemaker in the village.

The lack of water not only affected their health but also hindered the children's education and the development of the village.

10. जल आपूर्ति से सशक्तिकरण तक: खोंसली की यात्रा

छत्तीसगढ़ के रायपुर जिले के खरसिया विकासखंड स्थित खोंसली गाँव एक समय पानी की भयंकर कमी से जूझ रहा था। इस गाँव में लगभग 250 परिवार रहते थे, और पानी की कमी ने उनके जीवन को बेहद कठिन बना दिया था। महिलाओं को, जैसे ममता और उनकी साथियों को, हर दिन पानी लाने के लिए कई किलोमीटर चलना पड़ता था, जिससे न केवल शारीरिक तनाव बढ़ता था, बल्कि उनकी कीमती समय की भी बर्बादी होती थी।

पानी लाने का भार खोंसली की महिलाओं पर भारी था। भारी बर्तन लेकर घंटों चलने से उनके पास और कुछ करने का समय नहीं बचता था। बच्चे, खासकर लड़कियाँ, अक्सर स्कूल छोड़कर पानी लाने में मदद करती थीं। गंदे पानी से होने वाली स्वास्थ्य समस्याएँ और विकास की गुम हो गईं संभावनाएँ, एक निरंतर संघर्ष की स्थिति उत्पन्न कर रही थीं जैसा कि ममता बताती हैं, "हमारे लिए पानी एक सपना था, जो हर दिन हाथ से फिसल जाता था।"

वरिष्ठ महिला को पानी लाने की दैनिक संघर्ष से मुक्ति मिली।
स्रोत: पीएचईडी, छत्तीसगढ

"पानी लाना मतलब दिन भर का काम था," ममता, जो गाँव की एक प्रमुख परिवर्तनकारी है, याद करती हैं। पानी की कमी ने केवल उनके स्वास्थ्य को प्रभावित किया, बल्कि बच्चों की पढ़ाई और गाँव के विकास को भी रोक दिया था।

ममता कहती हैं, "अब हम सिर्फ पानी के लिए नहीं, अपने परिवार और गाँव के लिए काम कर रहे हैं।" ममता गर्व से कहती हैं, "पहले हम सिर्फ जल के लिए लड़ते थे, अब हम अपने अधिकारों के लिए खड़े हैं। जल जीवन का सार है, और एकता इसका आधार है।" ममता निष्कर्ष में कहती हैं।

2021 में, जल जीवन मिशन ने खोंसली में "हर घर जल" (हर घर में पानी) का वादा करके एक नई आशा की किरण दिखाई। इस बदलाव को समझते हुए, गाँव की महिलाओं ने "खुशी क्लस्टर संगठन" का गठन किया, जिसकी अध्यक्ष ममता थीं इस समूह ने जल संरक्षण के महत्व को लेकर जागरूकता फैलाना शुरू किया और स्थानीय बलियों में चर्चाएँ आयोजित कीं, ताकि हर किसी की आवाज़ सुनी जा सके। ममता के नेतृत्व में गाँव की महिलाओं ने इस मिशन को अपनाया और बदलाव के लिए कदम बढ़ाए।

“जल का महत्व हमने समझा, और सब को समझाया," ममता याद करती हैं। खुशी क्लस्टर संगठन ने जल संरक्षण के कार्यशालाओं का आयोजन किया, जिसमें मिट्टी के टांके बनाने और वर्षा जल संचयन की तकनीकों की जानकारी दी गई। ये कार्यशालाएँ सिर्फ शैक्षिक नहीं थीं, बल्कि एक आंदोलन बन गई। महिलाओं ने इन तकनीकों को अपने घरों में लागू किया और जल्द ही,खोंसली में जल संरक्षण की संस्कृति विकसित होने लगी।

गाँव वाले अक्सर कहते थे, "जल है तो कल है," क्योंकि वे एक साथ इन बदलावों को अपनाने के लिए एकजुट हो गए थे। 2023 तक, खोंसली के हर घर में साफ पानी पहुँच चुका था। इस नए स्रोत ने न केवल पानी के संकट का समाधान किया, बल्कि जीवन स्तर को भी बदल दिया। पहले जिन महिलाओं को पानी लाने में घंटों लगते थे, वे अब खेती, बच्चों की पढ़ाई और अन्य विकासात्मक कार्यों में अपना समय लगा रही थीं। खोंसली का परिवर्तन अब आसपास के गाँवों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन चुका था। खुशी क्लस्टर संगठन ने सामुदायिक जल प्रबंधन का एक मॉडल प्रस्तुत किया। इसके अलावा, खोंसली की महिलाएँ अब अपने अधिकारों के प्रति सजग और आत्मविश्वासी बन गईं।

खोंसली की कहानी यह दर्शाती है कि सामूहिक प्रयास और सशक्तिकरण के माध्यम से बड़ी से बड़ी चुनौतियों का सामना किया जा सकता है। आज, यह गाँव एकता, जागरूकता, और आत्मविश्वास का प्रतीक बन चुका है। खोंसली की यह कहानी यह सिद्ध करती है कि जल प्रबंधन केवल एक तकनीकी समस्या नहीं है, बल्कि यह एक सामाजिक परिवर्तन का माध्यम भी है—एक उदाहरण जो सभी समुदायों के लिए प्रेरणा स्रोत बन सकता है।

11. The Story of Badaanji where, once every drop counted

Nestled amidst the greenery of Bastar's Kondagaon block, the village of Baaji-02 looked serene and beautiful from the outside. However, within, it was grappling with a crisis that overshadowed its calm exterior. With a population of about 1,600, the village's water scarcity was so severe that it became the biggest worry for every household. Crops were wilting, wells were drying up, and lives were withering in the absence of water.

Laxmi Dadi, the village's eldest resident, could never forget those difficult times. In the twilight of her life, she often sat in her courtyard, narrating stories of the past to the children."In our days," she would say, "fetching water wasn't easy. During summer, the rivers and wells would dry up. We women carried pots on our heads and walked miles. Our bodies would ache with exhaustion, but bringing water home was a necessity." Her voice carried the weight of those struggles. She recalled how they had to rely on mud and scrapers to clean clothes and manage the rest of their needs with the little water they had. Hearing her stories, the children's eyes would fill with questions and concern. But the biggest change in Dadi's life came when the village welcomed the Jal Jeevan Mission.

"In our time," she began, "the river and well water were our only lifelines. During summers, even these sources would dry up. The women of the village and I would walk miles with pots balanced on our heads. We would bring water despite aching backs and blistered feet. After returning home, that same water had to suffice for everything—cooking, cleaning, washing clothes."

– Lakshmi

The villagers dug pits at public places to harvest rainwater, aiming to address the water crisis.
Source: PHED, Chhattisgarh

The village Sarpanch and Deputy Sarpanch explained to the people that under this government initiative, every household would have access to tap water. They also shared plans to conserve rainwater by building small recharge pits in every home. These pits, filled with stones and gravel, would allow rainwater to percolate into the ground and help replenish groundwater levels.

The villagers embraced the initiative wholeheartedly. Women and youth worked shoulder to shoulder. Recharge pits were also dug in public spaces, and slowly, the village's landscape began to transform. The water scarcity that once defined life in Baaji-02 became a thing of the past.

Today, every household in the village has access to water. Laxmi Dadi, who once endured the lifelong burden of fetching water, now sits peacefully in her courtyard. "We no longer have to walk miles for water," she says with relief. "Tap water now reaches our homes. At this age, when my bones had given up, this change has made my life so much easier. The greatest joy is seeing our children understand the value of water. They know the worth of every drop."

The village children, who were once startled by Dadi's tales of struggle, now sing songs of their new life:

"Water gives us life; treasure it every moment. Without it, Earth would lose its greenery. Save lives, birds, trees, and all of nature. Understand the value of every drop."

11. बदांजी की बूंद-बूंद की कहानी

बस्तर के कोण्डागांव विकासखंड में हरियाली के बीच बसा गांव बाजी-02, बाहर से जितना शांत और सुंदर दिखता था, अंदर से उतना ही परेशानियों से जूझ रहा था। करीब 1600 की आबादी वाले इस गांव में पानी की समस्या इतनी गंभीर थी कि यह हर घर की सबसे बड़ी चिंता बन गई थी। खेती सूख रही थी, कुएं सूख रहे थे, और लोगों की ज़िंदगियां पानी के अभाव में बंजर होती जा रही थीं।

गांव की सबसे बुजुर्ग महिला, लक्ष्मी दादी, इन दिनों को कभी भूल नहीं पाईं। उम्र के आखिरी पड़ाव पर पहुंच चुकी दादी ने अपने जीवन का बड़ा हिस्सा सिर पर मटकों का बोझ ढोते हुए बिताया था। वह अक्सर अपने आंगन में बैठकर बच्चों को बीते दिनों की कहानियां सुनाया करती थीं।

"हमारे समय में," वह कहती थीं, "पानी लाना आसान नहीं था। गर्मियों में नदी और कुएं तक पानी खत्म हो जाता था। हम औरतें, सिर पर मटके रखकर मीलों चलती थीं। थकान से बदन टूट जाता था, लेकिन पानी तो लाना ही था।" उनकी आवाज़ में बीते दिनों की तकलीफें साफ झलकती थीं। उन्होंने बताया कि कपड़े धोने के लिए मिट्टी और खुरपी का सहारा लेना पड़ता था, और घर की बाकी ज़रूरतें भी उसी थोड़े से पानी से पूरी करनी पड़ती थीं। उनके संघर्ष की कहानियां सुनकर बच्चों की आंखों में सवाल और चिंता के बादल उमड़ने लगते थे। लेकिन दादी के जीवन का सबसे बड़ा बदलाव तब आया, जब गांव ने जल जीवन मिशन का स्वागत किया।

"हमारे समय में," उन्होंने शुरू किया, "नदी और कुएं का पानी ही हमारा सहारा था। गर्मियों में, ये स्रोत भी सूख जाते थे। मैं और गांव की बाकी औरतें, सिर पर मटके रखकर मीलों चलतीं। कमर दर्द से कराहती, और पांवों में छाले लिए हम पानी लाती थीं। घर लौटकर उसी पानी से सब काम निपटाने होते—खाना बनाना, सफाई करना, कपड़े धोना।" -लक्ष्मी

गांव के लोगों ने वर्षा जल संग्रहण के लिए सार्वजनिक स्थानों पर गड्ढे खोदे, ताकि जल संकट का समाधान किया जा सके।
स्रोतः पीएचईडी, छत्तीसगढ़

सरपंच और उप सरपंच ने गांव वालों को समझाया था कि सरकार की इस योजना के तहत हर घर में नल का जल पहुंचाने की कोशिश की जाएगी। साथ ही, बारिश का पानी बचाने के लिए हर घर में छोटे जल संग्रहण गड्ढे बनाए जाएंगे। गड्ढों में कंकड़ और पत्थर भरकर ऐसा बनाया गया कि बारिश का पानी धीरे-धीरे ज़मीन में समा सके और भूजल का स्तर सुधर सके।

गांव वालों ने इस पहल को अपनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। महिलाओं और युवाओं ने कंधे से कंधा मिलाकर काम किया। सार्वजनिक स्थलों पर भी ऐसे गड्ढे खोदे गए, और धीरे-धीरे गांव की तस्वीर बदलने लगी। पानी की कमी जो कभी बाजी-02 के जीवन का हिस्सा थी, अब बीते समय की बात बन गई।

आज, गांव में हर घर तक पानी पहुंच चुका है। लक्ष्मी दादी, जिनके लिए पानी लाना कभी जीवन का सबसे बड़ा संघर्ष था, अब चैन से अपने आंगन में बैठती हैं। उनका कहना था, "अब हमें मीलों चलकर पानी नहीं लाना पड़ता। हमारे घरों में नल का पानी आता है। इस उम्र में, जहां मेरी हड्डियां जवाब दे रही थीं, इस बदलाव ने मेरी ज़िंदगी आसान बना दी। सबसे बड़ी खुशी यह है कि हमारे बच्चे अब पानी का महत्व समझते हैं। वे हर बूंद की कीमत जानते हैं।"

गांव के बच्चे, जो कभी दादी की कहानियां सुनकर चौंक जाते थे, अब अपनी नई ज़िंदगी के गीत गाते हैं: "जल देता है जीवन, इसे संजोएं हर क्षण; बिना इसके पृथ्वी न रहेगी हरी-भरी, जीव, पक्षी, पेड़-पौधों के साथ सभी को बचाएं, एक-एक बूंद की कीमत जानें!"

12. Badlawand: Every Home with a Tap, Every Home in Peace

Badlawand, a small village nestled in the lush embrace of Kondagaon in Bastar district, once struggled with a harsh reality—life without easy access to water. This picturesque village was far from serene; it was a place where every day began and ended with the relentless pursuit of water. For the residents—130 families across six hamlets—getting enough water was an overwhelming challenge. Women, children, and elders all carried the burden, often with pots on their heads, traveling kilometers to reach rivers and streams. The trek was fraught with injury risks—thorny paths and rocky terrain made every step perilous.

The arrival of the Jal Jeevan Mission brought a doorway to tranquility. Bringing piped water to every household seemed like a dream come true for this village. The plan aimed to provide every person with 55 liters of clean drinking water daily. This mission extended beyond individual homes; schools and anganwadis (government-run childcare centers) now had reliable access to clean water as well. The community, led by Sarpanch Jaivaji Gohil and Panch Hiramani Bisaiya, worked together to make this dream a reality.

To maintain water quality, Jal Rakshaks (Water Guardians) were appointed. These individuals received training on field testing kits to regularly check water quality. "Now, we can check the purity of water right here in the village," says Sarpanch Jaivaji Gohil.

A meeting of VWSC members for the successful implementation of the Jal Jeevan Mission.
Source: PHED, Chhattisgarh

The words of Sarpanch Mrs. Jaivaji Gohil vividly reflect the village's past struggles. "Earlier, the only source of water was a handpump. During summers, it would dry up, and the water we got was iron-laden and harmful to health. Illness and hardships had become a part of our lives. Most of the women's time was spent fetching water and meeting household needs. Children's education, the elderly's comfort—everything was left behind."

"Waterborne diseases, which used to be a constant menace, have almost disappeared. Children's health has improved, and parents face less financial burden."

The most significant change has been in the lives of the village women. No longer do they spend their days in relentless water-fetching routines. They now have time for their families and themselves. "Before, when a handpump broke down, we had to struggle for days to get water," says Jaivaji Gohil. "But now, water flows through taps in every home. This plan has made our lives simpler and more comfortable."

Badlawand is no longer just a village with pure water; it has become an inspiration. People here now invest their time and energy in farming, children's education, and other social activities. This transformation signifies more than just access to clean water; it represents the prosperity and well-being of the entire community.

As the Sarpanch puts it, "The Jal Jeevan Mission from the Indian government has been a boon for us. It's not just about water; it's about respect and peace. Now, our village is truly every home with a tap village."

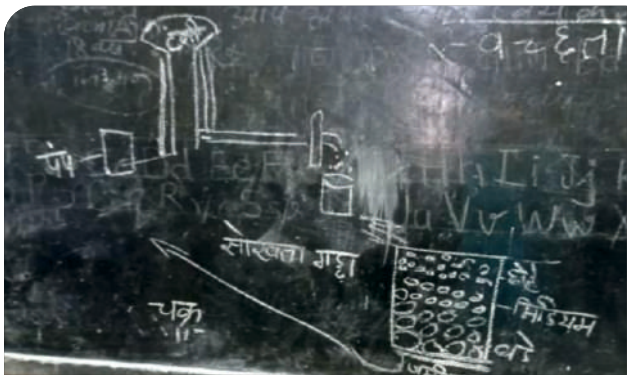

Inspired by the Jal Jeevan Mission, children pledged to save water. Villagers dug pits at public places for rainwater harvesting, while children created artwork on water conservation under the Jal Jeevan Mission.
Source: PHED, Chhattisgarh

12. हर घर नल, हर घर सुकून

हर घर नल, हर घर सुकून बदलावों, बस्तर जिले के कोण्डागांव विकासखंड का एक छोटा सा गांव, जो हरियाली और प्रकृति की गोद में बसा है। लेकिन यह सुंदरता उस समय फीकी लगती थी, जब इस गांव के लोग पानी की तलाश में दिन-रात संघर्ष करते थे। गांव की महिलाएं, बच्चे, और बुजुर्ग — सभी के दिन की शुरुआत पानी के इंतजाम से होती थी और रात तक यही जद्दोजहद जारी रहती थी। गांव के लगभग 130 परिवार और छह बस्तियां — हर किसी के लिए पानी जुटाना एक बड़ी चुनौती थी। सरकारी स्कूल और आंगनवाड़ी तक पानी के लिए संघर्ष करते थे। महिलाएं सिर पर मटके उठाए, कई किलोमीटर दूर झरी और झरनों तक जाती थीं। इस सफर में अक्सर उनके पैर कांटों और पत्थरों से घायल हो जाते। जल जीवन मिशन ने खोला सुकून का दरवाजाजब जल जीवन मिशन के तहत बदलावों को हर घर तक नल से पानी पहुंचाने का मौका मिला, तो यह गांव के लिए एक सपने के सच होने जैसा था।

जल जीवन मिशन के सफल क्रियान्वयन के लिए VWSC सदस्यों की बैठक।

स्रोतः पीएचईडी, छत्तीसगढ़

"सरपंच श्रीमती जैवाजी गोहिल के बात मा गाँव के पहिली के संघर्ष साफ झलकथे। 'पहिली पानी के एके साधन हैंडपंप रहिस। गरमी के दिन मा ये सूख जाथे, अउ जे पानी मिलय, वो लोहे वाला रहिस अउ सेहत बर खतरनाक रहिस। बीमारी अउ तकलीफ हमर जिनगी के हिस्सा बन गे रहिस। माई-बहिनी मन के जियादा समय पानी लाने अउ घर के जरूरत पूरा करने मा बीत जाथे। बच्चा मन के पढ़ाई, बूढ़ा मन के आराम—सब कुछ पिछू छूट जाथे।'"

("सरपंच श्रीमती जैवाजी गोहिल की बातों में गांव का पुराना संघर्ष साफ झलकता है। 'पहले पानी का एकमात्र साधन हैंडपंप थे। गर्मियों में ये सूख जाते, और जो पानी मिलता, वह लौह युक्त और स्वास्थ्य के लिए खतरनाक होता। बीमारी और परेशानियां हमारी जिंदगी का हिस्सा बन चुकी थीं। महिलाओं का ज्यादातर समय पानी लाने और घर की ज़रूरतें पूरी करने में ही बीत जाता था। बच्चों की पढ़ाई, बुजुर्गों का आराम—सब कुछ पीछे छूट जाता था।")

योजना के तहत हर व्यक्ति को प्रतिदिन 55 लीटर शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराने का लक्ष्य रखा गया। सरकारी स्कूल और तीन आंगनवाड़ी में पढ़ने वाले बच्चों को भी अब स्वच्छ पानी मिल रहा है।

सरपंच जैवाजी गोहिल और पंच हिरामणी बिसैया ने इस पहल को सफल बनाने के लिए गांव वालों के साथ मिलकर काम किया। पानी की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए जल रक्षकों का गठन किया गया। इन्हें फील्ड टेस्टिंग किट का प्रशिक्षण दिया गया, ताकि वे नियमित रूप से पानी की जांच कर सकें। सरपंच बताती हैं, "अब हमें पानी की शुद्धता गांव में ही पता चल जाती है। जलजनित बीमारियां, जो कभी यहां का अभिशाप थीं, अब लगभग खत्म हो गई हैं। बच्चों का स्वास्थ्य बेहतर हुआ है, और उनके माता-पिता पर आर्थिक बोझ भी कम हुआ है।"

सबसे बड़ा बदलाव गांव की महिलाओं के जीवन में आया। कभी जिनका दिन पानी जुटाने की भागदौड़ में खत्म हो जाता था, अब उनके पास समय है—अपने परिवार के लिए, अपने लिए। जैवाजी गोहिल कहती हैं,"हैंडपंप के खराब होने पर हमें कई दिनों तक पानी के लिए संघर्ष करना पड़ता था। लेकिन अब, हर घर में नल से पानी मिल रहा है। हमारा समय और श्रम दोनों बच रहा है।" सरपंच के शब्दों में," जल जीवन मिशन हमारे लिए वरदान साबित हुआ है। यह योजना केवल पानी नहीं, बल्कि सम्मान और सुकून लेकर आई है। अब हमारा गांव सच्चे मायने में हर घर जल वाला गांव बन गया है।"

बच्चों ने जल जीवन मिशन से प्रेरणा लेकर पानी बचाने का संकल्प लिया। गांववासियों ने वर्षा जल संग्रहण के लिए सार्वजनिक स्थानों पर गड्ढे खोदे, और बच्चों ने जल जीवन मिशन के तहत जल संरक्षण के चित्र बनाए।

स्रोतः पीएचईडी, छत्तीसगढ़

13. Ramchandra Sahu's Journey: A Leader for Clean Water

In Jamunahi village, there was one person who made a big difference: Ramchandra Sahu. Known for his hard work and dedication, Ramchandra played a key role in solving the village's water problems.

Before the Jal Jeevan Mission, the villagers, including Ramchandra's family, had to rely on hand pumps for water. But during the rainy season, the water would get dirty, and in the summer, the hand pumps would run dry because the groundwater level fell. Sometimes, villagers had to walk long distances to fetch water from ponds, but the water was dirty, and it made people sick.

Ramchandra was determined to change this. He didn't want his village to suffer from water problems anymore. He reached out to the Jal Jeevan Mission team and made sure they understood how serious the situation was. His efforts paid off when the mission began work on providing tap water to every home in Jamunahi.

Ramchandra stayed involved throughout the process. He made sure the work was done properly and stayed in touch with the mission team to solve any problems. His leadership helped make sure every home got tap water, and the village got the clean water it desperately needed.

Once the taps were installed, Ramchandra didn't stop. He made sure the water tank was cleaned regularly so that the water stayed safe to drink. Thanks to his hard work,

Solar based Overhead tank.
Source: PHED Chhattisgarh

Jamunahi now has clean drinking water in every home. Villagers no longer have to walk for miles to get water, and they no longer get sick from drinking dirty water. This has saved them time, which they can now use for farming and other work, improving their lives and incomes.

For Ramchandra, this change means more than just water. It's about a better future for his village. He feels proud that, because of his efforts, Jamunahi has a brighter, healthier future. His journey shows the power of one person's determination to make a difference for their community. Today, every home in Jamunahi has a tap, and Ramchandra's hard work has helped his village thrive.

Ramchandra Sahu, sharing his story.
Source: PHED, Chhattisgarh

"Dada ke mehnat ke badolat, ab Jamunahi gaon ke har ghar mein saaf peene ke paani pahunchthe. Gaon wale man ab paani khatir meelo door nahi jathe au ganda paani pee ke bimaar ghlo nahi hothe. Ye sangee man ke bahute samay bachavat he, jenkar ab kheti-baadi au doosar kaam bar lagavat he, au apan zindagi au kamayi sudharathen."

("Thanks to Dada's efforts, clean drinking water now reaches every home in Jamunahi village. Villagers no longer have to travel miles for water or fall sick from drinking contaminated water. This saves them a lot of time, which they now use for farming and other work, improving their lives and incomes.")

13. रामचंद्र साहू की यात्रा: एक योद्धा स्वच्छ पानी के लिए

जमुन्हाई गांव में एक व्यक्ति ने बड़ा बदलाव लाया: रामचंद्र साहू। अपनी मेहनत और समर्पण के लिए मशहूर रामचंद्र ने गांव की पानी की समस्याओं को हल करने में अहम भूमिका निभाई।

जलगांव मिशन से पहले, गांव के लोग, जिनमें रामचंद्र का परिवार भी शामिल था, पानी के लिए हैंड पंप पर निर्भर थे। लेकिन बरसात के मौसम में पानी गंदा हो जाता था, और गर्मियों में हैंड पंप सूख जाते थे क्योंकि भूजल स्तर गिर जाता था। कई बार, गांववालों को तालाबों से पानी लाने के लिए लंबी दूरी तय करनी पड़ती थी, लेकिन वह पानी गंदा होता था और इससे लोग बीमार पड़ जाते थे।

रामचंद्र ने इस स्थिति को बदलने की ठान ली। वे नहीं चाहते थे कि उनका गांव पानी की समस्याओं से जूझता रहे। उन्होंने जल जीवन मिशन की टीम से संपर्क किया और उन्हें स्थिति की गंभीरता को समझाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। उनके प्रयास रंग लाए, और मिशन ने जमुन्हाई में हर घर को नल से पानी पहुंचाने का काम शुरू किया।

रामचंद्र पूरे काम के दौरान सक्रिय रहे। उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि काम सही तरीके से हो और मिशन की टीम के साथ जुड़े रहे ताकि किसी भी समस्या का समाधान किया जा सके। उनकी नेतृत्व क्षमता के कारण हर घर में नल से पानी पहुंच सका, और गांव को वह स्वच्छ पानी मिला जिसकी उसे सख्त जरूरत थी।

सौर ऊर्जा आधारित ओवरहेड टैंक।
स्रोतः पीएचईडी छत्तीसगढ़

नल लगाने के बाद भी रामचंद्र ने अपना काम बंद नहीं किया। उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि पानी की टंकी नियमित रूप से साफ हो ताकि पानी पीने के लिए सुरक्षित रहे। उनकी कड़ी मेहनत के कारण, अब जमुन्हाई के हर घर में स्वच्छ पेयजल है। गांववालों को अब पानी लाने के लिए मीलों चलना नहीं पड़ता, और वे गंदा पानी पीने से बीमार नहीं पड़ते। इससे उनका समय बचता है, जिसे वे अब खेती और अन्य कार्यों में उपयोग कर सकते हैं, जिससे उनकी जिंदगी और आय में सुधार हुआ है।

रामचंद्र के लिए यह बदलाव सिर्फ पानी से जुड़ा नहीं है। यह उनके गांव के बेहतर भविष्य का प्रतीक है। उन्हें गर्व है कि उनकी मेहनत की बदौलत जमुन्हाई का भविष्य उज्जवल और स्वस्थ है। उनकी यात्रा यह दिखाती है कि एक व्यक्ति के दृढ़ संकल्प से समुदाय के लिए कितना बड़ा बदलाव आ सकता है। आज, जमुन्हाई के हर घर में नल है, और रामचंद्र की मेहनत ने उनके गांव को प्रगति की राह पर अग्रसर कर दिया है।

अपनी कहानी साझा करते हुए रामचन्द्र साहू।
स्रोतः पीएचईडी, छत्तीसगढ़

"दादा के मेहनत के बदौलत, अब जमुनाही गांव के हर घर में साफ पीने का पानी पहुँचता है। गांववाले अब पानी के लिए मीलों दूर नहीं जाते और गंदा पानी पीकर बीमार नहीं होते। इससे उनका बहुत सा समय बचता है, जिसे वे अब खेती-बाड़ी और दूसरे कामों में लगाते हैं, और अपनी ज़िन्दगी और कमाई सुधारते हैं।"

14. Transformation Through Innovation: From Struggling for Water to Living a Hopeful Life

Singhola, a small village in Chhattisgarh's Dhamtari district, was known more for its struggles than its successes. Surrounded by rivers and with no proper roads, the village remained cut off from the world, especially during the monsoon. Water scarcity was a daily battle for its 130 families. For Mansabai, a 45-year-old mother, life revolved around walking long distances to fetch water from streams. "Jal bin jeevan adhura hai (Life is incomplete without water)," she would say, summing up the village's hardship.

Fetching water consumed hours of the villagers' days. During summers, the streams dried up, forcing them to dig into the riverbed for muddy water. Drinking it often made them sick, and waterborne diseases were common. Children, especially girls, skipped school to help their families collect water. Women like Mansabai had no time to focus on earning money or improving their lives. "Pehle paani lana tha, phir zindagi jeeni thi" (First we fetched water, then we lived), she recalled. The lack of clean water affected health, education, and livelihoods, trapping the village in a cycle of poverty. Jal Jeevan Mission (JJM) transformed the trajectory of the lives of the people. For Singhola, this seemed like a far-off dream due to its isolation and lack of electricity. But the Public Health Engineering (PHE) Department had a solution—using solar-powered pumps to bring water to every household.

At first, villagers were skeptical. "Suraj se paani? Yeh kaise hoga?" (Water from the sun? How is that possible?), they asked. But soon, they began to see hope as the work started. The project became a community effort. Villagers like Mansabai joined meetings to share their needs, while the youth helped carry materials through the rough terrain. Solar panels were set up, borewells dug, and overhead tanks built. A network of pipes connected every household. "Paani ke liye ab haath milaye hum sabne" (We joined hands for water), said Ramkumar, a young farmer.

The day the taps were installed, Singhola changed forever. For the first time, clean water flowed directly into homes. Mansabai turned on her tap and watched the water gush out. "Ab paani yahin hai, aur zindagi yahan sudhar gayi hai" (Water is here now, and life has improved), she said with joy.

Health improved as waterborne diseases declined. Women had time for work and self-help groups, and children could attend school regularly. Many families started kitchen gardens, providing fresh vegetables and extra income. Singhola's success inspired nearby villages to adopt similar solutions. Community leaders visited to see how solar-powered pumps had brought clean water to such a remote place. The environment benefited too, with renewable energy making the system sustainable.

Today, Singhola is a different village. Clean water has brought health, happiness, and hope. For Mansabai, life is no longer a struggle for survival but a chance to dream big. "Aaj hum samajhte hain ki paani ke bina jeevan nahi, aur paani ke saath koi sapna door nahi" said Mansibai (Today, we understand that life is impossible without water, and with water, no dream is out of reach), she says, her words reflecting the transformation of her village.

Beneficiary: Mansabai, sharing here story.
Source: PHED, Chhattisgarh

The summers were the hardest," Maasabai recalls, her voice thick with fatigue. "Drinking this water again and again was a hassle."

Explaining that waterborne diseases were common in the village due to consumption of dirty water. "Children, especially girls, would skip school because it was more important to fetch water for the family," Mansabai's voice clearly reflected the pain of those days.

"We women did not have time to farm or improve our lives. The whole day was spent just arranging for water." Pausing for a while, she said, summing up her life in one line, "First we fetched water, then we lived."

14. नवाचार से बदलाव: पानी के लिए संघर्ष से आशाओं भरी जिंदगी तक

छत्तीसगढ़ के धमतरी जिले के छोटे से गांव सिंहोला को उसकी मुश्किलों के लिए जाना जाता था, न कि उसकी सफलता के लिए। चारों तरफ से नदियों से घिरा और बिना पक्की सड़कों वाला यह गांव, खासकर मानसून के दौरान, दुनिया से कटा रहता था। यहां की 130 परिवारों के लिए पानी की कमी रोज़मर्रा की लड़ाई थी। 45 वर्षीय मां मंसा बाई के लिए जीवन का अधिकांश हिस्सा दूर के झरनों से पानी लाने में ही बीत जाता था। वह अक्सर कहती थीं, "जल बिन जीवन अधूरा है," जो गांव की कठिनाइयों को बखूबी बयां करता था।

पानी लाने में ग्रामीणों का घंटों समय लग जाता था। गर्मियों में झरने सूख जाते थे, जिससे उन्हें नदी के तल से गंदा पानी खोदकर निकालना पड़ता था। इसे पीने से अक्सर लोग बीमार पड़ जाते थे, और जलजनित बीमारियां आम थीं। बच्चे, खासकर लड़कियां, स्कूल छोड़कर अपने परिवारों की पानी लाने में मदद करती थीं। महिलाओं के पास न तो कमाई करने का समय होता था और न ही अपने जीवन को बेहतर बनाने का। मंसा बाई याद करती हैं, "पहले पानी लाना था, फिर जिंदगी जीनी थी।" स्वच्छ पानी की कमी ने स्वास्थ्य, शिक्षा और आजीविका को प्रभावित किया, जिससे गांव गरीबी के चक्र में फंसा रहा। जल जीवन मिशन (JJM) ने ग्रामीणों की ज़िंदगी का रुख बदल दिया। सिंहोला के लिए, यह सपना पूरा करना मुश्किल लगता था, क्योंकि गांव की दुर्गमता और बिजली की कमी बड़ी बाधा थी। लेकिन लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी (P H E) विभाग ने एक समाधान निकाला—सौर ऊर्जा से चलने वाले पंपों की मदद से हर घर तक पानी पहुंचाना।

शुरुआत में, ग्रामीण संदेह में थे। वे पूछते थे, "सूरज से पानी? ये कैसे होगा?" लेकिन जैसे-जैसे काम शुरू हुआ, उम्मीदें बढ़ने लगीं। यह प्रोजेक्ट सामुदायिक प्रयास बन गया। मंसा बाई जैसी महिलाएं बैठकों में शामिल हुईं और अपनी ज़रूरतें साझा कीं, जबकि युवाओं ने कठिन रास्तों से सामग्री ढोने में मदद की। सोलर पैनल लगाए गए, बोरवेल खोदे गए, और ओवरहेड टैंक बनाए गए। पाइपलाइन का जाल हर घर से जोड़ा गया। युवा किसान रामकुमार ने कहा, "पानी के लिए अब हाथ मिलाए हम सबने।" जिस दिन नल लगाए गए, सिंहोला हमेशा के लिए बदल गया। पहली बार, स्वच्छ पानी सीधे घरों में पहुंचा। मंसा बाई ने अपने नल को चालू किया और पानी को बहते देखा। उन्होंने खुशी से कहा, "अब पानी यहीं है, और जिंदगी यहां सुधर गई है।"

स्वास्थ्य में सुधार हुआ क्योंकि जलजनित बीमारियां कम हो गईं। महिलाओं को काम और स्वयं सहायता समूहों के लिए समय मिलने लगा, और बच्चे नियमित रूप से स्कूल जाने लगे। कई परिवारों ने रसोई बगीचे शुरू किए, जिससे ताजी सब्जियां और अतिरिक्त आय मिली। सिंहोला की सफलता ने आसपास के गांवों को भी ऐसी ही पहल अपनाने के लिए प्रेरित किया। सामुदायिक नेता यह देखने आए कि सौर ऊर्जा से चलने वाले पंपों ने इस दूरस्थ गांव में कैसे स्वच्छ पानी पहुंचाया। पर्यावरण को भी लाभ हुआ क्योंकि नवीकरणीय ऊर्जा ने इस प्रणाली को टिकाऊ बना दिया। आज, सिंहोला एक बदला हुआ गांव है। स्वच्छ पानी ने स्वास्थ्य, खुशी, और आशा को जन्म दिया है। मंसा बाई के लिए, अब जीवन जीवित रहने का संघर्ष नहीं, बल्कि बड़े सपने देखने का अवसर है। मंसा बाई कहती हैं, "आज हम समझते हैं कि पानी के बिना जीवन नहीं, और पानी के साथ कोई सपना दूर नहीं।" उनकी बातें उनके गांव के बदलाव को बखूबी दर्शाती हैं।

लाभार्थी: मनसाबाई, यहां कहानी साझा कर रही हूं।

स्रोतः पीएचईडी, छत्तीसगढ़

गर्मियां सबसे कठिन होती थीं," मांसाबाई याद करती हैं, उनकी आवाज थकान से भरी। "धाराएं सूख जाती थीं, और हमें गहरे नदी के किनारे खुदाई करनी पड़ती थी ताकि गंदा पानी निकल सके। इस पानी को पीने से अक्सर बीमारियां हो जाती थीं।"

उन्हें समझाया कि गंदे पानी के सेवन के कारण गांव में जलजनित बीमारियां आम थीं। "बच्चे, खासकर लड़कियां, स्कूल जाना छोड़ देती थीं क्योंकि परिवार के लिए पानी लाना ज्यादा जरूरी था," मांसाबाई की आवाज उन दिनों की पीड़ा को साफ झलकाती थी।

"हमें महिलाएं खेती करने या अपनी जिंदगी सुधारने का समय नहीं था। पूरा दिन सिर्फ पानी की व्यवस्था में बीत जाता था।" थोड़ी देर रुककर, उन्होंने अपनी जिंदगी को एक लाइन में समेटते हुए कहा, "पहले हम पानी लाते, फिर जीते थे।"

15. From Struggle to Relief: Phulo's Journey of Clean Water in Parakot

Right in the heart of Bastar district, the village of Parakot in Chhattisgarh is a scenic place, surrounded by dense forests and lush greenery. But for its 163 residents, life wasn't as serene as the surroundings suggested. Water scarcity was a harsh reality that dominated their daily lives.

For Phulo, a young woman from Parakot, fetching water was an exhausting chore. Every morning, she would set out with a heavy pot on her head, walking miles to distant wells or boreholes. "Jal ke liye safar roz ki kathinai thi" (The journey for water was a daily struggle), she recalls.

The long treks left her and the other women physically drained and often irritable, overshadowing the simple joys of life. The village's water sources were far from reliable. During dry months, boreholes often ran dry, leaving families to ration what little they had. The burden of fetching water disproportionately fell on women, with pregnant women like Phulo facing even greater challenges. This relentless task not only caused physical fatigue but also deprived them of time for family, rest, or productive work.

"I always feared falling or spilling the water after walking so far," says Phulo. The weight of the water pot and the distance she had to cover became a symbol of the hardship faced by the entire community.

Beneficiary: Miss. Phulo getting water from FHTC.
Source: PHED, Chhattisgarh

"Paani khatir roj ke safar ek taklif rihis," Phulo kahithe, "Hamesa dar lagthe ki paani le bhara matka gir jahi ya rasta ma phas jabo." Phulo ke baat ma pira jhalakathe, jaise paani ke matka ke wajan au duriha safar o gaon ke taklif ke pehchan ban ge rihis. ("The daily journey for water was a constant struggle," says Phulo. "I always feared that the water pot would fall or I might trip on the way." Her words reflect the hardship, where the weight of the water pot and the long journey had become a symbol of the entire community's suffering.)

Jal Jeevan Mission brought hope to Parakot. With support from the local panchayat and community leaders like Sarpanch Dhaniram Kashyap, the mission introduced two solar-powered water supply systems to the village. These systems, designed to harness renewable energy, ensured an uninterrupted supply of clean water to every household through functional household tap connections (FHTCs).

But as the solar panels were installed, pipelines laid, and taps set up in each household, hope began to replace doubt. The day Phulo turned on the tap in her home for the first time, she was overcome with emotion. "Ab paani mere sir par nahi, mere ghar mein hai" (Now water is not on my head; it's in my home), she said, tears of relief streaming down her face. Her life transformed entirely. With water readily available, she no longer had to wake up early to make the long trek to the well. The time once spent fetching water is now used to care for her family and grow vegetables in her backyard. Her health has improved, and she feels less tired and more at peace.

The change has extended far beyond individual homes. The health of the villagers, especially children, has improved as they now drink clean water. Women, relieved of the daily burden of fetching water, have formed self-help groups and started small businesses. Pregnant women, once at risk due to the physical demands of fetching water, now enjoy better care and rest.

"Life feels lighter," says Phulo. "There's no longer the daily worry about where to find water." The Jal Jeevan Mission has reshaped life in Parakot, bringing clean water to every home and restoring dignity and joy to its people. For Phulo and others in the village, the taps symbolize more than water—they represent a future where hardship is replaced with opportunity.

Sarpanch: - Dhaniram Kashyap.
Source: PHED, Chhattisgarh

“Paani ka aana, zindagi ka sudhar lana hai” (The arrival of water is the improvement of life), says Phulo, her words echoing the hope that now flows through Parakot.

The introduction of the Jal Jeevan Mission in Parakot has dramatically transformed this scenario. With the installation of two (02) solar pump-based water supply systems, equipped with a capacity of 12 meters and 10 kilolitres, the distribution of water has become viable and efficient. As a result, households now enjoy functional household tap connections (FHTCs), ensuring a regular supply of clean water. Sarpanch, Dhaniram Kashyap attests to the positive impact, noting that the removal of the water-fetching burden has significantly improved the well-being of women, especially pregnant women who previously faced additional challenges.

Jal Jeevan Mission serves as a vital intervention that addresses the critical issue of water scarcity in rural India. The tangible improvements seen in Parakot, as evidenced by enhanced health and a better quality of life for its residents, emphasize the importance of such initiatives.

Solar pump-based water supply systems.
Source: PHED, Chhattisgarh

15. संघर्ष से राहत तक: पराकोट में फूलो की स्वच्छ पानी की यात्रा

छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले के हरे-भरे जंगलों और घने पेड़ों से घिरे गांव पराकोट की सुंदरता देखने में जितनी शांत लगती है, वहां के 163 निवासियों के लिए जीवन उतना ही कठिन था। पानी की किल्लत उनकी दिनचर्या का एक सख्त सच थी। फूलो, पराकोट की एक युवा महिला, के लिए पानी लाना एक थकावट भरा काम था। हर सुबह, वह अपने सिर पर भारी मटका लेकर दूर-दराज के कुओं या बोरवेल तक मीलों चलती थी। वह याद करती हैं, "जल के लिए सफर रोज की कठिनाई थी।" यह लंबी यात्राएं उन्हें और गांव की अन्य महिलाओं को शारीरिक रूप से कमजोर और अक्सर चिड़चिड़ा कर देती थीं, जिससे जीवन के छोटे-छोटे सुख भी छिन जाते थे। गांव के पानी के स्रोत भरोसेमंद नहीं थे। सूखे के मौसम में, बोरवेल सूख जाते थे, जिससे परिवारों को अपने पास मौजूद पानी को सहेज कर इस्तेमाल करना पड़ता था। पानी लाने का यह बोझ महिलाओं पर ज्यादा था, और फूलो जैसी गर्भवती महिलाओं के लिए यह काम और भी चुनौतीपूर्ण हो जाता था। इस लगातार चलने वाले काम ने न केवल शारीरिक थकावट पैदा की, बल्कि उन्हें परिवार, आराम और उत्पादक कार्यों के लिए समय से वंचित कर दिया। "मुझे हमेशा डर रहता था कि इतनी दूर चलने के बाद कहीं गिर न जाऊं या पानी न छलक जाए," फूलो कहती हैं। पानी के मटके का वजन और उसे लाने की दूरी पूरे समुदाय द्वारा झेली जाने वाली कठिनाइयों का प्रतीक बन गई थी। जल जीवन मिशन ने पराकोट में आशा की किरण लाई। स्थानीय पंचायत और सरपंच धनिराम कश्यप जैसे सामुदायिक नेताओं के समर्थन से, मिशन ने गांव में दो सौर ऊर्जा से चलने वाली जल आपूर्ति प्रणालियां शुरू कीं। इन प्रणालियों ने नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग करते हुए, हर घर को कार्यात्मक घरेलू नल कनेक्शन (FHTCs) के माध्यम से स्वच्छ पानी की अबाध आपूर्ति सुनिश्चित की। जब सोलर पैनल लगाए गए, पाइपलाइन बिछाई गई और हर घर में नल लगाए गए, तो संदेह की जगह उम्मीद ने ले ली। जिस दिन फूलो ने पहली बार अपने घर में नल चालू किया, वह भावुक हो गई। उन्होंने कहा, "अब पानी मेरे सिर पर नहीं, मेरे घर में है," और राहत के आंसू उनकी आंखों से बह निकले। उनका जीवन पूरी तरह बदल गया। अब, पानी आसानी से उपलब्ध होने के कारण, उन्हें सुबह जल्दी उठकर दूर कुएं तक जाने की जरूरत नहीं पड़ती। पानी लाने में जो समय लगता "जीवन अब हल्का लगता है," फूलो कहती हैं। "अब पानी कहां से मिलेगा, इसकी रोज की चिंता नहीं है।" जल जीवन मिशन ने पराकोट में जीवन को फिर से आकार दिया है, हर घर में स्वच्छ पानी लाकर और उसके लोगों को गरिमा और खुशी लौटाई है। फूलो और गांव के अन्य निवासियों के लिए, नल केवल पानी का प्रतीक नहीं हैं—वे एक ऐसे भविष्य का प्रतीक हैं, जहां कठिनाइयों की जगह अवसर हैं। "पानी का आना, जिंदगी का सुधार लाना है," फूलो कहती हैं, उनके शब्द पराकोट में बहने वाली उम्मीद को दर्शाते हैं। पराकोट में जल जीवन मिशन ने पानी की किल्लत की गंभीर समस्या का प्रभावी समाधान पेश किया है। दो सौर पंप आधारित जल आपूर्ति प्रणालियों की स्थापना के साथ, जिनकी क्षमता 12 मीटर और 10 किलोलीटर है, पानी का वितरण आसान और प्रभावी हो गया है। अब, घरों को नियमित रूप से स्वच्छ पानी की आपूर्ति मिल रही है। सरपंच धनिराम कश्यप इस सकारात्मक प्रभाव की पुष्टि करते हैं, यह बताते हुए कि पानी लाने के बोझ को हटाने से महिलाओं, विशेष रूप से गर्भवती महिलाओं की भलाई में काफी सुधार हुआ है।जल जीवन मिशन ग्रामीण भारत में पानी की कमी की समस्या को हल करने के लिए एक महत्वपूर्ण पहल के रूप में उभरा है। पराकोट में देखे गए स्वास्थ्य और जीवन की गुणवत्ता में सुधार इस तरह की पहलों के महत्व को रेखांकित करते हैं।

लाभार्थी: सुश्री फूलो को एफएचटीसी से पानी मिल रहा है।
स्रोत: पीएचईडी, छत्तीसगढ़

पानी के लिए रोज़ के सफर एक तकलीफ थी," फुलो कहती हैं, "हमेशा डर लगता था कि पानी से भरा मटका गिर जाएगा या रास्ते में फंस जाऊंगी।" उनकी बातों में उस संघर्ष की झलक होती है, जहां पानी के मटके का वजन और लंबी यात्रा गांव के पूरे समुदाय की तकलीफों का प्रतीक बन गई थी।

सौर पंप आधारित जल आपूर्ति प्रणाली।
स्रोत: पीएचईडी, छत्तीसगढ़

16. The Transformative Power of Community Leadership in Khala Village

Khala village situated in Surguja district of Chhattisgarh, captivates visitors with its natural beauty, characterized by abundant rivers and lakes. However, the visibility of this splendour is often overshadowed by water-related challenges that plague the community.

Located merely 15 kilometres from the district center, Khala is home to a diverse population of 1,892 individuals, comprised of 1,507 Scheduled Caste families and 385 families from the general category.

At the forefront of the village's water conservation efforts is Miss Ful Sundari, a resident of Korwa Para. As a proactive member of the Village Water and Sanitation Committee (VWSC) under the Jal Jeevan Mission, Ful Sundari recognized the urgent need to address the issue of water scarcity that her community faced.

Determined to effect positive change, she embarked on an innovative project focused on sustainable water management. Her vision for a future where every drop of water was cherished led her to introduce effective greywater management techniques. By establishing soak pits and kitchen gardens utilizing water from everyday household activities like dishwashing and laundry, Ful Sundari successfully transformed previously barren land into productive green spaces. These initiatives not only enhanced the aesthetic appeal of the village but also provided a steady supply of fresh vegetables, benefiting the community's nutritional needs.

Initially met with scepticism, Ful Sundari's unwavering dedication gradually gained the support of her fellow villagers. She organized workshops and awareness campaigns to illuminate the significance of water conservation, fostering a collective sense of responsibility regarding water management. Her efforts laid the groundwork for a cultural shift within Khala, where community members began to recognize their role in preserving this vital resource.

In addition to her greywater initiatives, Ful Sundari also harnessed the potential of rainwater harvesting systems. Collaborating with the VWSC and local authorities, she implemented these systems across strategic locations in the village. This intervention not only replenished groundwater levels but also provided a consistent water supply during periods of drought, addressing the immediate concerns of water scarcity effectively.

Over time, Ful Sundari's initiatives yielded significant results; the landscape of Surguja District flourished once again, thanks to her innovative approach to water conservation. Her leadership became a source of inspiration not only for Khala but also for surrounding villages, as many began to adopt similar sustainable practices.

Today, Ful Sundari stands as a powerful symbol of the impact one individual can have on a community. Her journey from a dedicated member of the VWSC to a pioneering leader in water conservation serves as an inspiring narrative of hope and perseverance. Through her relentless commitment and practical solutions, she has empowered her community to live harmoniously with nature, transforming both their environment and their outlook on water management. Ful Sundari's story affirms that determination knows no boundaries and that with passion and conviction, even the most profound challenges can be addressed effectively.

Miss Ful Sundari sharing a contributing member to VWSC.
Source: PHED, Chhattisgarh

"Paani khatir roj ke safar ek taklif rihis," Phulo kahithe, "Hamesa dar lagthe ki paani le bhara matka gir jahi ya rasta ma phas jabo." Phulo ke baat ma pira jhalakathe, jaise paani ke matka ke wajan au duriha safar o gaon ke taklif ke pehchan ban ge rihis.Miss Ful Sundari, a resident of Korwa Para, took the lead as an active member of the Village Water and Sanitation Committee (VWSC) under the Jal Jeevan Mission. She recognized the pressing need to tackle the problem of water scarcity in her community. "First, fetching water was essential; only then could we think of living," said Ful Sundari. "Summers were the hardest." Ful sunadri's voice echoed the hardships of those days: "Children, especially girls, stopped going to school because fetching water for the family was more important." But now, Ful Sundari said with pride, "We have time to pursue our dreams, and now even we can dream of flying."

16. खाला गांव में सामुदायिक नेतृत्व की परिवर्तनकारी शक्ति

छत्तीसगढ़ के सरगुजा जिले में स्थित खाला गांव अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है, जो यहां की नदियों और झीलों से परिपूर्ण है। हालांकि, इस सुंदरता के बावजूद, गांव के लोग पानी से संबंधित समस्याओं से जूझ रहे थे, जो उनके दैनिक जीवन को प्रभावित करती थी। जिला केंद्र से मात्र 15 किलोमीटर की दूरी पर बसे इस गांव में 1,892 निवासी हैं, जिनमें 1,507 अनुसूचित जाति परिवार और 385 सामान्य वर्ग के परिवार शामिल हैं।

गांव में पानी संरक्षण के प्रयासों की अगुवाई करती हैं मिस फूल सुंदरि, जो कोरवा पारा की निवासी हैं। जल जीवन मिशन के तहत गांव जल एवं स्वच्छता समिति (VWSC) की सक्रिय सदस्य के रूप में, फूल सुंदरि ने अपनी समुदाय की पानी की समस्याओं को गंभीरता से समझा और इसे हल करने की दिशा में कदम उठाए। सकारात्मक बदलाव लाने के अपने दृढ़ संकल्प के साथ, उन्होंने स्थायी जल प्रबंधन पर केंद्रित एक नवाचारी परियोजना शुरू की। पानी के हर बूंद को संजोने की उनकी दृष्टि ने उन्हें प्रभावी ग्रेवाटर प्रबंधन तकनीकों को अपनाने के लिए प्रेरित किया। बर्तन धोने और कपड़े धोने जैसी दैनिक गतिविधियों से उत्पन्न पानी का उपयोग करते हुए उन्होंने सोक पिट और किचन गार्डन बनाए। इन प्रयासों ने बंजर भूमि को हरित स्थानों में बदल दिया। इससे न केवल गांव की सुंदरता बढ़ी, बल्कि ताजी सब्जियों की नियमित आपूर्ति भी सुनिश्चित हुई, जिससे समुदाय की पोषण संबंधी आवश्यकताएं पूरी हुई।

शुरुआत में, फूल सुंदरि के प्रयासों को संदेह की नजर से देखा गया, लेकिन उनकी अडिग प्रतिबद्धता ने धीरे-धीरे ग्रामीणों का समर्थन प्राप्त कर लिया। उन्होंने कार्यशालाओं और जागरूकता अभियानों का आयोजन किया, जिससे पानी संरक्षण के महत्व पर प्रकाश डाला और समुदाय में जल प्रबंधन के प्रति सामूहिक जिम्मेदारी की भावना विकसित की। उनके प्रयासों ने खाला में एक सांस्कृतिक बदलाव की नींव रखी, जहां लोगों ने इस महत्वपूर्ण संसाधन को संरक्षित करने में अपनी भूमिका को पहचाना। ग्रेवाटर प्रबंधन के अलावा, फूल सुंदरि ने वर्षा जल संचयन प्रणालियों की क्षमता का भी उपयोग किया। VWSC और स्थानीय अधिकारियों के सहयोग से, उन्होंने गांव के विभिन्न स्थानों पर इन प्रणालियों को लागू किया। इस हस्तक्षेप ने न केवल भूजल स्तर को पुनर्भरण किया, बल्कि सूखे के समय में लगातार पानी की आपूर्ति भी सुनिश्चित की, जिससे जल संकट को प्रभावी ढंग से हल किया गया। समय के साथ, फूल सुंदरि के प्रयासों ने महत्वपूर्ण परिणाम दिए। सरगुजा जिले का परिदृश्य फिर से हरा-भरा हो गया, उनके नवाचारी जल संरक्षण दृष्टिकोण के कारण। उनका नेतृत्व खाला के साथ-साथ आसपास के गांवों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बन गया, जहां कई ने समान स्थायी प्रथाओं को अपनाना शुरू कर दिया। आज, फूल सुंदरि सामुदायिक प्रभाव की शक्ति का प्रतीक हैं। VWSC की एक समर्पित सदस्य से जल संरक्षण में अग्रणी नेता तक की उनकी यात्रा आशा और दृढ़ता की प्रेरक कहानी है। अपने अथक समर्पण और व्यावहारिक समाधानों के माध्यम से, उन्होंने अपनी समुदाय को प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण जीवन जीने के लिए सशक्त किया, उनके पर्यावरण और जल प्रबंधन के प्रति दृष्टिकोण दोनों को बदल दिया।

फूल सुंदरि की कहानी इस बात की पुष्टि करती है कि संकल्प की कोई सीमा नहीं होती और जुनून और दृढ़ विश्वास के साथ, सबसे बड़ी चुनौतियों का भी प्रभावी समाधान निकाला जा सकता है।

मिस फुल सुंदरी, VWSC की एक योगदानकर्ता सदस्य।
स्रोत: पीएचईडी, छत्तीसगढ़

फूल सुंदरी कहती हैं "पानी के लिए रोज का सफर तकलीफ़दायक था। हमेशा डर लगा रहता था कि पानी से भरा मटका गिर जाएगा या रास्ते में फंस जाऊंगी।" फूल की बातों में पीड़ा झलकती है, जैसे पानी के मटके का वजन और लंबा सफर गांव की तकलीफों की पहचान ही बन गया हो। कोरवा पारा की निवासी फूल सुंदरी ने जल जीवन मिशन के तहत गांव की जल और स्वच्छता समिति (वीडब्ल्यूएससी) की सक्रिय सदस्य के रूप में नेतृत्व संभाला। उन्होंने अपनी बस्ती में पानी की कमी की समस्या को हल करने की आवश्यकता को पहचाना। "पहले तो पानी लाना जरूरी था, तभी जीने की सोच सकते थे। गर्मी का समय सबसे कठिन था।" फूल सुंदरी की बातें उन दिनों की मुश्किलों को बयां करती है: "बच्चे, खासकर लड़कियां, स्कूल जाना छोड़ देती थीं, क्योंकि परिवार के लिए पानी लाना ज्यादा जरूरी था।" अब फूल सुंदरी गर्व से कहती हैं, "अब हमारे पास अपने सपनों को पूरा करने का समय है, और अब तो हम उड़ने के सपने भी देख सकते हैं।"

Haryana

17. Geeta Devi's Unique Take On 'Water Conservation', A Tulsi Plant For Conservation Lessons

Located about 45 kilometers from the district headquarters, the small village of Israna in the Kanina sub-division of Haryana's Mahendragarh district has carved a unique identity for itself in water management. With a total population of around 1,500, this village stands as an example of women's empowerment through water conservation, thanks to Geeta Devi, a local resident and a symbol of female leadership.

Geeta Devi, a simple homemaker, has been actively involved in social work for several years, playing a leading role in the community. From 2021 to 2023, she served as a National Youth Volunteer at the Nehru Yuva Kendra, Narnaul (Ministry of Youth Affairs and Sports, Government of India). During this time, she began raising awareness among women in different villages, aiming to bring change through the collective efforts of rural women. One of her notable initiatives involved distributing thousands of Tulsi plants to households, using empty spice packets from her kitchen, spreading the message of environmental protection.

Geeta organized water conservation workshops at schools and villages under the Nehru Yuva Kendra's "Chiren" program, contributing significantly to water management efforts. Currently, she is an active member of the village's Water and Sewerage Committee. She recalls that before the launch of the ambitious Jal Jeevan Mission in 2019, villagers faced acute water shortages, with poor water quality and no awareness about water testing.

Smt. Geeta, a resident of Mahendragarh district, happy to receive potable water through tap connection.
Source: PHED, Haryana

However, the turning point for Israna came with the launch of the Jal Jeevan Mission in 2019. Before this, the village faced acute water shortages, with inconsistent access to clean water and no formal water testing mechanisms. Determined to change this, Geeta became an active member of the Village Water and Sewerage Committee under the mission's 'Nari Shakti se Jal Shakti' (Women's Power through Water Power) campaign. She initiated door-to-door awareness campaigns, educating villagers on the importance of water conservation and the safe use of drinking water.

Through her leadership, women in the village were trained to test the quality of water and ensure proper tap installations in every household. Today, thanks to Geeta's efforts and the support of the Jal Jeevan Mission, clean, potable water flows reliably to all 258 homes in Israna. Her work, from organizing water conservation workshops in schools to leading grassroots movements, has profoundly changed the community's mindset around water.

Geeta also serves as an 'Atal Jal Saheli' under the Atal Jal Yojana, where she advocates for sustainable irrigation practices and educates farmers about the benefits of government subsidies for micro-irrigation systems. Her tireless efforts have led to over 12 farmers in her village benefiting from this scheme, reducing the excessive extraction of groundwater and preserving it for future generations. Her achievements have not gone unnoticed. Geeta has been recognized at the district level by several organizations, including the Department of Women and Child Development and the Amar Ujala Foundation, as a role model for women in her community.

"Geeta nyu kahe, 'Pehle ta paani lyana hi din bhar ki zindagi rahya karya. Garmi mein haal aur bhi kharab ho jaya karya—nadiyan sookh javen, ar log mitti khod-khod kai paani kadha karya. Us paani nai pi kai rog hon lage, ar jal janit bimari to roj ki baat ho li. Ladkiyan, khaaskar choriyan, school chhod kai gharwalyaan ki madad karen paani lyana mein.'" Geeta kahe, 'Ab to sab tandurust se rahya karen, jal janit bimari bhi ghani ghat gayi. Ar choriyan school javen lagi.' (Geeta said, "Earlier, fetching water used to be the whole day's life. Summers made it even worse—the rivers would dry up, and people would dig into the ground to extract water. Drinking that water led to diseases, and waterborne illnesses became an everyday story. Girls, especially daughters, stopped going to school to help their families fetch water."
Geeta added, "Now everyone stays healthy, and waterborne diseases have reduced significantly. Even daughters have started going to school.)

Workshop sessions conducted by Smt Geeta, orienting her fellow villagers on mindful and resourceful use of water.
Source: PHED, Haryana

One day youth engagement workshop being held with school children in attendance. they are being sensitized on methods to save water in daily lives, they are pledging to conserve water. Source: PHED, Haryana

Through her unwavering commitment to water management and women's empowerment, Geeta Devi has not only transformed the water landscape of Israna but has also inspired countless women to take charge of their community's future. Her story is a testament to how one woman's vision and perseverance can bring lasting change, turning a village into a success story of the Jal Jeevan Mission and showing the power of collective action in rural India.

One day youth engagement workshop being held with school children in attendance. they are being sensitized on methods to save water in daily lives, they are pledging to conserve water.
Source: PHED, Haryana

17. 'जल संरक्षण' पर गीता देवी का अनोखा दृष्टिकोण : तुलसी के पौधे से संरक्षण की शिक्षा

जिला मुख्यालय से लगभग 45 किलोमीटर दूर, हरियाणा के महेंद्रगढ़ जिले के कनीना उपमंडल का छोटा सा गांव इसराना जल प्रबंधन में अपनी अनोखी पहचान बना चुका है। लगभग 1,500 की कुल आबादी वाले इस गांव ने गीता देवी, एक स्थानीय निवासी और महिला नेतृत्व की प्रतीक, के प्रयासों से जल संरक्षण के माध्यम से महिलाओं के सशक्तिकरण का एक उदाहरण प्रस्तुत किया है।

गीता देवी, एक साधारण गृहिणी, कई वर्षों से सामाजिक कार्यों में सक्रिय रूप से भाग ले रही हैं और समुदाय में नेतृत्व की भूमिका निभा रही हैं। 2021 से 2023 तक, उन्होंने नेहरू युवा केंद्र, नारनौल (युवा मामले और खेल मंत्रालय, भारत सरकार) में राष्ट्रीय युवा स्वयंसेवक के रूप में सेवा की। इस दौरान, उन्होंने विभिन्न गांवों की महिलाओं में जागरूकता फैलाने और ग्रामीण महिलाओं के सामूहिक प्रयासों से बदलाव लाने का प्रयास किया। उनके प्रमुख अभियानों में से एक था हजारों तुलसी के पौधों का वितरण, जिसे उन्होंने अपनी रसोई के खाली मसाले के पैकेट का उपयोग करके किया। इस पहल के माध्यम से उन्होंने पर्यावरण संरक्षण का संदेश फैलाया। गीता ने नेहरू युवा केंद्र के "चिरन" कार्यक्रम के तहत स्कूलों और गांवों में जल संरक्षण कार्यशालाओं का आयोजन किया और जल प्रबंधन प्रयासों में महत्वपूर्ण योगदान दिया। वर्तमान से एक था हजारों तुलसी के पौधों का वितरण, जिसे उन्होंने अपनी रसोई के खाली मसाले के पैकेट का उपयोग करके किया। इस पहल के माध्यम से उन्होंने पर्यावरण संरक्षण का संदेश फैलाया।में, वह गांव की जल और सीवरेज समिति की सक्रिय सदस्य हैं। वह याद करती हैं कि 2019 में जल जीवन मिशन शुरू होने से पहले, गांववाले गंभीर जल संकट का सामना कर रहे थे, जिसमें खराब जल गुणवत्ता और जल परीक्षण के बारे में कोई जानकारी नहीं थी।

हालांकि, इसराना में बदलाव की शुरुआत 2019 में जल जीवन मिशन के साथ हुई। इससे पहले, गांव जल संकट, स्वच्छ पानी की अनियमित आपूर्ति और जल परीक्षण की किसी औपचारिक व्यवस्था के अभाव से जूझ रहा था। इसे बदलने के लिए, गीता 'नारी शक्ति से जल शक्ति' अभियान के तहत गांव की जल और सीवरेज समिति की सक्रिय सदस्य बन गईं। उन्होंने घर-घर जाकर जागरूकता अभियान शुरू किए, ग्रामीणों को जल संरक्षण और पीने के पानी के सुरक्षित उपयोग के महत्व के बारे में शिक्षित किया। उनके नेतृत्व में, गांव की महिलाओं को पानी की गुणवत्ता का परीक्षण करने और हर घर में सही तरीके से नल लगवाने के लिए प्रशिक्षित किया गया।

आज, गीता के प्रयासों और जल जीवन मिशन के समर्थन से, इसराना के सभी 258 घरों में स्वच्छ और पीने योग्य पानी सुचारू रूप से पहुंच रहा है। स्कूलों में जल संरक्षण कार्यशालाओं का आयोजन करने से लेकर जमीनी स्तर पर आंदोलन का नेतृत्व करने तक, गीता के कार्यों ने जल के प्रति समुदाय की सोच को गहराई से बदल दिया है।

श्रीमती महेंद्रगढ़ जिले की निवासी गीता नल कनेक्शन के माध्यम से पीने का पानी पाकर खुश हैं।

स्रोत: पीएचईडी, हरियाणा

" गीता ने यूं कहा, "पहले तो पानी लाना ही दिनभर की ज़िंदगी रह्या कर्या। गर्मी में हाल और भी खराब हो जाया कर्या—नदियां सूख जावें, और लोग मिट्टी खोद-खोद कर पानी काढ़ा कर्या। उस पानी को पीकर रोग होन लागे, और जलजनित बीमारियां तो रोज़ की बात हो ली। लड़कियां, खासकर छोरियां, स्कूल छोड़कर घरवालों की मदद करें पानी लाने में।"

गीता कहे, "अब तो सब तंदुरुस्त से रह्या करन, जलजनित बीमारियां भी घणी घट गई। और छोरियां स्कूल जावें लगी।"

(गीता ने कहा, "पहले, पानी लाने में पूरा दिन लग जाता था। गर्मियों ने इसे और भी बदतर बना दिया - नदियाँ सूख जाती थीं, और लोग पानी निकालने के लिए जमीन खोदते थे। उस पानी को पीने से बीमारियाँ होती थीं, और जलजनित बीमारियाँ हो जाती थीं एक रोजमर्रा की कहानी। लड़कियों, विशेषकर बेटियों ने अपने परिवार को पानी लाने में मदद करने के लिए स्कूल जाना बंद कर दिया।"

गीता ने कहा, "अब हर कोई स्वस्थ रहता है और जलजनित बीमारियों में काफी कमी आई है। यहां तक कि बेटियां भी स्कूल जाने लगी हैं।)

श्रीमती गीता द्वारा आयोजित कार्यशाला सत्र, अपने साथी ग्रामीणों को पानी के सचेत और संसाधनपूर्ण उपयोग पर उन्मुख करते हैं।

स्रोत: पीएचईडी, हरियाणा

गीता 'अटल जल योजना' के तहत 'अटल जल सहेली' के रूप में भी सेवा दे रही हैं, जहां वह किसानों को स्थायी सिंचाई प्रथाओं के लिए जागरूक करती हैं और उन्हें सूक्ष्म सिंचाई प्रणालियों के लिए सरकारी सब्सिडी के लाभों के बारे में शिक्षित करती हैं। उनके अथक प्रयासों के कारण गांव के 12 से अधिक किसान इस योजना से लाभान्वित हुए हैं, जिससे भूजल के अत्यधिक दोहन को कम करने और इसे भविष्य की पीढ़ियों के लिए संरक्षित करने में मदद मिली है। उनकी उपलब्धियों को अनदेखा नहीं किया गया है। गीता को महिला और बाल विकास विभाग और अमर उजाला फाउंडेशन सहित कई संगठनों द्वारा जिला स्तर पर एक आदर्श महिला के रूप में सम्मानित किया गया है।

स्कूल के बच्चों की भागीदारी के साथ एक दिवसीय युवा कार्यशाला का आयोजन किया गया। उन्हें दैनिक जीवन में जल बचाने के तरीकों पर जागरूक किया गया और उन्होंने जल संरक्षण की शपथ ली। स्रोत: पीएचईडी हरियाणा जल प्रबंधन और महिलाओं के सशक्तिकरण के प्रति अपनी अटूट प्रतिबद्धता के माध्यम से, गीता देवी ने न केवल इसराना के जल परिदृश्य को बदल दिया है, बल्कि अनगिनत महिलाओं को अपने समुदाय के भविष्य की जिम्मेदारी लेने के लिए प्रेरित भी किया है। उनकी कहानी इस बात का प्रमाण है कि एक महिला की दृष्टि और दृढ़ संकल्प किस तरह से स्थायी बदलाव ला सकते हैं, एक गांव को जल जीवन मिशन की सफलता की कहानी में बदल सकते हैं और ग्रामीण भारत में सामूहिक प्रयासों की शक्ति को दिखा सकते हैं।

स्कूली बच्चों की उपस्थिति के साथ एक दिवसीय युवा सहभागिता कार्यशाला आयोजित की जा रही है। उन्हें दैनिक जीवन में पानी बचाने के तरीकों के बारे में जागरूक किया जा रहा है, वे जल संरक्षण का संकल्प ले रहे हैं।

स्रोत: पीएचईडी, हरियाणा

Madhya Pradesh

18. Clean Water Transforms the Future of Children

The Mardanpur Rural Group Water Supply Scheme, initiated by the Madhya Pradesh Jal Nigam in January 2018, has brought remarkable changes to the tribal community in Jamuniya Kala village. This village, home to 523 residents across 74 households, primarily relies on agriculture and daily wage labor for livelihood. Before this scheme, the local government school and Anganwadi center lacked access to water, significantly affecting children's education.

The government secondary school in Jamuniya Kala serves 113 students, including 66 boys and 47 girls. However, the absence of water facilities posed serious challenges. The lack of water in toilets forced children to return home frequently, disrupting their studies. Although mid-day meals were provided, the absence of drinking water meant students often left school after lunch and didn't return, further hindering their learning.

Under the Mardanpur Rural Group Water Supply Scheme, tap connections were installed in every household, and dedicated water facilities were introduced in schools. Handwashing stations and drinking water taps were set up within the school premises. Separate water tanks were installed for drinking water and toilet use, with local families assigned to oversee their maintenance and ensure a consistent supply.

Tap water was provided in the school.
Source: PHED, Madhya Pradesh

The impact of this intervention has been profound. With proper water facilities in place, children now spend the entire school day engaged in learning. The school management also ensures timely adherence to schedules, and parents are delighted with these improvements. Special attention is given to the cleanliness of toilets, water tanks, and taps, which has led to a noticeable drop in dropout rates and an increase in students' annual attendance.

Located 80 kilometers from Sehore district and 35 kilometers from Budhni block, Jamuniya Kala's transformation is a testament to the success of the Mardanpur Rural Group Water Supply Scheme. By addressing the basic need for water in schools, this initiative has not only improved hygiene and sanitation but has also contributed significantly to the educational prospects of children in this tribal community.

Water facility in village Jamuniya art school and Anganwadi.
Source: PHED, Madhya Pradesh

18. शुद्ध जल से बदला बच्चों का भविष्य

मध्यप्रदेश जल निगम की मरदानपुर ग्रामीण समुह जल प्रदाय योजना जनवरी 2018 से आरम्भ हुई है। ग्राम-जामुनिया कला में आदिवासी समुदाय के लोग निवास करते हैं और इनकी जीविका का साधन खेती/मजदूरी पर निर्भर है। ग्राम जमुनिया कला के स्कूल व आंगनबाड़ी में पानी की सुविधा नहीं थी, जिसके कारण अधिकतर बच्चे स्कूल में ज्यादा देर रूक नहीं पाते थे। बालक एवं बालिका के शौचालय में पानी की व्यवस्था न होने के कारण उन्हें कई बार घर वापस जाना पड़ता था। इस कारण उनकी शिक्षा प्रभावित होती थी। ग्राम जामुनिया कला में शासकीय माध्यमिक विद्यालय स्थित है, जिसमें कुल 113 बच्चे पढ़ते हैं, जिसमें 66 बालक एवं 47 बालिकाएं हैं। यहां सभी बच्चों के लिये मध्यान्ह भोजन की व्यवस्था थी किन्तु पीने के पानी की व्यवस्था न होने से मध्यान्ह भोजन होने के उपरान्त बच्चे अपने घर चले जाया करते थे और वापस लौटकर विद्यालय नहीं आते थे। फलस्वरूप उनकी पढ़ाई-लिखाई प्रभावित होती थी। मरदानपुर ग्रामीण समुह जल प्रदाय योजना अन्तर्गत सभी घरों में नल कनेक्शन स्थापित किये गये है। स्कूल में हाथ धोने एवं बच्चों के पीने के पानी के लिये नलों की व्यवस्था की गई। स्कूल परिसर में पीने के पानी और शौचालय के लिये अलग अलग पानी की टंकियां लगाई गई है। इनमें पर्याप्त पानी की व्यवस्था व निगरानी पास के परिवारों को सौंपी गई है। शासकीय विद्यालय में पानी की उचित व्यवस्था होने के बाद ग्राम में कई सकारात्मक बदलाव आये हैं। अब बच्चे पूरा समय जो स्कूल के लिये निर्धारित है वह स्कूल में ही व्यतीत करते हैं। स्कूल में पानी की उचित व्यवस्था होने से स्कूल प्रबन्धन भी समय का खुश हैं। स्कूल प्रबंधन शौचालय एवं पीने के पानी की टंकी एवं परिपालन

स्कूल में नल का पानी उपलब्ध कराया गया।
स्रोत: पीएचईडी, मध्य प्रदेश

करते हैं। बच्चों के अभिभावक भी इस व्यवस्था से काफी नलों की साफ सफाई का विशेष ध्यान रखते हैं। इससे स्कूल छोड़ने वाले बच्चों की दर में कमी आई है और बच्चों की वार्षिक उपस्थित दर बढ़ी है मध्यप्रदेश जल निगम की मरदानपुर ग्रामीण समुह जल प्रदाय योजना जनवरी 2018 से आरम्भ हुई है। इस योजना के क्षेत्र में जिला सीहोर से 80 किलोमीटर एवं ब्लाक बुधनी से 35 किलोमीटर दूर ग्राम पंचायत खेरी में ग्राम जामुनिया कला स्थित है। ग्राम की कुल जनसंख्या 523 है एवं परिवारों की संख्या 74 है। ग्राम-जामुनिया कला में आदिवासी समुदाय के लोग निवास करते हैं और इनकी जीविका का साधन खेती/मजदूरी पर निर्भर है। ग्राम जमुनिया कला के स्कूल व आंगनबाड़ी में पानी की सुविधा नहीं थी, जिसके कारण अधिकतर बच्चे स्कूल में ज्यादा देर रूक नहीं पाते थे। बालक एवं बालिका के शौचालय में पानी की व्यवस्था न होने के कारण उन्हें कई बार घर वापस जाना पड़ता था। इस कारण उनकी शिक्षा प्रभावित होती थी। ग्राम जामुनिया कला में शासकीय माध्यमिक विद्यालय स्थित है, जिसमें कुल 113 बच्चे पढ़ते हैं, जिसमें 66 बालक एवं 47 बालिकाएं हैं। यहां सभी बच्चों के लिये मध्यान्ह भोजन की व्यवस्था थी किन्तु पीने के पानी की व्यवस्था न होने से मध्यान्ह भोजन होने के उपरान्त बच्चे अपने घर चले जाया करते थे और वापस लौटकर विद्यालय नहीं आते थे। फलस्वरूप उनकी पढ़ाई-लिखाई प्रभावित होती थी। मरदानपुर ग्रामीण समुह जल प्रदाय योजना अन्तर्गत सभी घरों में नल कनेक्शन स्थापित किये गये है। स्कूल में हाथ धोने एवं बच्चों के पीने के पानी के लिये नलों की व्यवस्था की गई। स्कूल परिसर में पीने के पानी और शौचालय के लिये अलग अलग पानी की टंकियां लगाई गई है। इनमें पर्याप्त पानी की व्यवस्था व निगरानी पास के परिवारों को सौंपी गई है। शासकीय विद्यालय में पानी की उचित व्यवस्था होने के बाद ग्राम में कई सकारात्मक बदलाव आये हैं। अब बच्चे पूरा समय जो स्कूल के लिये निर्धारित है वह स्कूल में ही व्यतीत करते हैं। स्कूल में पानी की उचित व्यवस्था होने से स्कूल प्रबन्धन भी समय का परिपालन करते हैं। बच्चों के अभिभावक भी इस व्यवस्था से काफी खुश हैं। स्कूल प्रबंधन शौचालय एवं पीने के पानी की टंकी एवं नलों की साफ सफाई का विशेष ध्यान रखते हैं। इससे स्कूल छोड़ने वाले बच्चों की दर में कमी आई है और बच्चों की वार्षिक उपस्थित दर बढ़ी है।

ग्राम जमुनिया कला के स्कूल व आंगनबाड़ी में पानी की सुविधा।
स्रोत: पीएचईडी, मध्य प्रदेश

19. Tap Water Brings Sweetness to Relationships

Sheela Dhanwade, a 35-year-old homemaker from Nayagaon in Budhni Block, has witnessed a remarkable transformation in her village. Recalling the past, she shares, "There was a time when water scarcity led to constant tension and quarrels in the village. Women would fight while queuing at handpumps or wells to fetch water. Arguments often escalated into abuse and, occasionally, physical altercations. These disputes would involve men, creating an atmosphere of conflict across the entire village."

Reflecting on those days, Sheela explains how the struggle for water strained social and familial bonds within the community. However, the implementation of the Mardanpur Rural Group Water Supply Scheme has changed everything. Out of 445 households in Nayagaon, 154 now have tap water connections, including Sheela's home. She beams with pride, saying, "We no longer have to queue for water. Every home now gets water through taps. Har-Har Narmada, Ghar-Ghar Narmada."

Sheela is particularly delighted by how tap water has brought harmony to her family. "Earlier, I couldn't prepare meals on time. My in-laws would often get their food late, which led to daily arguments. But now, that's all in the past. I have enough time for my children, my in-laws, and my husband. The three to four hours we used to spend fetching water are now dedicated to my children's studies and caring for the family."

Another resident of the village, Parvati Yadav, shares similar sentiments. "Fetching water used to be the biggest

task of the day. The men never helped, and women would spend their mornings and afternoons just collecting water. Now that water comes directly to our homes, we save time and energy. Family conflicts have also disappeared."

The story of Nayagaon illustrates how access to tap water not only alleviates the burden of daily chores but also fosters peace and strengthens relationships within households and the community.

Sheela sharing how the atmophere in her village is congeneal now as they have received tap connections.

Source: PHED, Madhya Pradesh

The elderly woman from the village, Rambai, who is 60 years old, supports Sheela's words. She says, "Earlier, we had to fetch water from one to one and a half kilometers away. We had to hire a bullock cart if we needed more water. But now that water comes through taps, all these difficulties have ended. Truly, the bitterness of life has lessened."

For Sheela Dhanwade, having water through taps is not just a convenience but a new beginning. She proudly says, "Now our time is not spent on fetching water but on our dreams and family. The tap water has changed our lives."

19. नल का पानी लाया - रिश्तों में मिठास

बुधनी ब्लॉक के नयागांव की रहने वाली शीला धनवाड़े, 35 साल की गृहिणी, अपने गांव में आए बदलाव को अपनी आंखों के सामने देख चुकी हैं। एक समय था, जब गांव में पानी की कमी के कारण तनाव और झगड़े आम बात थी। शीला मुसकुराते हुए बताती हैं, "पहले पानी के लिए हमें घंटों हैंडपंप या कुएं पर लाइन लगानी पड़ती थी। महिलाएं पानी भरने के दौरान लड़ पड़ती थीं। गाली-गलौज, कहासुनी, और कभी-कभी मारपीट तक हो जाती थी। यह झगड़े मर्दों तक पहुंच जाते थे, और पूरा गांव तनाव में रहता था।"

उन दिनों को याद करते हुए शीला कहती हैं कि पानी की इस लड़ाई ने गांव के सामाजिक और पारिवारिक रिश्तों में खटास पैदा कर दी थी। लेकिन अब, मरदानपुर ग्रामीण समूह जल प्रदाय योजना के तहत नल से जल मिलने के बाद, स्थिति पूरी तरह बदल गई है। नयागांव के 445 घरों में से 154 घरों में नल का कनेक्शन हो चुका है। शीला के घर में भी नल का कनेक्शन है। वह कहती हैं, "अब पानी के लिए कहीं भी लाइन नहीं लगानी पड़ती। हर घर में नल से पानी आ रहा है। हर-हर नर्मदा, घर-घर नर्मदा।"

शीला को सबसे ज्यादा खुशी इस बात की है कि नल से पानी आने के बाद उनके पारिवारिक रिश्तों में मिठास आ गई है। वह बताती हैं, "पहले समय पर रोटी नहीं बनती थी। सास-ससुर को खाना देने में देर हो जाती थी, और रोज झगड़े होते थे। लेकिन अब ऐसा कुछ नहीं होता। अब बच्चों के लिए, सास-ससुर के लिए, और पति के लिए समय है। पानी लाने में जो तीन-चार घंटे लगते थे, वो अब बच्चों की पढ़ाई और परिवार की देखभाल में लग रहे हैं।"

उनके गांव की एक और महिला, पार्वती यादव, भी इस बदलाव की गवाह हैं। पार्वती कहती हैं, "पहले पानी लाना सबसे बड़ा काम था। मर्द इस काम में हाथ नहीं बंटाते थे। सुबह से लेकर दोपहर तक औरतों का वक्त पानी भरने में निकल जाता था। अब पानी घर पर आता है, तो समय और ऊर्जा बच गई है। परिवार में भी झगड़े खत्म हो गए हैं।"

ग्राम जमुनिया कला के स्कूल व आंगनबाड़ी में पानी की सुविधा।

स्रोत: पीएचईडी, मध्य प्रदेश

गांव की बुजुर्ग महिला, रामबाई, जो 60 साल की हैं, शीला की बातों का समर्थन करती हैं। वह कहती हैं, "पहले हमें एक-डेढ़ किलोमीटर दूर से पानी लाना पड़ता था। बैलगाड़ी मंगानी पड़ती थी अगर ज्यादा पानी चाहिए होता था। लेकिन अब नल से पानी आता है, तो ये सारी मुश्किलें खत्म हो गई हैं। सच में जीवन की कड़वाहट कम हो गई है।" शीला धनवाड़े के लिए नल से जल आना सिर्फ सुविधा नहीं, बल्कि एक नई शुरुआत है। वह गर्व से कहती हैं, "अब हमारा समय पानी के लिए नहीं, बल्कि अपने सपनों और परिवार के लिए है। नल का जल हमारी जिंदगी बदल चुका है।"

20.Success Story: Transforming a Village into a Model Village through the Group Tap Water Supply Scheme

The Damoh-Patera Group Water Supply Scheme, implemented by the Madhya Pradesh Jal Nigam, is providing clean drinking water to 457 villages across Damoh, Patera, Hatta, Jabera, and Tendukheda blocks in Damoh district. Among these villages, Padariya Thovan, now a model village, has undergone a remarkable transformation.

Before the implementation of the tap water scheme, the village faced persistent water shortages due to its rocky terrain. During the peak summer months of May and June, local water sources such as wells, handpumps, and stepwells would completely dry up. Villagers, especially elderly women, young girls, and pregnant women, were forced to walk 2 to 5 kilometers to fetch water.

The lack of access to clean drinking water also led to frequent health issues, with villagers often resorting to consumin g whatever water was available, regardless of its quality. Today, the situation is vastly different. Every household in Padariya Thovan now has a tap connection, ensuring a regular supply of clean drinking water. Since the availability of safe water, villagers no longer face the hardships they once endured. A few months ago, Padmashree awardee Shri Ramsahay Pandey officially declared the village as having "Har Ghar Jal" (water in every home).

Villagers celebrating the FHTC connection with a formal welcome.

Source: PHED, Madhya Pradesh

The impact of the clean water supply is evident. Villagers are now free from the grip of waterborne diseases, leading to improved health. Additionally, the economic and social status of the community has seen a significant uplift, as time and energy previously spent on fetching water are now directed toward productive and personal endeavors.

The transformation of Padariya Thovan stands as a testament to how initiatives like the Damoh-Patera Group Water Supply Scheme can bring about sustainable development, turning challenges into opportunities and paving the way for a healthier, more prosperous future for rural communities.

"We not only receive water on time, but its pH level is also 7.00, which is considered ideal for health."

- Chetna Bajpai

"Thank you very much to the Jal Jeevan Mission for providing water to every household." "We had already made our village clean and smart with the help of the villagers, but we couldn't find a permanent solution to the water problem. However, since Jal Nigam provided connections to every household, this problem has been permanently solved. Now, our village is not only a smart village but also a village with water in every household."

- Anuj Bajpai

20. सफलता की कहानी: श्समूह ग्राम नल जल योजना से ग्राम बना आदर्श ग्राम

बदलावों, बस्तर जिले के कोण्डागांव विकासखंड का एक छोटा सा गांव, जो हरियाली और प्रकृति की गोद में बसा है। लेकिन यह सुंदरता उस समय फीकी लगती थी, जब इस गांव के लोग पानी की तलाश में दिन-रात संघर्ष करते थे। पानी, जो जीवन का आधार है, यहां की ज़िंदगी का सबसे कठिन हिस्सा बन गया था। गांव की महिलाएं, बच्चे, और बुजुर्ग—सभी के दिन की शुरुआत पानी के इंतजाम से होती थी और रात तक यही जद्दोजहद जारी रहती थी।

मध्यप्रदेश जल निगम की दमोह-पटेरा समूह जल प्रदाय योजना जिला-दमोह ब्लाक- दमोह [पटेरा हटा के] जबेरा एवं तेंदूखेड़ा को मिलाकर कुल 457 ग्रामों के लिये शुद्ध पेयजल उपलब्ध करायें जाने का कार्य कर रही हैं। नल जल योजना आने के पूर्व ग्राम पड़रिया थोवन (आदर्श ग्राम) ग्राम में ग्रामीण क्षेत्र पथरीला होने के कारण जल की समस्या बनी ही रहती है। ग्राम में हर वर्ष माह मई और जून में उपलब्ध संसाधन कुएं, हैण्डपंप एवं बावड़ियों का पानी पूर्णतः समाप्त हो जाता था।

ऐसी स्थिति में लगभग 2 से 5 कि.मी. दूर दराजों से पानी भर के लाना पड़ता था। ग्राम की बुजुर्ग महिलाओं] छोटी-छोटी बच्चियों एवं गर्भवती महिलाओं को इन कठिनाईयों का विशेष सामना करना पड़ रहा था। शुद्ध पेयजल उपलब्ध न होने के स्थिति में जैसा भी पीने का पानी उपलब्ध हो रहा था उससे ही काम चलाना पड़ता था जिससे बीमारिया बनी ही रहती थी।

ग्रामीण औपचारिक स्वागत के साथ एफएचटीसी कनेक्शन का जश्न मना रहे हैं।
स्रोत: पीएचईडी, मध्य प्रदेश

वर्तमान में ग्राम के सभी घरों में नल कनेक्शन के माध्यम से स्वच्छ पेयजल नियमित रूप से उपलब्ध हो रहा है। जब से शुद्ध पेयजल प्राप्त हो रहा है तबसे किसी भी प्रकार की दिक्कतों का सामना नहीं करना पड़ रहा है। कुछ माह पूर्व पद्मश्री श्री रामसहाय पांडे जी द्वारा ग्राम को हर घर जल घोषित किया गया है। ग्रामवासी शुद्ध पेयजल के उपयोग से जलजनित बीमारियों के प्रकोप से से दूर हुए हैं, साथ ही उनकी उनकी आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति में भी सुधार आया है।

"यह पानी समय पर तो मिलता ही है साथ ही इसका पीएच 7.00 है जो स्वास्थ्य के लिए सही माना जाता है।"

चेतना बाजपेयी
(आंगनवाड़ी कार्यकर्ता)

"जल जीवन मिशन का हर घर जल उपलब्ध कराने के लिए बहुत- बहुत धन्यवाद । " "ग्राम को हमने ग्राम वासियों की मदद से स्वच्छ एवं स्मार्ट तो बना दिया था किंतु पानी की समस्या का स्थाई समाधान नहीं कर पाए थे किंतु जल निगम के द्वारा जब से हर घर में कनेक्शन किए तब
से ग्राम में इस समस्या का स्थाई समाधान भी हो गया है अब ग्राम स्मार्ट गांव के साथ-साथ हर घर जल घोषित वाला ग्राम भी हो गया है।।"

अनुज बाजपेयी

21. Elixir of Life: How Clean Water Transformed a Village

Pipariya Hathni, a small village in Damoh district, Madhya Pradesh, once grappled with severe water scarcity. This agrarian community, dependent on farming and forest produce, relied on just two handpumps for their water needs. These handpumps, insufficient for drinking and daily household chores, often provided water unfit for consumption due to the rocky terrain.

Rajkumari Rai, the village's Anganwadi worker, recalls how contaminated water led to frequent outbreaks of diseases like typhoid, vomiting, and diarrhea. In 2005, the situation turned dire when nearly 70% of the villagers suffered from typhoid. Varsha Singh, a local woman, remembers the struggles vividly. During monsoons, they fetched water from rain-fed streams; in winters, from small reservoirs; and in summers, they walked two kilometers to collect water. The burden fell heavily on women, especially pregnant ones like Vimalabai, who had to carry heavy pots over rocky paths. Even children pitched in, often sacrificing their education to help with water collection.

Today, the story of Pipariya Hathni is one of transformation and hope. Under the Jal Jeevan Mission, every household now has access to piped water, ensuring clean and safe drinking water for all. Elderly villager Kapuri Bai Singh shares her joy, stating that the availability of water has brought profound changes to their lives. Women now save hours of labor, allowing them to focus on their families and children. Girls, who once missed school due to water-related chores, now attend regularly and on time.

Kapuri Bai reflects on the drastic shift, saying, “The water crisis is now a thing of the past. The government has not just provided water but has brought the nectar of life to every household.” This development has infused the village with new energy and happiness. Women feel more empowered and independent, embracing the positive changes that clean water has brought to their lives.
The transformation of Pipariya Hathni underscores the power of initiatives like the Jal Jeevan Mission in delivering more than just water—it delivers hope, health, and a brighter future.

Anganwadi worker Mrs Rajkumari Rai sharing her story
Source: PHED, Madhya Pradesh

"Earlier, I couldn’t cook meals on time. It used to delay serving food to my in-laws, and there were constant arguments and fights. But now, all that has changed. Now, I have time for my children, my in-laws, and my husband. The three to four hours that used to go into fetching water are now spent helping my children study and taking care of the family.”

21. अमृतरूपी जल से बदली ग्राम की तस्वीर

मध्यप्रदेश के दमोह जिले के पिपरिया हथनी ग्राम पंचायत की कहानी एक छोटे से गांव की है, जो कभी पानी की गंभीर समस्या से जूझ रहा था। यह गांव, जहां ज्यादातर लोग कृषि और वन उत्पादों पर निर्भर हैं, पानी की भारी कमी का सामना कर रहा था। ग्रामीणों की मुख्य जल आपूर्ति केवल दो हैंड पंपों पर निर्भर थी, जो पीने से लेकर अन्य घरेलू कामकाज के लिए भी पर्याप्त नहीं थे। पथरीली जमीन के कारण हैंडपंप का पानी भी स्वास्थ्य के लिए नुकसानदायक था।

ग्राम की आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, श्रीमती राजकुमारी राय ने बताया कि दूषित पानी पीने से हर साल गांव में टाइफाइड, उल्टी और दस्त जैसी बीमारियां फैलती थीं। 2005 में स्थिति और बिगड़ गई थी, जब लगभग 70% ग्रामवासी टाइफाइड से ग्रस्त हो गए थे।

ग्रामीण महिला वर्षा सिंह याद करती हैं कि उस समय बरसात में नालों से, सर्दियों में छोटे-छोटे जलाशयों से, और गर्मियों में 2 किलोमीटर दूर से पैदल पानी लाना पड़ता था। विशेषकर महिलाओं के लिए यह स्थिति बेहद कठिन थी। गर्भवती विमलाबाई को भी गर्भावस्था में सिर पर दो बर्तन रखकर पथरीले रास्तों से 1 किलोमीटर पैदल चलकर पानी लाना पड़ता था। बच्चों को भी पानी भरने में मदद करनी पड़ती थी, जिससे उनका पढ़ाई का समय प्रभावित होता था।

ग्राम की बुजुर्ग महिला, श्रीमती कपूरी बाई सिंह, ने खुशी व्यक्त की कि अब गांव की जलापूर्ति की स्थिति काफी बेहतर हो गई है। जल जीवन मिशन के तहत प्रत्येक घर में जल कनेक्शन किया गया है, जिससे साफ और पीने योग्य पानी उपलब्ध हो रहा है। इससे महिलाओं का समय बचता है और वे घर और बच्चों की देखभाल में अधिक समय दे पा रही हैं। अब गांव की लड़कियां भी समय पर स्कूल जा रही हैं।

कपूरी बाई बताती हैं कि पहले जो पानी की समस्या थी, वह अब बीते दिनों की बात हो गई है। सरकार ने केवल पानी ही नहीं, बल्कि घर-घर अमृत पहुंचाया है, जिससे पूरे गांव में एक नई ऊर्जा और खुशी आई है। अब ग्रामीण महिलाएं पहले से कहीं अधिक स्वतंत्र महसूस कर रही हैं और उनके जीवन में सकारात्मक बदलाव आए हैं।

आंगनबाड़ी कार्यकर्ता श्रीमती राजकुमारी राय अपनी कहानी साझा करते हुए

स्रोत: पीएचईडी, मध्य प्रदेश

पहिले रोटी सही समय पे नई बन पाती थी। सास-ससुर ने खाना देवे में देर हो जाती थी, अउ रोज लड़ाई-झगड़ा होते थे। अब वो सब कुछ नई होवता। अब बच्चों के लिए, सास-ससुर के लिए, अउ पति के लिए टाइम है। पानी लाने में जउन तीन-चार घंटा लागते थे, अब ओ समय बच्चों की पढ़ाई अउ परिवार के देखभाल में लगत है।" "पहले समय पर रोटी नहीं बनती थी। सास-ससुर को खाना देने में देर हो जाती थी, और रोज झगड़े होते थे। लेकिन अब ऐसा कुछ नहीं होता। अब बच्चों के लिए, सास-ससुर के लिए, और पति के लिए समय है। पानी लाने में जो तीन-चार घंटे लगते थे, वो अब बच्चों की पढ़ाई और परिवार की देखभाल में लग रहे हैं।"

22.Curse to Blessing: The Tale of Pure Water in Parmarkhedi

Nestled along the Chambal River, five kilometers from the industrial town of Nagda in Madhya Pradesh, lies the village of Parmarkhedi. Located 48 kilometers from the sacred city of Ujjain, Parmarkhedi was once plagued by a water crisis that cast a shadow of suffering over its residents.

For years, the villagers drank fluoride-contaminated water, leading to widespread health issues and a rise in disabilities. The lack of safe drinking water left Parmarkhedi grappling with what seemed like a curse on its people.

Relief arrived in 2019-20 with the launch of a group water supply scheme for 22 villages in the Khachrod block, including Parmarkhedi. Under this initiative, 192 out of 200 families in the village were provided with piped water connections, delivering safe drinking water to their homes. The transformation was swift and visible—disabilities among children began to decline, and the health of the villagers improved remarkably.

The villagers embraced the water supply system with deep gratitude, considering their taps as family members and even tying protective threads (Rakhi) around them in symbolic reverence. Gopal Gurjar, President of the Village Water Supply Subcommittee, alongside Sarpanch Narsingh Sisodia and other village leaders, shared their joy:

"The day water distribution began was celebrated as a festival in our village. We organized a rally to welcome Mother Narmada and Mother Chambal into our lives, worshipped our water taps, broke coconuts, and performed traditional rituals with fervor."

The safe water initiative by the Madhya Pradesh Jal Nigam has infused Parmarkhedi with hope, enthusiasm, and joy. What was once a village burdened by disability and despair is now a place of health and happiness.

Grateful to the Hon'ble Prime Minister and Chief Minister, the villagers no longer view water as a mere resource but as a divine blessing. Parmarkhedi's transformation is a testament to how access to pure water can break the cycle of suffering, bringing dignity and delight to even the remotest corners of the nation.

The villagers have started considering the tap with pure water as their brother and considering it as their protection.

Source: PHED, Madhya Pradesh

The Chairperson of the Village Water Subcommittee, Shri Gopal Ji Gurjar, Sarpanch Shri Narsingh Sisodia Ji, Secretary Shri Kanhaiyalal Ji, and Smt. Bhawar Bai shared, "The village celebrated the arrival of water with great enthusiasm. This innovative scheme by the Madhya Pradesh Jal Nigam has created an atmosphere of excitement, hope, and happiness among the villagers.

On the day water distribution began, the entire village organized a rally to celebrate the arrival of Maa Narmada and Maa Chambal. Everyone performed rituals to worship their individual taps, broke coconuts, and conducted an aarti to mark the occasion."

22. सफलता की कहानी: शुद्ध पेयजल से मिटा कष्टों से भरी ज़िन्दगी का अभिशाप

मध्यप्रदेश के उज्जैन जिले के विश्व प्रसिद्ध धार्मिक स्थल बाबा महाकाल की नगरी से 48 किमी दूर औद्योगिक नगरी नागदा से चंबल नदी के किनारे 5 किमी की दूरी पर बसा है ग्राम परमारखेड़ी।

परमारखेड़ी एक ऐसा ग्राम था जो शुद्ध पानी के अभाव में वर्षों से विकलांगता का दंश झेल रहा था। गाँव के प्रदूषित पानी के कारण फ्लोराइड पानी पीकर लोगों में बीमारी के साथ-साथ विकलांगता बढ़ने लगी थी।

वर्ष 2019-20 से इस ग्राम में खाचरौद ब्लाक के 22 ग्रामों को मिलाकर समूह जल प्रदाय योजना का शुभारंभ किया गया। योजना के माध्यम से परमारखेड़ी ग्राम के 200 परिवारों में 192 परिवारों को नल कनेक्शन प्रदान कर शुद्ध पेयजल प्रदान किया जा रहा हैं इसके बाद से ही गाँव वालों के स्वास्थ्य में व्यापक परिवर्तन दिखाई देने लगा है, बच्चों में विकलांगता में धीरे-धीरे कमी आने लगी हैं और ग्राम वासी शुद्ध पानी के नल को अपना भाई मानकर उसे रक्षासूत्र मानने लगे हैं।

ग्राम पेयजल उप समिति के अध्यक्ष श्री गोपाल जी गुर्जर, सरपंच श्री नरसिंह सिसौदिया जी, सचिव कन्हैयालाल जी एवं श्रीमती भंवर बाई ने बताया कि "ग्राम में पानी आने का उत्सव मनाया गया मध्यप्रदेश जल निगम की इस अभिनव योजना ने ग्रामवासियों में उत्साह,उम्मीद और उल्लास का वातावरण निर्मित कर दिया है, पूरे गाँव में जिस दिन से जल वितरण का कार्य प्रारंभ हुआ है उस दिन पूरे ग्राम में रैली निकालकर माँ नर्मदा, माँ चम्बल का प्रवेश उत्सव मनाया गया और सभी ने अपने-अपने नलों का पूजन किया, नारियल फोड़ा और आरती भी उतारी।

आज ग्रामीणजन शुद्ध पेयजल के आने से विकलांगता के दंश से मुक्त होकर अपनी जिंदगी खुशी- खुशी गुजार रहे हैं ओर मान. प्रधानमंत्री जी एवं मान. मुख्यमंत्री जी को अपना आभार व्यक्त कर रहे हैं।

ग्राम वासी शुद्ध पानी के नल को अपना भाई मानकर उसे रक्षासूत्र मानने लगे हैं।

स्रोत: पीएचईडी, मध्य प्रदेश

ग्राम पेयजल उप समिति के अध्यक्ष श्री गोपाल जी गुर्जर, सरपंच श्री नरसिंह सिसौदिया जी, सचिव कन्हैयालाल जी अउ श्रीमती भंवर बाई बताई कि "ग्राम में पानी आवे का उत्सव मनाया गय। मध्यप्रदेश जल निगम की ये नई योजना ने ग्रामवासियों में उमंग, उम्मीद अउ खुशहाली का माहौल बना दिया। पूरे गाँव में जिस दिन से जल वितरण का काम शुरू हुआ, उस दिन पूरे गाँव में रैली निकाल के माँ नर्मदा अउ माँ चम्बल का प्रवेश उत्सव मनाया गय अउ सब ने अपन-अपन नल का पूजन किय, नारियल फोड़ा अउ आरती घलव उतारी।"

(ग्राम पेयजल उप समिति के अध्यक्ष श्री गोपाल जी गुर्जर, सरपंच श्री नरसिंह सिसौदिया जी, सचिव कन्हैयालाल जी और श्रीमती भंवर बाई ने बताया कि "ग्राम में पानी आने का उत्सव मनाया गया। मध्यप्रदेश जल निगम की इस अभिनव योजना ने ग्रामवासियों में उत्साह, उम्मीद और उल्लास का वातावरण बना दिया। पूरे गांव में जिस दिन से जल वितरण का काम शुरू हुआ, उस दिन पूरे गांव में रैली निकालकर माँ नर्मदा और माँ चम्बल का प्रवेश उत्सव मनाया गया और सभी ने अपने-अपने नलों का पूजन किया, नारियल फोड़ा और आरती भी उतारी।")

Mizoram

23. Khualen: A Village Transformed by Water

High in the hills of Mizoram, where the landscape is as steep as it is beautiful, lies the remote village of Khualen. Surrounded by dense forests and crisscrossed by narrow, winding paths, this small community has long endured the daily struggle of fetching water. For years, the only source of water came from a single, modest spring—a lifeline shared by every family. But that lifeline wasn't always reliable. During the dry months, the spring's flow would reduce to a trickle, and the village would find itself rationing water, making do with a mere 179 liters per person per day. Every drop counted, and every journey to collect it grew heavier with the weight of scarcity.

The people of Khualen, like many rural communities in India, were accustomed to this difficult existence. Dependent on agriculture for their livelihoods, they balanced the demands of farming with the unrelenting challenge of water collection. Each day was a reminder of how critical, yet precarious, access to clean water could be.

But all of that began to change when the Jal Jeevan Mission (JJM) arrived in Khualen. The gravity-fed water system that had been serving the village since 1992 was old and leaking. It could no longer meet the growing needs of the village, which had expanded from 44 households to 54 over the years. Realizing this, the village leaders, along with the community, embraced the support provided by the Jal Jeevan Mission to rejuvenate their water sources and build a sustainable system that could serve them for decades to come.

Khualen's transformation was not just about repairing an old system. It was about rethinking how water could be sustainably sourced and conserved. The village, situated amidst steep hills, took on an ambitious project of recharging its water sources using modern technology. Satellite data and remote sensing tools like ArcGIS were employed to map the land and identify the best spots for water recharging. The community dug contour trenches to stop water runoff and increase groundwater percolation.

In the village's catchment areas—where the springs that supply water are fed by rainfall—over 600 trees were planted to hold the soil and promote water retention.

This effort, led by the village's WATSAN (Water and Sanitation) Committee and supported by funds from the MGNREGA scheme, was a labor of love. Every tree planted, every trench dug, was a step toward securing Khualen's water future. With the springs rejuvenated, the water began to flow more consistently. What was once a struggling water supply system becoming a robust, gravity-fed network that now delivers more than 55 liters of water per person each day—even in the driest months.

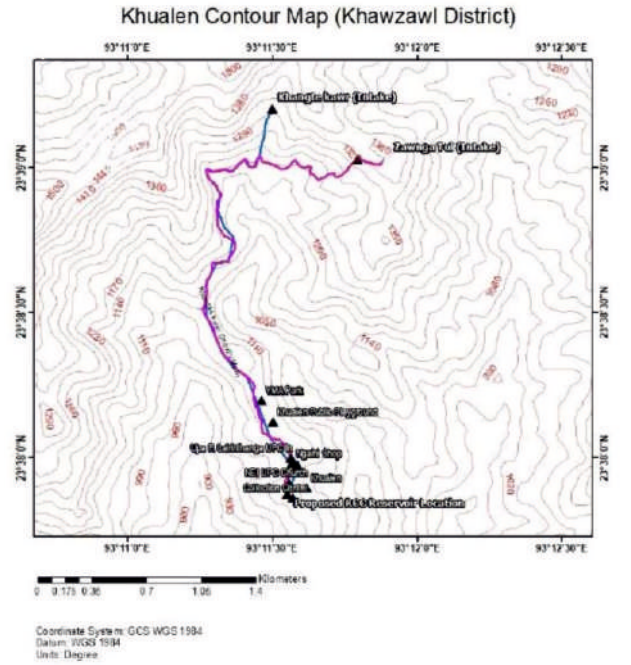

Satellite and contour map of Khaulen Village, Sikkim.
Source: PHED, Mizoram

Community's life transformed

For the families of Khualen, the impact has been profound. Gone are the days when villagers had to worry about whether there would be enough water to last the week. Each household now enjoys uninterrupted access to clean water, flowing directly from the tap. The gravity-fed system, which requires no electricity to pump the water, ensures that every home has 24/7 access to safe drinking water, regardless of the season. This newfound water security has transformed daily life. Families can now focus on improving their livelihoods instead of spending hours each day hauling water. Children, once tasked with helping their parents fetch water, can now dedicate more time to school. Farmers, no longer limited by water shortages, can irrigate their crops more reliably and increase their yields.

Contour trench constructed at the catchment area by the villagers.
Source: PHED, Mizoram

Khualen's journey doesn't stop with the pipes and taps.Ensuring the water is safe to drink has been a top priority for the village. Five women were trained to use Water Testing Kits (FTKs), empowering them

Laldina sharing her story.
Source: PHED Mizoram

"Chhunrawng thla chhuah hunah pawh tap atang tui a haw, kan ngaihtuah dan hi a chang ta," tin Laldina, Khualen hnam mi, a sawi. (Laldina, a resident of Khualen, said, *"Even in the dry months, water fows from the tap; our worries have disappeared."*)

to regularly check the water quality and guarantee that it meets health standards. These women have become custodians of the village's water supply, ensuring that every drop is as safe as it is abundant.

Today, Khualen stands as a model for other rural communities facing water scarcity. The village's innovative use of remote sensing technology, its commitment to recharging its water sources, and its focus on community involvement have all contributed to its success. The gravity-fed system, which requires no electricity, is a testament to the power of simple, sustainable solutions in meeting even the most pressing of needs. As Khualen looks to the future, its villagers know that they have built something lasting. Their efforts have not only secured their own water supply but have also provided a blueprint for other villages across Mizoram—and indeed, all of India—to follow.

Thanks to the Jal Jeevan Mission, Khualen has been transformed from a village struggling to meet its basic water needs to a thriving, self-sufficient community. The hills still rise steeply around it, but now, with water flowing freely through its homes, Khualen's future is as bright as the streams that nourish it.

JJM assests in Khualen Village, Mizoram.
Source: PHED, Mizoram

23. Khualen: Tuiin a thlakdang lam khua

Zo tlang sang, Mizoram, a ram a mawi tluk zeta chhengchhia-ah khian, khaw hla tak Khualen khua a awm a. Ramngaw durpui leh kawng zim leh kual kawi inchhun kalh nukina a hual vel he khaw te tak te hian hun rei tak chhung nitina an mamawh tui lak kawngah harsatna an lo tawk tawh a. Kum tam tak chhung chu tui hna pakhat ringin – chhungtinin an lo tlan lai lai tawh thin a ni. Mahse chu tuihna pakhat ngawt chu rinrawlah a tlo zo si lo. Thal laiin, tui hna tlem em em a, a kang ti tih fo mai, a khaw mite chuan an insemzai a ngai a, nitin mi pakhatin tui liter 179 theuh chang turin an in zawng thei sem thin. Tui mal far tin a hlu a, tui nei tura beih lah a van em avangin a har tulh tulh mai si.

Khualen khaw tui liakte chuan, India rama thingtlang mi dangte ang bawkin, chu harsatna chu a ngai neih a ni ber a. Nun khawchhuah nan huan tlai an siam a, tui harsa chung chungin huan thlaia an mamawhte inphuhru turin theih tawp an chhuah thin. Kawla ni chhuak tin mai hi tui thianghlim neih harsatzia leh awlai lohzia hrilhtu a chang zel thin.

Mahse chung zawng zawng chu Jal Jeevan Mission (JJM) in Khualen a luh atangin a lo inthlak danglam ta a ni. Kum 1992 atanga an neih tan, gravity-in a chawmna hmaruate chu an lo hlui tawhin an phui tha lo hle a. Khaw thang zelah, chhungkaw 44 atanga chhungkaw 54 an lo kai hnuah phei chuan an tawng khawp tawh lo hle. Chu chu hriaiin khawtlang hruaitute chuan khaw mipuite nena tangrualin Jal Jeevan Mission hmalakna chu theih tawp tak zet zet chhuahin an thlawp tlat a, chu chuan tui hnar thar a siamsakin kum sawm tam tak tui hniang hnar takin a pe dawn a ni.

Khualen khaw thlakdanglamna hi thil hlui thawm that ngawt a ni lo. Engtin nge tui hniang hnar tak leh humhalh chung zela kan neih theih ang tih ngaihtuahna a ni. Chu khua, tlang pangper rualrem lo tak taka awm chuan tunlai thiamna hmangin a hman tur tui hna a sial chhuak a ni. Satellite khaw thlir leh hmun hla tak tak chhui thei ArcGIS an tih maite hmangin a ram leilung zirchian a ni a, tui khawlna hmun tur tha tak hmuh a ni ta. Khawtlang mipuite chuan tui luang ral mai mai tur leh lei hnuai tui luang ral mai mai tur hum nan khur an lai ta a ni.

Khua-in tui an khawlkhawmna hmun – ruahtui-a chawm tuihnate an awmna hmunah – chuan thing 600 chuang phun a ni a, chu chu leilung chelh ngheh nan leh tui humhalh nana tih a ni. Chutianga an beihna, an khaw WATSAN (Water and Sanitation) Committee te bul tum leh MGNREGA scheme hmanga sum leh pai an vawmna chu, rilru hlim tak chunga an tih a ni. Ting tiak an phun tin te, khur an laih tin te chu Khualen khaw tuihnar hmakua atana rahbi pawimawh em em vek an ni. Tui hna a lo tam tak avangin, tui luang pawh a hniang hnar ta hle a. Tun hma tu harsa em em thin kha tunah chuan gravity tui tha taka lain ni khatah mi pakhat tan liter 55 kher lovin, thal khaw ro lai ber pawhin an dawng tawh a ni.

Vantlang nun thlakdanglam a ni.

Khualen chhungkuate nun atangin a rah chhuah hmuh a ni a. Kar tluan daih tui hman tur an nei ang em tih ngaihtuah reng renga patlingin zan mut paha suangtuahna hahthlak a hman thinte chu hmanlai an lo chang zo ta. Tunah chuan chhung tinin an inchhung lumah tui thianghlim hniang hnar takin an herhaw thei tawh a.

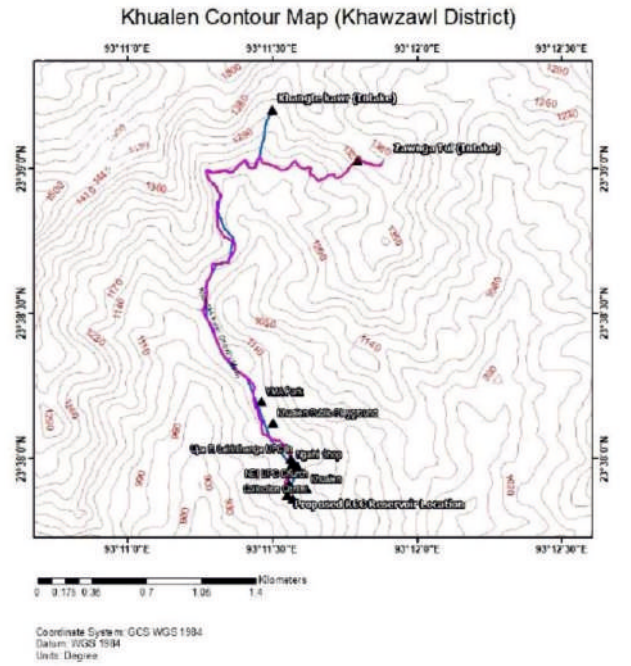

Satellite and contour map of Khaulen Village, Sikkim.

Source: PHED, Mizoram

Gravity-in a chawm, kawlphetha hmanga tui pump ni bawk si lo chuan kar khata nitin chhiarin, sik leh sa chawh buai hauh lovin tui in tur thianghlim tak a pe kum tluan ta mai. An tui hnar hmuhchhuah thar chuan an nun a thlak danglam chiang takzet. Chhungtinin tui neih dan tur ni tawh lovin an khawsak an ngaihtuah thei tawh a. Naupang, tui chawia tuk tin tlai tina liam thinte pawh sikul kaiin zirna lamah an insawrbing theih phah bawk. Lo neitu, tui ngheia indawm tlawk tlawkte pawhin duh thalin an thlaite tuiin an chawm thei ta bawk a ni.

Khualen khuate zinkawng hi tui pipe leh a herhhawnna-ah a tawp mai hauh lova. An tui neihte chu in atan a him tawk em tih chu an ngaihtuah lian ber a ni. An khaw nu panga te chu tui eidikna (Water Testing Kits) hman dan zirtir an ni a, an ni chuan an tui that dan leh ei leh in a tana him tawk a ni em, tihte an enfiah thin a ni. Chung nu pangate chu an khaw tui lakdan chungchanga vengtu sipai ang an ni a, tui mal far tinte chu a hnianghnar tlukin a him em tih chiantute an ni. Vawiinah zet chuan,

Contour trench constructed at the catchment area by the villagers.
Source: PHED, Mizoram

Laldini'n an khaw chanchin q sawi.
Source :PHED, Mizoram

"Chhunrawng thla chhuah hunah pawh tap atang tui a haw, kan ngaihtuah dan hi a chang ta," tin Laldina, Khualen hnam mi, a sawi. (Laldina, a resident of Khualen, said, "Even in the dry months, water fows from the tap; our worries have disappeared.")

tui harsa ve tho thingtlang khuate tan Khualen hi entawn tur an tling ta takzet. An khuain hmun hla tak en theihna thiam thil an rawih te, an tui khawl tura an inpekna te, khaw mi leh sa, a tar a zura an inpekna te hi an hlawlhtlinna kailawn vek an ni. Gravity hmanga chawm, kawlphetha ngai miah loh hi mawlmang tak ni si, mamawh tam tak chhanna lo lanna a ni a tih loh theih loh. Khualen khuate chuan hma lam hun an thlir a, a khaw mipute chuan hun rei tak daih tur an sual a ni tih an hria. An beihna hian an tan tui a pe ngawt lo va, Mizoram leh India ram puma zawm theih kalhmang tha an phochhuak tel a ni. Jal Jeevan Mission hi a va hlu tehreng em, Khualen khua tuia buai kum tluan thin kha mahni intodelh leh khaw nuamah a siam ta reng mai a ni a, kut thinga chibai buk tlak a ni hial mai. Tlang chhengchhe tak tak ten a la hual reng a, mahse tunah chuan, an inah tui a luan luh tawh miau avangin, tuipui lian tak kianga kaw din nen a lem tawh chuang lo ve.

JJM assests in Khualen Village, Mizoram.
Source: PHED, Mizoram

24. Turning Tides: Clean Drinking Water Ends a Life Filled with Hardships

Perched atop the scenic hills of Mizoram, the village of Hmawngkawn has defied the odds in its quest for a reliable water supply. With a history of chronic water shortages, the villagers long endured the gruelling task of fetching water from a distant spring. For decades, they relied on a small gravity-fed pipeline that delivered just enough to get by, but never enough to meet their daily needs. However, what seemed like an unsolvable challenge has now transformed into a remarkable story of innovation and community-driven solutions.

Hmawngkawn, home to 207 people, was initially constrained by its rugged terrain and limited natural water sources. Before the Jal Jeevan Mission (JJM) intervention, villagers were forced to walk over a kilometre daily to collect water from a single spring.

The hardships were immense, draining both time and energy. But in 2019, with the implementation of the JJM, the village leveraged its unique environment to develop a rainwater harvesting system. Mizoram's abundant rainfall provided the perfect backdrop for this change. Three large demountable tanks, each holding 3.5 lakh litters, were installed, capturing rainwater from artificial catchment areas. The harvested water flowed naturally through gravity-fed pipelines, connecting every household in the village.

Despite this progress, the dry season remained a challenge. To address it, a Solar Pumping Scheme was introduced in 2021, which tapped the Dumkawn spring source and ensured a steady supply of water even during dry periods. The solar-powered pumps guaranteed a supply of 55 litters per capita per day, while additional water treatment systems made sure the water was safe for consumption.

Crucial to the success of the Hmawngkawn Water Supply Scheme was the formation of a Water and Sanitation Committee (WATSAN). This community-led group took charge of maintaining the system, collecting small monthly fees from each household to ensure its sustainability. Five local women were trained in water quality testing, regularly monitoring the supply to ensure its safety. Alongside these efforts, the community also focused on the long-term sustainability of their water sources. In collaboration with the Young Mizo Association, they undertook conservation projects to protect the forest around their water catchments, reinforcing their water security for future generations.

Through its innovative use of rainwater, solar power, and community involvement, Hmawngkawn has turned a seemingly dire situation into a story of resilience. The village now stands as a model for how resourcefulness and unity can transform rural water management, bringing lasting benefits to even the most remote communities.

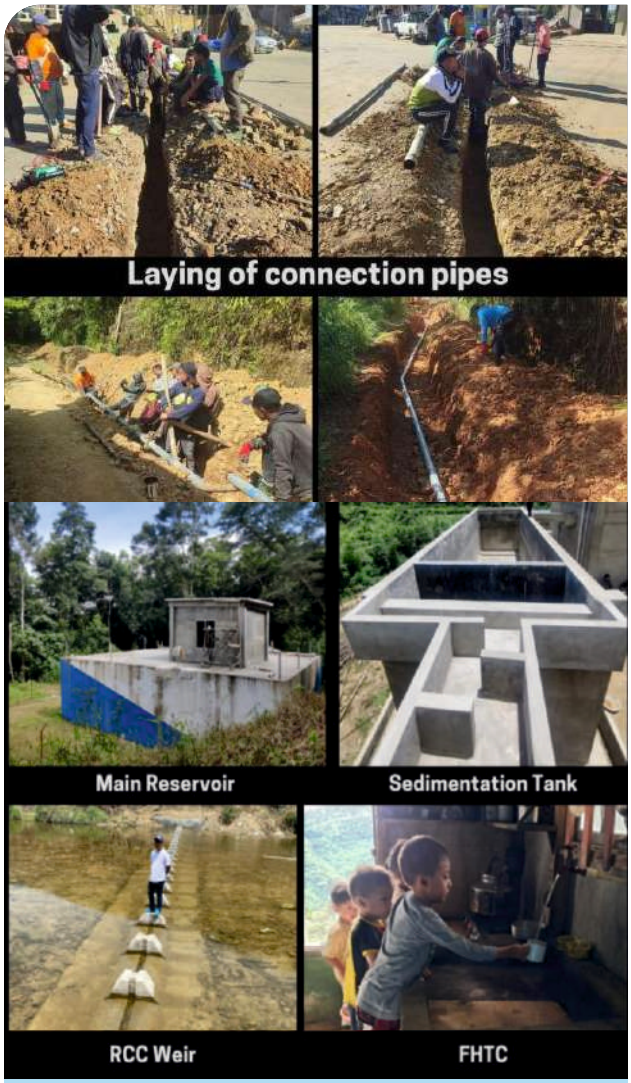

Source:PHED, Mizoram

inhmang chang chang leh turah hun a awm zual," tin Biaksiami, Hmawngkawn hmeichhia, a sawi. (Biaksiami, a woman from Hmawngkawn, said, "For years, I worried about fetching water every day, but now, with water fowing from the tap, I fnally have tme to focus on my family and work.")

24. Zangkhua a bungbu : Tui thianghlimin nun harsa a titawp

Mizoram tlang mawi tak chhipah khian, Hmawngkawn khuaten tui hnar innghahna tlak an neih loh reng thinna nun chu an sual chhuak ta. Tui tlan tur mumal nei lova awm he khaw mipuite hian hmun hla tak tak atangin tui chawiin kawla nichhuak an chhiar thin. Kum tam tak chhung chu gravity-in a chawm pipeline hmangin an duh khawp lo hle a, an mamawh a phuhruh lo nasa thin hle. Mahse, tihdanglam theih loh khawpa khawlha an ngaih chu hmalakna ropui thawnthu leh khawtlang inkhalhkhawma chinfelna chanchin a lo chang ta a ni.

Hmawngkawn, mihring 207 chenna khua hi a tirah chuan an ram chhengchhia leh tui hna neih that tawk loh avangin an buai thin hle a. Jal Jeevan Mission (JJM) an hmelhriat hma chuan, khaw mite hian kilometre khat chuang chuang kalin tui khur pakhata tui an chawi thin. Chu harsatna chu a thukin, hun leh tha pawh a heh hle. Mahse kum 2019 a lo her chhuah chuan, JJM hmalaknain, chu khua chuan ruahtui dawn khawl lamah bung thar an kai ta. Mizorama ruahtui tha em em hi he hmalakna atanga thling leh ban a ni a. Siksawi theih tuizem litre nuai 3.5 zet dawng pathum chu bun a nit a ruau mai.

Hmasawnna tam tak awm mah se, thal hun chu an tan hun khirlh la nit a reng a. Chumi chingfel tur chuan Soloar Pumping Scheme kum 2021 khan an hmelhriat tan a, chu chuan Dumkawn tuhna ringin khaw ro lai ber pawha buai lo turin hma an lak chhunzawm zel a ni. He nizung chakna hmang tui pump hian khel lovin nikhatah tui liter 55 a pump chhuak a, chubakah chuan an tui sawngbawlna hian an tui in turte a thianghlim tawk a ni tih a nemnghet bawk a ni.

He Hmawngkawn WaterSupply Scheme hlawhtlinna-a a fawng chelhtu chu Water and Sanitation Committee (WATSAN) te an ni a. Khawtlangin a din he pawl hian a kalphung enkawlah mawhphurhna a la a, pawisa tlem tlem in tina thla kipa khawnin mumal taka kal zel dan an ngaihtuah a ni. Khaw nu pangnga te chu tui a thianghlim leh thianghlim loh enchhin dan zirtir an ni a, anni chuan zing takin an tui din hmun an enfiah thin. Chung bakah chuan an kaw mipui mimir hian chhenfak awm zawk tui lak dan kalhmang nei turin ngaihtuahna an seng nasa hle a. Young Mizo Association nen tang kawpin chhuan lo awm leh tur thlenga tui an khawlsak theih nan an bul vel ramngawte humhalh turin ramngaw humhalh beihpui an thlak bawk a ni.

Ruahtui an khawl hmang te, nizung chakna hmang te, khaw mite thawhhonna te hmangin Hmawngkawn khua chuan theih loh khawpa ngaih kha hlawhtlinna thawnthu-ah an chanter ta a ni. Tunah chuan he khua hi khaw entawntlak, tanrualna hian tui hna leh tui hnar enkawlna kawngah hlawhtlinna min pe thei a ni, tih entirtu, khaw hla ber thlenga fiah taka zirtirtu an lo ni ta a ni.

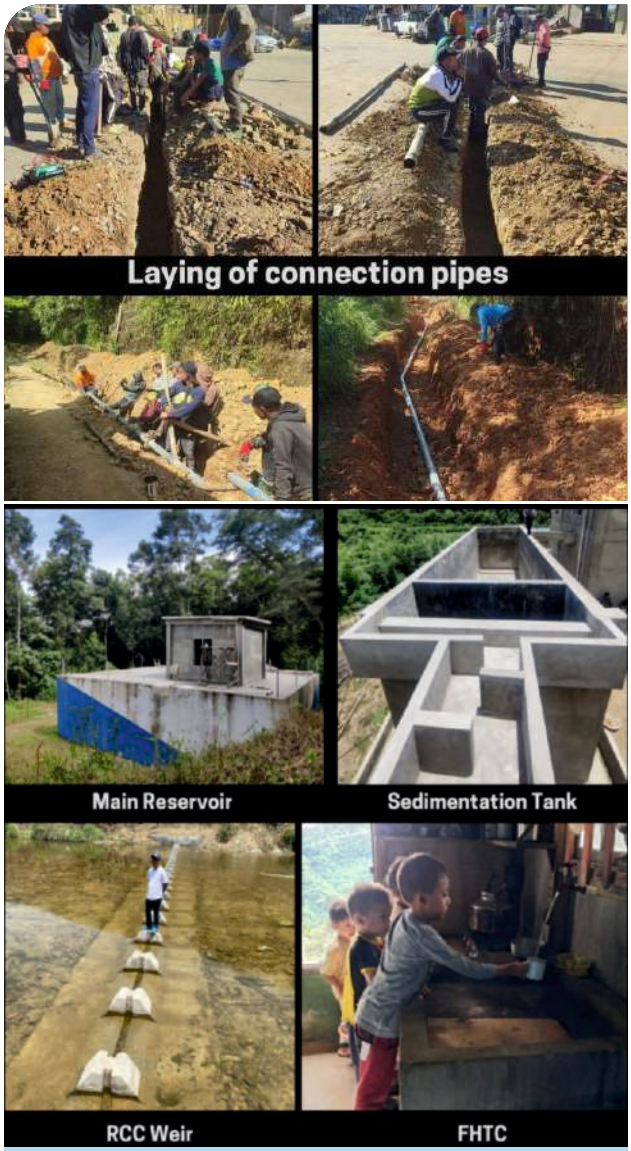

Source PHED, Mizoram

inhmang chang chang leh turah hun a awm zual," tin Biaksiami, Hmawngkawn hmeichhia, a sawi. (Biaksiami, a woman from Hmawngkawn, said, "For years, I worried about fetching water every day, but now, with water fowing from the tap, I fnally have tme to focus on my family and work.")

25. Zokhawthar's Story: Struggle for Water and Triumph of Spirit

High up in the rugged hills of Mizoram lies Zokhawthar, a village that until recently carried the weight of a forgotten struggle—one that left its people, particularly its women and children, exhausted and drained, not just of energy, but of opportunities. A life without access to clean water meant a life spent walking for hours, every day, just to gather enough water to survive. Imagine that for a moment: your children skipping school, your elderly parents going without because the nearest reliable water source was simply too far. Zokhawthar's residents have lived this reality for years.

But today, the story of Zokhawthar is one of hope. The village, home to 2,632 people and 501 households, has broken free from the shackles of water scarcity. The relentless efforts of its residents, guided by the principles of solidarity and self-reliance, turned the tide. Through the Jal Jeevan Mission, a gravity-based water system was introduced, finally bringing clean water directly into the homes of its people.

This may sound like just another project success story, but for Zokhawthar, it's a transformation of life itself. Where once women spent hours hauling water from distant springs, they now have time for their families, for learning, and for earning.

Zokhawthar's Watsan Office.
Source: PHED, Mizoram

Where children once missed school to help with water collection, they now run and play, knowing clean water is just a tap away. The once-barren kitchens now simmer with the promise of better health and hope. The question we must ask ourselves is: why did it take this long?

Fighting the Odds: The Spirit of Zokhawthar

Zokhawthar's struggle was not just about water—it was about dignity. For years, its people fought against an unjust reality, where clean water seemed like an unattainable privilege. The Public Health Engineering Department, together with local authorities and non-governmental organizations, recognized the sheer urgency of the crisis. They launched a project that harnessed the natural landscape, allowing water to flow down the hills and into the village homes without the need for energy-intensive pumps. It's a simple idea, but one that requires willpower, planning, and, most of all, people who refuse to be silent about their needs.

What sets the village apart isn't just the technical aspects of this gravity-based water system. It's the community's unwavering commitment. In a world where we often wait for top-down solutions, Zokhawthar took ownership. The Village Water and Sanitation Committee (VWSC), made up of everyday villagers, didn't just sit back—they got involved, hands-on. Through their own contributions—both physical labor and financial—the people of Zokhawthar built and now maintain a system that serves not just them, but displaced refugees from Myanmar living in the village. In an extraordinary show of humanity, Zokhawthar has shared its newfound water with those who need it most.

The heroes leading the change

We often talk about the success of infrastructure projects, but we rarely talk about the real heroes—people like the women of the Mizo Hmeichhe Insuihkhawm Pawl (MHIP), who ensured that every household not only got water but also embraced sanitation practices. Or the Young Mizo Association (YMA), whose tireless efforts in water conservation and village mobilization made sure this project didn't just start but thrived.

There is beauty in the way Zokhawthar has blended its traditions with progress. The elders, organized under Mizoram Upa Pawl (MUP), offered their wisdom on protecting water sources. Traditional Mizo values like hnatlâng—community work for the common good—were revitalized. This wasn't just a water project; it was a revival of the soul of Zokhawthar, a reminder that solutions rooted in community values are the ones that endure.

Women and Children: The Forgotten Warriors of the Water Struggle

If you ask the women of Zokhawthar what it means to have water at their doorstep, they won't talk about liters per capita or engineering feats. They'll talk about the hours they've regained, the stress that has lifted from their shoulders, and the renewed focus they can now place on their children, their education, their livelihoods. Access to clean water isn't just about survival; it's about the right to dream.

For the children, clean water means health and opportunity. It means time to learn, time to play, and a future no longer defined by the relentless task of securing a basic human right. The children of Zokhawthar are the real beneficiaries, now growing up in a world where their potential isn't stunted by a lack of water.

A Sustainable Future: Ownership and Action

One of the most powerful aspects of Zokhawthar's success is that it came from the people themselves. The VWSC, responsible for maintaining the system, ensures that every household pays Rs.200 per month for water and sanitation services. This may sound like a small amount, but it's a profound statement of ownership. The villagers aren't just recipients of aid—they are participants in their own destiny.

The committee's careful financial management means that the system is sustainable. With a bank balance of Rs. 12 lakhs, Zokhawthar has created a model where water access doesn't depend on external aid but on a community-driven system that is both fair and functional. Plans to purchase a new sanitation vehicle and expand the system prove that this village isn't just surviving; it's thriving.

Zokhawthar's journey is more than just a local success—it's a beacon of hope for countless other communities facing similar challenges. What happened here can happen elsewhere. The spirit of self-reliance, the power of collective action, and the integration of traditional values with modern infrastructure have shown that solutions to even the most daunting challenges lie within the heart of the community itself.

JJM assets in Zokhawthar village, Mizoram transforming the lives of people

Source: PHED, Mizoram

25. Zokhawthar Thawnthu : Tui Harsatna leh Hlawhtlinna tlang

Mizoram, ram chhengchhia leh kil khawr laiah khian Zokhawthar khua a awm a, chu khua chuan harsatna lian tham tak a mipuite ko-ah a nei a, a bik takin nunau te tan a harsain a khirh-in tha leh zung a heh hle a ni. Tui thianghlim tel lova nun chu hun tel lova nun tluka harsa a ni a, nitin tui mamawh zawngin an chhuak tawp mai a ni. Han mitthla chhin teh: I faten sikul kai lovin, i nu leh pa tar chak lo te te pawh bang lovin, tui hnar a hlat em avanga i chan ni se, engtin nge i ngaih ang? Chutiang chu kum tam tak chhunga Zokhawthar mi leh sa te nun dan a ni.

Mahse vawiinah chuan Zokhawthar chanchin hi beiseina min chhitsaktu a ni. He khua, mi 2632 chenna, in 501 dinna khua hian tui harsat avang an buaina te chu an hlip kiang ta. A chhunga chengte inpekna thuk tak nenm inlungrualna leh mahni inrintawkna hmangin thleng an khaikhup ta. Jal Jeevan Mission kaltlangin gravity hmang tui lakna chhawpsak a ni a, a tawpah chuan chhuntin ten an in lum ngeiah tui thianghlim an herh haw ta.

He thu hi project dang pakhat hlawhtling ta a ang mai thei a, mahse, Zokhawthar mipuite tan chuan an nun thlang danglam hlawk tu a ni. Tun hmaa nu ho, hmun hla tak taka tui chawia kal thin te khan inzirna hun leh ei zawn nan an chhungkaw tan hun tam zawk an lo pe thei ta. Tun hmaa sikul kai thluh meuha tui chawi thin naupangte kha infiama intihlimin tui chu herh haw mai thei a lo ni ta. Choka ro tak khan choka hrisel leh mawm zawk a lo ni a. Zawhna kan inzawh tur chu : Chu chuan engtia rei nge a duh? tih hi a ni.

HARSATNA BEIHLET : ZOKHAWTHAR MIPUITE BEIHNA

Zokhawthar mipuite beihna hi tui chungchang chauh a ni lova, zahawmna chungchang a ni. Kum tam tak chhung, mipuite chu bual atin an awm a, tui thianghlim leh hniang hnar chu vana rah ang maiah an ngai thin. Ti chuan Public Health Engineering Department leh tualchhung roreltute bakah tlawmngai pawlte inzawm khawm chuan chu harsatna chu chinfel vat a ngaihzia an hre chhuak ta a. Project kalpuiin an ram leilui hmang tangkaiin tlang atangin an khua in tinah chuan energy-intensive pump hmangin tui an luan luhtir ta.

Zokhawthar's Watsan Office.
Source: PHED, Mizoram

Ngaihtuahna ho te a ni a, mahse beihna, ruahhmanna leh a pawimawh ber, mipuite au aw tel lo chuan hlawhtling thei a ni lo. He khua, khaw dangte aia an danglam em emna chu gravity hmanga tui an lakna chung chang a ni hauh lo. Chawl lova khaw mipuite an thawh tlanna zawk hi a ni. He khawvel, harsatna sukiang tura thuneitute kan melh thupna-ah hian Zokhawthar chuan ke an pen hmiah mai a ni. Village Water and Sanitation Committe (VWSC), khaw mipui tinin inlungrual taka an din chu a thu hle hle lo, an inrawlh a, kut an thawh a ni. An inpekna – thahrui leh sum leh pai te hmangin an mahni tan chauh ni lo Myanmar ral tlante thlengin chawlhna nuam an lo siam ta a ni. An mihring thatna lantirin, an tui hnar hmuh chhuah chuan a mawhte dang ro an hnawn ta zel mai bawk a ni.

Danglamna Sulsutute

Hmalakna hlawhtling hi kan sawi fo thin a, mahse a phena hna thawk tak tak tu – Hmeichhe pawl, Mizo Hmeichhe Insuihkhawm Pawl (MHIP) tui dawn chuah ni lo, faina leh hriselna kawnga theih tawp chhuahtute. A nih loh pawhin Young Mizo Association (YMA) tuihna humhalh leh khawtlang enkawl kawnga theih tawp chhuahtute hian sawi lan an hlawh lo fo. Heng mite inpekna hi a chhuanawm a, fak an phu hle.

Zokhawthar nun mawi tak mai chu an tihdan phung an vawng tel tlat ni a ni a. Upa lam in tel khawm, Mizoram Upa Pawl (MUP) te hian an finna te thawhchhuakin tui hna humhalh kawngah a kila lung pawimawh a ni. Mizo nuna pawimawh leh hlu tak 'Hnatlang' te pawh koh zel a ni. Hei hi tui chungchang hmalakna mai a ni lo; Zokhawthar te nu mawi tarlanna, hlawhtlinna hi khawtlang nun leh inkaihhruina tha-ah a innghat a ni tih pho chhuaktu a ni.

Hmeichhia leh Naupang : Sawi Hmaih Hlawh Fote

Zokhaw thar nute hi an kawt kaia tui hlutzia i zawt a nih chuan a litre zawngin emaw a kalhmang lam emaw an sawi hauh lo vang le. Hun tam zawk an neih tak zia te, kan dara phurrit chawi thlak a nih zia te, an fate leh an zirna an ngaihsak hman takzia te an lo hrilh ngei ang che u. Tui thianghlim neih hi nun khawchhuahna chauh a ni lo a, suangtuahna puitlin theihna a ni.

Naupangte tan chuan, tui thianghlim hi hriselna leh hmachhawp a ni. Zirna hun petu a ni a, infiamna hun a siamsak a, mihring dikna leh chanvo rahbehna ata zalenna hmaruai a ni. Zokhawthar naupangte hi a hlawhna chhawr bawk bertute an ni a, he khawvelah hian an theihna te tui harsat vanga hmeh mihsak an ni tawh ngai lo vang.

Hmalam hun Phurawm: Neitu Nihna leh Hmalakna

Zokhawthar hlawhtlinna a lung pawimawh em em pakhat chu mipuite atanga a intan hi a ni. VWSC ten thla tinin chhung tinah Rs. 200 theuh tui leh thianghlimna kawnga hman atan an khawn thin a. Cheng tam niin a lang lo mai thei. Mahse, chu chu neitu chanchanga an inngaihzia tilangtu a ni. A dawngtu mai ni lovin a petuah pawh an tang theuh a ni.

An comittee in sum leh pai fel taka a vawng thin hian an kalphung nghehzia a tarlang a. Cheng nuai 12 bank-a blance nei thei Zokhawthar hian pawn lam atanga puihna nghak ngawt lovin khawchhung a mipui chakna rining felfai tal leh mumal takin a inenkawl theih a ni tih a tilang chiang hle. Bawlhhlawh paihna motor lei an tum te leh hmasawn zel an tumna hian chawl mai lovin hma an la zel dawn tih a tilang.

Zokhawthar zinkawng hi khawtual hlawhtlinna mai a ni lova, chhiarsen loh khaw tam tak hetiang harsana hmachhawn mekte tan chona petu a ni. Heta an tih theih chu khawiah pawh tih ve theih a ni. Mahni inrin tlatna te, thawhhona te, tunlai hmanrua leh hmanlai nunphung suihzawm thiamna te hian kan khawtlanga buaina te chinfelna hi keimahni ngei thinlungah a chhanna a awm a ni tih mih hrilh chiang hle a ni.

JJM assets in Zokhawthar village, Mizoram transforming the lives of people

Source: PHED, Mizoram

Sikkim

26. From Struggle to Ease, life-changing experience in Deythang village, Sikkim. All thanks to the Jal Jeevan Mission

Perched amidst the rugged terrain of Kaluk Block, Deythang is a village carved from the dense green hills of Soreng District, where narrow winding paths and steep slopes make daily life a challenge. The village is covered in mist during the early hours, and its people have long been accustomed to the challenging landscape. Here, moving from place-to-place demands resilience, as the villagers navigate treacherous paths cut through the undulating hills.For Harka Maya Subba, a 74 year old elderly woman, this landscape dictated the rhythm of her life. Every morning, before the sun could pierce through the fog, she would rise to begin her arduous day. The mountains, though majestic, only made her task harder. With pots balanced on her weary shoulders, she would descend the steep, uneven trails to fetch water from a distant stream. The return was gruelling, as each step uphill seemed heavier than the last, her body strained under the weight of time and the necessity of water.

Despite her health and the weather, she couldn't complain and had to collect the water. After cooking for her family, she would head to her vegetable garden to gather produce to sell on the highway, her main source of income. Another challenge she faced was using makeshift latrines in the open, which were unhygienic and dangerous at night.

Yet, like the first rays of dawn after a long night, change arrived in her village. The Jal Jeevan Mission, a beacon of hope and progress, extended its hand to her door. No longer must she walk to the stream—clear, pure water now flows freely from the tap in her very home. This simple act, once a daily ordeal, has become a thing of the past. She now wakes to the luxury of running water, her days of drudgery behind her. With the water came dignity, a proper toilet was constructed near her home, equipped with running water. Gone were the days of fear and discomfort. Now, she steps out into the night without hesitation, assured of her safety and hygiene. Her village, once bound by the constraints of water scarcity and poor sanitation, now stands proudly as an Open Defecation Free (ODF) and Har Ghar Jal Certified village.

Subba's story is not hers alone. Across Deythang, families have been liberated from the burden of water collection, their lives transformed by the simple blessing of water at their doorsteps. The village, now flourishing under the care of the Jal Jeevan Mission, has found new life. The once endless trek for water is now but a memory, a whispered tale of times gone by.

On the 26th of September, 2023, a special Gram Sabha was held, presided over by the Honorable Panchayat President. The villagers gathered—old and young alike—along with officials from the Block Administration Centre and members of the Implementing Support Agency. Together, they declared their village as Har Ghar Jal Certified, a moment of pride and celebration.In this transformation, the village has found not just water but a new chapter, where hardship has turned to hope, and the relentless labor of survival has become the ease of living. The future now flows as freely as the water that graces every home, a testament to what can be achieved when the power of community and progress meet.

Storage tank constructed under the Jal Jeevan Mission
Source: PHED, Sikkim

Harka Maya Subba, a 74-year-old elderly woman pleased to be relieved from the drudgery of fetching water from distant sources.

Source: PHED,Sikkim

"Dinko surya udhne agadi nai uthnu parthyo, pahad chhada-jharnako dhunma tui lyauna jhan garho hunthyo. Ghaito kandha ma rakhera tyo oralo ra ukalo ko baato kati choti katnu parcha. Tyo dukh samjhera ahileko tapko shital paani le mero jeevan sajilo banai diyo. Aba ma mero pariwar ra afno bagan ko kaam ma dherai samay dine sakchhu," Harka Maya Subba le bhabuk hunda bhanin

("Before the sun even rose, I had to wake up, and the steep mountain trails made fetching water even harder. Carrying pots on my shoulders, the countless trips down and up the path were exhausting. Remembering those struggles, the cool water from the tap now feels like a blessing that has made my life easier. Now, I can dedicate more time to my family and my garden," said Harka Maya Subba, her voice filled with emotion.)

26. सङ्घर्षदेखि सहजतासम्म, सिक्किमको देथाङ गाउँमा जीवन परिवर्तन गर्ने अनुभव। सबै जल जीवन मिशनलाई धन्यवाद

कलुक ब्लकको असहज भूभागको बीचमा बसेको देथाड सोरेङ जिल्लाको घना हरियो पहाड़ले बनेको एउटा गाउँ हो, जहाँ साँघुरो घुमाउरो बाटो र ठाड़ो ढलानले दैनिक जीवनलाई चुनौती दिन्छ। बिहानको समयमा I गाउँ कुहिरोले ढाकिएको हुन्छ अनि यहाँका मानिसहरु लामो समयदेखि चुनौतीपूर्ण परिदृश्यमा अभ्यस्त छन्। यहाँ एक ठाउँबाट अर्को ठाउँमा जानका लागि लचिलोपनको आवश्यकता छ, किनकि गाउँलेहरुले अग्ला अग्ला पहाडहरु हुँदै जोखिमपूर्ण बाटो भएर हिँड्नुपर्ने हुन्छ। 74 वर्षीया वृद्धा हर्कमाया सुब्बाको लागि यो परिदृश्यले उनको जीवनको लय तय गर्दछ। हरेक बिहान, घाम कुहिरोलाई चिरेर निस्किनअघि, उनी आफ्नो कठिन दिन शुरु गर्नका लागि उठ्छन्। पहाड, यद्यपि सुन्दर भए पनि उनको कामलाई झन् कठिन बनाउँछ। आफ्नो थाकेको काँधमा बर्तनहरुलाई सन्तुलित बनाएर उनी टाढाको एउटा धाराबाट पानी ल्याउन ठाडो, असमान बाटाहरूबाट तल ओलिन्छिन्। फर्किनु कठिन थियो, किनभने उकालो चढ्दा हरेक कदम पछिल्लो कदमभन्दा बारी लागिरहेको थियो, उनको शरीर समयको भार र पानीको आवश्यकतामुनि थाकेको थियो। तरै पनि, एक लामो रातपछि बिहानको पहिलो किरण जस्तै उनको गाउँमा परिवर्तन आयो। आशा र प्रगतिको किरण, जल जीवन मिशनले आफ्नो हात उनको ढोकासम्म बढ़ायो। अब उनले खोलासम्म जानुपर्ने आवश्यकता छैन सफा, शुद्ध पानी अब उनको घरको धाराबाट स्वतन्त्र रूपमा बग्छ। यो सरल कार्य, जुन कुनै समय दैनिक कष्ट थियो, त्यो अहिले अतीतको कुरा भएको छ। उनी अब बग्दो पानीको विलासितामा ब्यूँझन्छिन्, उनको कठिन परिश्रमको दिन पछाड़ि डर र समस्याका दिन बितेर गएका छन्। अहिले उनी बिना कुनै हिचकिचाहट राति बाहिर निस्किन्छिन्, उनलाई आफ्नो सुरक्षा र स्वच्छतामाथि I विश्वास छ। कुनै समय उनको गाउँ पानीको अभाव र खराब स्वच्छताको बाधाले बाँधिएको थियो, अहिले खुल्लामा शौचमुक्त (ओडीएफ) र हर घर जल प्रमाणित गाउँको रूपमा गर्वका साथ खड़ा छ।

सुब्बाको कथा एक्लै उनको मात्र होइन। देथाङमा, परिवारहरूले पानी सड़ाहको बोझबाट मुक्ति पाएका छन्, उनीहरुको घरको ढोकामा पानीको साधारण आशीर्वादले उनीहरुको जीवन परिवर्तन भएको छ। जल जीवन मिशनको रेखदेखमा अहिले गाउँ फस्टाएको छ, नयाँ जीवन पाएको छ। कुनै समयको पानीको लागि अन्तहीन यात्रा अहिले सम्झना बनेको छ, बितेको समयको परीकथा बनेको छ।

26 सेप्टेम्बर, 2023 मा माननीय पञ्चायत अध्यक्षको अध्यक्षतामा एक विशेष ग्राम सभा आयोजन गरियो। ब्लक प्रशासन केन्द्रका अधिकारी र कार्यान्वयन सहायता एजेन्सीका सदस्यहरुका साथसाथै बुढ़ा र युवा सबै गाउँलेहरु एकत्रित भए। एकसाथ उनीहरूले आफ्नो गाउँलाई हर घर जल प्रमाणित घोषित गरे, जुन गर्व र उत्सवको क्षण थियो। यो परिवर्तनमा गाउँलाई पानी मात्र होइन, तर यसको मूल्य पनि मिलिरहेको छ एक नयाँ अध्याय, जहाँ कठिनाइ आशामा परिणत भएको छ, र 74 वर्षीया वृद्धा हर्कमाया सुब्बा, जीवित रहनका लागि अथक परिश्रम गर्ने महिलाको सहजता बनेको छ, जो टाढाबाट पानी ल्याउने थकानबाट मुक्त भएर प्रसन्न छिन्। भविष्य अब त्यति नै स्वतन्त्रताका साथ बहन्छ, जति स्रोतको पानी।

हर्का माया सुभा, ७४ वर्षीया वृद्धा, जसले टाढा स्थानहरूबाट पानी ल्याउने कठिनाइबाट मुक्ति पाएकोमा खुसी छन्।

स्रोत: पीएचईडी , सिक्किम

सूर्य उदाउँनु भन्दा पहिला नै उठ्नुपर्थ्यो, र ती ठाडा पहाडी बाटाहरूले पानी ल्याउन झन् गाह्रो बनाउँथ्यो। काँधमा घैटो राखेर त्यो ओरालो र उकालो बाटो कति पटक काट्नुपथ्र्यो। ती दुःख सम्झँदा, अहिलेको धाराको चिसो पानीले मेरो जीवन सजिलो बनाइदिएको छ। अब, म मेरो परिवार र मेरो बगैंचाको काममा धेरै समय दिन सक्छु," हर्का माया सुभाले भावुक हुँदै भनिन्।

Uttar Pradesh

27. A Tharu Woman's Triumph: Chaiti Revitalizes 'Bankati'

Chaiti, a Tharu woman from Majra Bankati in Bhachakahi village, has brought hope and change in the lives of her community. Born in one of the most remote and underdeveloped areas of the district, Chaiti faced numerous hardships, especially after her early marriage, when she moved to her in-laws' home in Bankati. Despite these difficulties, Chaiti emerged as a pillar of strength, not just for her family but for the entire community.

Bankati is a small village in the tarai region along the Indo Nepal border, in Shravasti, Uttar Pradesh. The village is home to the Tharu tribe, indigenous to this region with 765 individuals and 116 households. The Tharu people, recognized as a Scheduled Tribe in both India and Nepal's Terai region, face many challenges and are among the most marginalized communities, dealing with significant social and economic hardships. Agriculture remains the primary source of livelihood for the village people, who hold onto their unique cultural heritage, traditions, and simple way of life.

Life in Bankati was characterized by limited access to basic amenities, with most families living in temporary "kaccha" homes made of mud and thatch. The primary source of income for the villagers is farming and daily wage agricultural work. One of the most pressing issues in the village is the lack of clean drinking water. For years, the residents relied on shallow handpumps, including only 4 India Mark II pumps, to meet their water needs. Unfortunately, the water was untreated, leading to frequent outbreaks of waterborne diseases such as dysentery, cholera, typhoid, and jaundice, which particularly affected the children.

When the Jal Jeevan Mission initiated a water supply system in Bankati through its Scheme Bankati Bhachkahi, Chaiti saw it as an opportunity for change. She actively participated in community meetings and planning sessions, demonstrating remarkable enthusiasm and commitment. Recognizing her leadership potential, the village leadership selected Chaiti to become the village's first female pump operator—a role traditionally held by men.

Chaiti initially faced scepticism, as the role of a pump operator required technical skills traditionally seen as beyond the scope of women's work in the village.

However, with support from her husband, villagers and training provided through the Jal Jeevan Mission (JJM) initiative, she quickly mastered the skills needed to operate and maintain the village's water supply system.

Her appointment as the pump operator not only ensured the efficient functioning of the newly installed system but also brought a sense of pride and empowerment to the women of Bankati.

Chaiti's role extends beyond managing the water system. She actively educates her fellow villagers about the importance of safe drinking

Storage tank constructed under the Jal Jeevan Mission
Source: SWSM, Uttar Pradesh

"Pehle paani ke liye itni door jaana padta tha ki ghar ke kaam aur bacchon ka dhyan nahi de pati thi," Chaiti yaad karti hain. *"Haath ke pump ka paani ganda hota tha, jis se bacche aksar beemaar padte the. Par ab, nalkoop lagne ke baad, sab kuch badal gaya hai. Ab ghar ka paani ghar par milta hai, bacche school jaate hain, aur hum apne kaam aur pariwar ka achhe se dhyan de pa rahe hain."*

("Earlier, we had to walk so far for water that I couldn't manage household chores or take care of my children," Chaiti recalls. *"The water from handpumps was contaminated, and the children often fell ill. But now, with tap water at home, everything has changed. We have clean water at our doorstep, the children go to school, and I can focus on my work and family better.")*

water, sanitation, and hygiene practices. Before the Jal Jeevan Mission, women like Chaiti spent hours each day fetching water. Now, with Chaiti managing the village's water supply system, the time spent on this task has been drastically reduced, allowing women to engage in other activities such as education and income generation.

Reflecting on her journey, Chaiti said, "Fetching water every day was exhausting and risky, but I knew we needed clean water for our children's health. When Jal Jeevan Mission came to our village, I wanted to be part of the solution. It wasn't just about water—it was about building a better future for our entire village." Chaiti's story is one of empowerment, resilience, and community leadership. By stepping up as a female pump operator from a tribal community, she has transformed not only her own life but the lives of many others in her village.

From a health perspective, the impact is remarkable. The incidence of water-borne diseases has decreased substantially, from 42,546 cases in 2022 to 38,026 cases in 2023 and 7,638 cases in 2024 (till July). This decline has resulted in fewer deaths, dropping from 25 in 2022 to 11 in 2023 and 5 till July 2024 (Source: Communicable Diseases section Department of Health, Uttar Pradesh). Moreover, there were no deaths reported due to Japanese Encephalitis and Acute Encephalitis syndrome in Gorakhpur Division.

Chaiti's daughter Roopa deliberating the importance of water Quality Testing to her fellow villagers.
Source: SWSM, Uttar Pradesh

UP Health department data

Outbreak of Water Borne Diseases		
(As received from Health Department - Sanchari Rog Vibhag)		
Year	**Total Cases**	**Total Deaths**
2019	443480	17
*2020 (covid effected year)	60345	0
* 2021 (covid effected year)	28449	13
*2022 (covid effected year)	42546	25
2023	38026	11
2024	7638	5

27. एक थारू महिला की विजयगाथा: चैती ने बदला 'बंकटी' का चेहरा

मजरा बंकटी, भचखाही गांव की थारू महिला चैती ने अपनी समुदाय के जीवन में आशा और बदलाव की किरण जगाई है। जिला के सबसे दूरस्थ और अविकसित क्षेत्रों में जन्मी चैती ने अनेक कठिनाइयों का सामना किया, खासकर जब उनकी कम उम्र में शादी हो गई और वे बंकटी स्थित अपने ससुराल चली गईं। इन चुनौतियों के बावजूद, चैती ने न केवल अपने परिवार बल्कि पूरे समुदाय के लिए एक मजबूत स्तंभ के रूप में अपनी पहचान बनाई।

बंकटी का परिचय

उत्तर प्रदेश के श्रावस्ती जिले में भारत-नेपाल सीमा के तराई क्षेत्र में स्थित बंकटी गांव थारू जनजाति का निवास स्थान है। यहां 765 लोग और 116 परिवार बसे हैं। थारू लोग भारत और नेपाल के तराई क्षेत्र में अनुसूचित जनजाति के रूप में पहचाने जाते हैं। ये लोग अनेक सामाजिक और आर्थिक समस्याओं से जूझते हुए देश के सबसे हाशिये पर मौजूद समुदायों में से एक हैं। खेती यहां के लोगों की आजीविका का मुख्य साधन है, और वे अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक धरोहर, परंपराओं और सादगीभरे जीवन को संजोए हुए हैं। गांव में मूलभूत सुविधाओं की भारी कमी थी। अधिकांश परिवार मिट्टी और घास-फूस से बने कच्चे घरों में रहते थे। यहां की आय का प्रमुख स्रोत खेती और दैनिक मजदूरी थी। सबसे बड़ी समस्या साफ पेयजल की अनुपलब्धता थी। वर्षों से ग्रामीण शैलो हैंडपंपों, जिनमें केवल चार इंडिया मार्क II पंप शामिल थे, पर निर्भर थे। दूषित पानी के कारण डायरिया, हैजा, टायफाइड और पीलिया जैसी जलजनित बीमारियां अक्सर फैलती थीं, जो बच्चों को विशेष रूप से प्रभावित करती थीं।

जल जीवन मिशन से बदलाव की शुरुआत

जल जीवन मिशन के तहत बंकटी भचखाही योजना के माध्यम से गांव में जल आपूर्ति प्रणाली शुरू की गई। चैती ने इसे बदलाव का अवसर माना और सामुदायिक बैठकों और योजना सत्रों में सक्रिय भाग लिया। उनकी नेतृत्व क्षमता को पहचानते हुए, गांव के नेतृत्व ने उन्हें बंकटी की पहली महिला पंप ऑपरेटर के रूप में नियुक्त किया, जो परंपरागत रूप से पुरुषों का काम माना जाता था।

नई भूमिका में चैती का संघर्ष और सफलता

शुरुआत में चैती को संदेह का सामना करना पड़ा क्योंकि पंप ऑपरेटर का काम तकनीकी कुशलता की मांग करता था, जिसे महिलाओं के दायरे से बाहर माना जाता था। लेकिन अपने पति, ग्रामीणों और जल जीवन मिशन द्वारा प्रदान किए गए प्रशिक्षण के समर्थन से उन्होंने इन तकनीकी कौशलों को शीघ्रता से सीखा। पंप ऑपरेटर के रूप में उनकी नियुक्ति ने न केवल नई प्रणाली को प्रभावी ढंग से संचालित करने में मदद की बल्कि बंकटी की महिलाओं को गौरव और सशक्तिकरण का अनुभव भी कराया।

समुदाय में बदलाव

चैती का काम सिर्फ जल प्रणाली का प्रबंधन तक सीमित नहीं है। वे ग्रामीणों को सुरक्षित पेयजल, स्वच्छता और स्वास्थ्य संबंधी आदतों के महत्व के बारे में भी शिक्षित करती हैं। जल जीवन मिशन से पहले, महिलाएं पानी लाने में प्रतिदिन घंटों बर्बाद करती थीं। अब, चैती की देखरेख में जल आपूर्ति प्रणाली के चलते यह समय बच गया है, जिससे महिलाएं शिक्षा और आय-सृजन जैसी गतिविधियों में लगने लगी हैं।

चैती का दृष्टिकोण

अपनी यात्रा के बारे में चैती कहती हैं, "हर दिन पानी लाना थकाऊ और जोखिम भरा था, लेकिन मुझे पता था कि हमारे बच्चों के स्वास्थ्य के लिए स्वच्छ पानी जरूरी है। जब जल जीवन मिशन हमारे गांव आया, तो मैं इसका हिस्सा बनना चाहती थी। यह केवल पानी की बात नहीं थी, यह पूरे गांव के बेहतर भविष्य का निर्माण करने के बारे में था।" चैती की कहानी सशक्तिकरण, दृढ़ता और सामुदायिक नेतृत्व की कहानी है। एक जनजातीय समुदाय से महिला पंप ऑपरेटर बनकर उन्होंने न केवल अपनी बल्कि अपने गांव के कई लोगों की जिंदगी बदल दी है।

जल जीवन मिशन के तहत निर्मित भंडारण टैंक

स्रोत: एसडब्लूएसएम, उत्तर प्रदेश

"पहले पानी के लिए इतनी दूर जाना पड़ता था कि मैं घर के काम और बच्चों का ध्यान नहीं रख पाती थी," चैतू याद करती हैं। "हाथ के पंप का पानी गंदा होता था, जिससे बच्चे अक्सर बीमार पड़ जाते थे। लेकिन अब, घर पर नल का पानी मिलने से सब कुछ बदल गया है। अब साफ पानी घर पर मिलता है, बच्चे स्कूल जाते हैं, और मैं अपने काम और परिवार का बेहतर ध्यान रख पा रही हूँ।"

स्वास्थ्य विभाग के आंकड़े

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से इसका प्रभाव आश्चर्यजनक है। जलजनित बीमारियों की घटनाओं में भारी कमी आई है। 2022 में 42,546 मामलों की तुलना में 2023 में यह संख्या घटकर 38,026 और 2024 (जुलाई तक) में 7,638 रह गई। मौतों की संख्या भी 2022 में 25 से घटकर 2023 में 11 और 2024 में (जुलाई तक) केवल 5 रह गई। गोरखपुर मंडल में जापानी इंसेफेलाइटिस और तीव्र इंसेफेलाइटिस सिंड्रोम से कोई मौत दर्ज नहीं हुई। आंकड़े जेई और एईएस मामलों में कमी का संकेत देते हैं।

चैती की बेटी रूपा अपने साथी ग्रामीणों को जल गुणवत्ता परीक्षण के महत्व पर चर्चा कर रही है।

स्रोत: एसडब्ल्यूएसएम, उत्तर प्रदेश

28. Reining in Migration: A New Hope to Balabehat

Pradeep Kushwaha was just eight when he left Lalitpur's Balabehat village. Two decades later, he is now back in the same village. If water (woes) forced his migration, it also stirred the reverse migration process as Jal Jeevan Mission has ensured potable water at the doorstep of the villagers here.

Pradeep admits that Jal Jeevan Mission has helped them reconnect with their roots as water scarcity has given way to potable water accessibility in hitherto water starved regions of Bundelkhand.

Back in his village, Pradeep, now 28, is enveloped by childhood memories. His eyes reflect his pain of being separated from his village, as he recalls how water woes forced him to leave his village home, his grandparents and friends.

Balabehat, sharing his story of relocating to Indore due to lack of water earlier. But because of JJM he gets to live with this family now.
Source: SWSM, Uttar Pradesh

"Paani ki kami ke chalte hume gaon chhod ke Indore jaana pada. Wahan mazdoori karke pet palte the, par zindagi bilkul bhi asaan nahi thi. Din bhar kaam karte aur kisi tarah roti-rozi ka jugaad hota tha. Dada-dadi aur doston ki yaad bahut satati thi," Pradeep, 28 saal ke, ne bataya.

"Abhi bhi yaad hai mujhe, jab mere dada-dadi aur maa-baap din ke 6 kilometre chal ke paani laate the. Do matka sar pe rakh ke kacchi raah pe chalna padta tha, aur kai baar gir ke chot lag jaati thi," Pramod ne yaad karte hue kaha. Aage woh kehte hain, "Uttar Pradesh ke Jal Jeevan . Ab gaon walon ko nal se saf paani mil raha hai. Paani ne humko wapas bulaya hai aur ab yeh sab mere liye ek sapna jaise lagta hai. Main yahan kheti aur mazdoori karunga, par ab apne gaon ko kabhi nahi chhodunga," Pramod ne kaha. Unke bade bhai, Meharban Kushwaha ne kaha, "Hamare gaon ke 40% se zyada log paani ki kami ke kaaran shehron mein bas gaye the. Lekin ab jab nal ka paani milne ki baat chal rahi hai, to kai log wapas aane ke liye utsuk hain. Asal mein, lagbhag 10% log to wapas aa bhi gaye hain."Mission humare liye ek vardaan ban ke aaya hai."

("Due to water scarcity, we had to leave our village and move to Indore. There, we survived by working as labourers, but life was far from easy. We toiled all day and barely managed to make ends meet. I missed my grandparents and friends terribly," shared 28-year-old Pradeep. "I still remember the days when my grandparents and parents walked 6 kilometres daily to fetch water. They carried two pots on their heads and treaded along rugged paths,

"Due to water scarcity, we relocated to Indore where also life wasn't easy as we somehow made two ends meet. I missed my grandparents and friends terribly," he shared.

He admits he was among those kids in Balabehat, whose childhood dreams were shattered due to lack of access to clean drinking water though Uttar Pradesh's Jal Jeevan Mission has brought about a remarkable transformation by ensuring availability of potable water to Balabehat village in Lalitpur's rough terrain; a development that has now led to reverse migration.

"I still remember the days when my grandparents and parents would walk 6 kilometres to fetch water, balancing 2 pots on their heads while walking along rugged paths. They'd often get injured," says Pramod and adds that Uttar Pradesh's Jal Jeevan Mission has been like a "blessing" for them.

"Now, villagers receive clean drinking water through taps. Water has brought us back too and now it all feels like a dream come true for me. I will engage in farming and labour here but won't leave my village again," he says.

Pramod's elder brother, Meharban Kushwaha, says, "Over 40% people of our village had migrated due to water scarcity. But now that the news of tap water availability is spreading, many are eager to return. In fact about 10% of such people have already returned.

often getting injured," recalled Pramod. He added, "The Jal Jeevan Mission in Uttar Pradesh has been like a blessing for us." Now, villagers receive clean drinking water through taps. Water has brought us back, and it all feels like a dream come true for me. I will now engage in farming and labor here but will never leave my village again," Pramod said. His elder brother, Meharban Kushwaha, added, "More than 40% of our village had migrated due to water scarcity. But now, with the news of tap water availability spreading, many are eager to return. In fact, around 10% of them have already come back.")

Source: SWSM, Uttar Pradesh

Suman, an elderly woman in Balabehat, says: “all my children left the village due to water scarcity. They migrated to Bhopal, Indore and Delhi. Now with water at doorstep all my sons, daughters-in-law and their children are happy and seeing our family live together has made us so happy that we feel that we would now live longer for 10 more years.”

28. प्रवास पर लगाम: बलबेहट में नई उम्मीद

प्रदीप कुशवाहा केवल आठ साल के थे जब उन्हें उत्तर प्रदेश के ललितपुर जिले के बलबेहट गांव को छोड़ना पड़ा था। दो दशक बाद, अब वह उसी गांव में लौट आए हैं। जिस पानी की कमी ने उन्हें गांव छोड़ने पर मजबूर किया था, वही अब जल जीवन मिशन के तहत गांववासियों के दरवाजे तक स्वच्छ पेयजल पहुंचाने के कारण उनका वापस आना संभव कर पाई है। प्रदीप मानते हैं कि जल जीवन मिशन ने उन्हें उनकी जड़ों से फिर से जोड़ने में मदद की है। पानी की कमी से जूझ रहे बुंदेलखंड के इस इलाके में अब स्वच्छ पेयजल उपलब्ध हो गया है। अपने गांव में लौटकर, 28 वर्षीय प्रदीप अपने बचपन की यादों में खो जाते हैं। उनकी आंखों में उस दर्द की झलक है जो गांव, दादा-दादी और दोस्तों से दूर होने के कारण हुआ था। वह बताते हैं, "पानी की कमी के कारण हमें इंदौर जाना पड़ा। वहां भी जीवन आसान नहीं था। किसी तरह दो वक्त की रोटी का इंतजाम होता था। मैं अपने दादा-दादी और दोस्तों को बहुत याद करता था।" प्रदीप स्वीकार करते हैं कि वह उन बच्चों में से एक थे, जिनके बचपन के सपने स्वच्छ पेयजल की अनुपलब्धता के कारण टूट गए। लेकिन उत्तर प्रदेश के जल जीवन मिशन ने बलबेहट गांव में अभूतपूर्व बदलाव लाया है। अब यहां नलों से स्वच्छ पानी मिलता है, जिसने गांववासियों को दोबारा अपने घरों की ओर खींचा है। वह कहते हैं, "मुझे आज भी याद है जब मेरे दादा-दादी और माता-पिता 6 किलोमीटर पैदल चलकर सिर पर दो घड़े लेकर पथरीले रास्तों पानी लाते थे।" प्रदीप इसे "आशीर्वाद" मानते हुए कहते हैं, "अब गांव वालों को नलों से स्वच्छ पेयजल मिल रहा है। पानी ने हमें वापस लाने का काम किया है। यह मेरे लिए किसी सपने के सच होने जैसा है। अब मैं यहां खेती और मजदूरी करूंगा, लेकिन अपना गांव कभी नहीं छोड़ूंगा।" प्रदीप के बड़े भाई मेहरबान कुशवाहा कहते हैं, "हमारे गांव के करीब 40% लोग पानी की कमी के कारण पलायन कर गए थे। लेकिन अब, जब गांव में नलों से पानी मिलने की खबर फैल रही है, तो लोग वापस लौटने के लिए उत्सुक हैं। वास्तव में, लगभग 10% लोग पहले ही वापस आ चुके हैं।" यह कहानी सिर्फबलबेहट की नहीं है, बल्कि यह उस बदलाव की तस्वीर पेश करती है, जो जल जीवन मिशन ने ग्रामीण भारत के जीवन में लाया है। बलबेहट अब न केवल पानी से, बल्कि उम्मीद और एक नई जिंदगी से भी भर गया है।

बालाबेहट, पहले पानी की कमी के कारण इंदौर स्थानांतरित होने की अपनी कहानी साझा कर रहे हैं। लेकिन जेजेएम की वजह से अब उसे इस परिवार के साथ रहने का मौका मिलता है।

स्रोत: एसडब्ल्यूएसएम, उत्तर प्रदेश

"पानी की कमी के चलते हमें अपना गाँव छोड़कर इंदौर जाना पड़ा। वहाँ मजदूरी करके पेट पालते थे, लेकिन ज़िंदगी बिल्कुल भी आसान नहीं थी। दिनभर काम करते और किसी तरह रोटी-रोज़ी का जुगाड़ होता था। दादा-दादी और दोस्तों की बहुत याद आती थी," 28 साल के प्रदीप ने बताया। "मुझे आज भी याद है, जब मेरे दादा-दादी और माँ-बाप रोज़ाना 6 किलोमीटर चलकर पानी लाते थे। सिर पर दो मटके रखकर कच्चे रास्तों पर चलना पड़ता था, और कई बार गिरकर चोट भी लग जाती थी," प्रमोद ने याद करते हुए कहा। आगे उन्होंने बताया, "उत्तर प्रदेश के जल जीवन मिशन ने हमारे लिए जैसे वरदान का काम किया है। अब गाँव वालों को नल से साफ पानी मिल रहा है। पानी ने हमें वापस बुला लिया है, और ये सब मेरे लिए किसी सपने जैसा लगता है। अब मैं यहीं खेती और मजदूरी करूंगा, लेकिन अपने गाँव को कभी नहीं छोड़ूंगा।" उनके बड़े भाई मेहरबान कुशवाहा ने कहा, "हमारे गाँव के 40% से ज़्यादा लोग पानी की कमी के कारण शहरों में बस गए थे। लेकिन अब जब नल का पानी मिलने की बात हो रही है, तो कई लोग वापस आने के लिए उत्सुक हैं। वास्तव में, लगभग 10% लोग तो पहले ही लौट आए हैं। मिशन हमारे लिए एक वरदान बनकर आया है।"

स्रोत: एसडब्ल्यूएसएम, उत्तर प्रदेश

सुमन, बलबेहट की एक बुजुर्ग महिला कहती हैं, "पानी की कमी के कारण मेरे सभी बच्चे गाँव छोड़कर चले गए। वे भोपाल, इंदौर और दिल्ली में बस गए। लेकिन अब, जब दरवाजे पर पानी उपलब्ध है, तो मेरे बेटे, बहुएं और उनके बच्चे सभी खुश हैं। पूरे परिवार को साथ देखकर हमें इतनी खुशी हुई है कि हमें लगता है कि अब हम 10 साल और जी लेंगे।"

29. Happy Families, Happy Homes: A Story of Family Reunion

Summers annually forced seasonal migration in this part of the world. Only those who couldn't migrate for different reasons or afford water from tankers remained back. So, for entire summer season, villagers who would move out would make a living by working as labourers in nearby cities or stay with relatives, says Suman.

Seema Tomar of Balabehat recalls the tough times she faced earlier. “During summer season we had to leave our houses as the wells too would dry out. The tanker water was costly – about Rs 10 for 3 pots and that too of not very good quality.”

According to villagers all four wells in Balabehat village would dry up or water levels would decrease alarmingly during peak summers, intensifying the struggle for water.

Women and children recall how they would often walk miles to fetch water from the river at different time zones – from noon to midnight and beyond. They recall that situation was so dire that people would think twice before giving water to their animals.

Semma Tomar, delighted to receive Tap Connection. She is now free from the burden of carrying heavy pots on her head. She is sharing her transformational story.
Source: SWSM, Uttar Pradesh

"But now, everything has changed. Thanks to the Jal Jeevan Mission, we now get water directly from a tap at home. Not only have household chores become easier, but the atmosphere at home has also improved. Now my husband and I have time to understand each other better," she said with a smile.

Source: SWSM UP

"Hum aur mere pati ke beech roz kalesh hota tha, kyunki khaana banane ke liye paani samay pe nahi milta tha aur khana der se banta tha. Pati ka gussa, ghar ke kaam ka bojh aur din bhar ka thakaan—sab kuch ekdum sar pe chadh jata tha. Par kya karte, paani ke liye door-door tak jana padta tha," ek mahila ne apni kahani batayi.

"Par ab sab kuch badal gaya hai. Jal Jeevan Mission ke karan ab ghar ke nal se hi paani milta hai. Na sirf ghar ke kaam asaan ho gaye hain, balki ghar ka mahaul bhi acha ho gaya hai. Ab mujhe aur mere pati ko ek dusre ko samajhne ka samay milta hai," woh muskaraate hue kehti hain.

"My husband and I used to fight frequently because meals got delayed as there was no water to cook on time. His anger, the burden of household chores, and the exhaustion of the day—it all used to overwhelm me. But what could we do? We had to walk long distances just to fetch water," shared a woman, narrating her struggles.

“In such a scenario, we were left with no other alternative but to migrate to nearby cities and work there for about two to three months and come back after rains,” villagers say.

They admit that year after year Balabehat residents would make the same prayer as they would look up to the sky with hope, praying for timely monsoon rains to fill their wells.

Rainfall meant celebration time; the villagers say even as lack of rains would cause depression.

Now, with Jal Jeevan Mission a reality, seasonal migration in Balabehat has declined appreciably as villagers no longer need to venture out in search of work, thanks to the availability of water for irrigation and drinking purposes.

Raja Bhai Tomar, 50, recalls: “Villagers would fetch drinking water from these four wells. When the water levels dropped, we used to climb down into the well and fill buckets. Sometimes, we had to even guard the wells to stop the gullible from using the water for irrigation purposes.”

Now, Jal Jeevan Mission is also ensuring happy families.

“Me and my husband had frequent fights as meals got delayed as there was no water to cook on time. Now, things are much better thanks to JJM,” says a woman.

29. खुशहाल परिवार, खुशहाल घर: एक पुनर्मिलन की कहानी

गर्मियों के दौरान बलबेहट गांव के लोगों को हर साल मौसमी पलायन के लिए मजबूर होना पड़ता था। केवल वे लोग गांव में रुकते थे जो किसी कारण से पलायन नहीं कर सकते थे या टैंकर से पानी खरीदने का खर्च नहीं उठा सकते थे। गर्मी के पूरे मौसम में, गांव छोड़ने वाले लोग पास के शहरों में मजदूरी करते थे या रिश्तेदारों के यहां रहकर गुजारा करते थे।

सीमा तोमर, जो बलबेहट की निवासी हैं, उन कठिन दिनों को याद करते हुए कहती हैं:
"गर्मी के मौसम में हमें अपने घर छोड़ने पड़ते थे क्योंकि हमारे कुएं भी सूख जाते थे। टैंकर से मिलने वाला पानी काफी महंगा था—3 घड़ों के लिए 10 रुपये चुकाने पड़ते थे, और वह भी साफ या पीने लायक नहीं होता था।" गांववालों के मुताबिक, बलबेहट के सभी चार कुएं गर्मियों के दौरान सूख जाते थे या उनका जलस्तर इतना नीचे चला जाता था कि पानी के लिए संघर्ष और कठिन हो जाता था। महिलाएं और बच्चे बताते हैं कि उन्हें नदी से पानी लाने के लिए मीलों पैदल चलना पड़ता था, और यह काम दोपहर से आधी रात और कभी-कभी उससे आगे तक चलता था। वे याद करते हैं कि हालात इतने खराब थे कि लोग अपने जानवरों को पानी देने से पहले भी दो बार सोचते थे।

"ऐसे समय में हमारे पास कोई और चारा नहीं होता था। हमें आसपास के शहरों में दो-तीन महीने के लिए पलायन करना पड़ता था और बारिश के बाद ही लौटना संभव हो पाता था," गांववाले कहते हैं। हर साल, बलबेहट के निवासी मानसून की बारिश के लिए आसमान की ओर उम्मीद भरी निगाहों से देखते थे। बारिश उनके लिए त्योहारों जैसा समय होता था, जबकि बारिश की कमी उनके जीवन में निराशा और संघर्ष लेकर आती थी। अब, जल जीवन मिशन के तहत गांव में पानी की उपलब्धता ने स्थिति को पूरी तरह बदल दिया है। मौसमी पलायन में भारी कमी आई है, और अब ग्रामीणों को सिंचाई और पीने के पानी के लिए गांव छोड़ने की जरूरत नहीं पड़ती।

50 वर्षीय राजा भाई तोमर कहते हैं:
"गांव के लोग पीने का पानी इन चार कुओं से भरते थे। जब जलस्तर नीचे चला जाता था, तो हमें कुएं में उतरकर बाल्टियों में पानी भरना पड़ता था। कभी-कभी हमें कुएं की पहरेदारी भी करनी पड़ती थी ताकि कोई इसे सिंचाई के लिए न ले जाए।" जल जीवन मिशन न केवल पानी की कमी को दूर कर रहा है, बल्कि परिवारों में शांति और खुशहाली भी ला रहा है। "मेरे और मेरे पति के बीच अक्सर झगड़े होते थे क्योंकि पानी की कमी के कारण समय पर खाना नहीं बन पाता था। अब, जल जीवन मिशन की वजह से सबकुछ बेहतर हो गया है," एक महिला ने साझा किया। अब, बलबेहट के लोग गर्मियों में अपने घर छोड़ने को मजबूर नहीं होते। जल जीवन मिशन ने उनकी ज़िंदगी में एक नई रोशनी दी है। पानी के साथ-साथ यह मिशन उनके लिए खुशहाल परिवार और घर की भी सौगात लेकर आया है।

सेम्मा तोमर, टैप कनेक्शन पाकर खुश हैं। अब वह सिर पर भारी बर्तन उठाने के बोझ से मुक्त हो गई है। वह अपनी ट्रांसफॉर्मेशन स्टोरी शेयर कर रही हैं।

स्रोत: एसडब्ल्यूएसएम, उत्तर प्रदेश

"मेरे और मेरे पति के बीच अक्सर झगड़े होते थे, क्योंकि खाना बनाने के लिए समय पर पानी नहीं मिलता था और खाना देर से बनता था। उनके गुस्से, घर के काम के बोझ और दिनभर की थकान—सब कुछ मुझे बहुत परेशान कर देता था। लेकिन क्या करते, पानी के लिए दूर-दूर तक जाना पड़ता था," एक महिला ने अपनी कहानी साझा करते हुए कहा। "लेकिन अब सब कुछ बदल गया है। जल जीवन मिशन की वजह से अब घर के नल से ही पानी मिलता है। न केवल घर के काम आसान हो गए हैं, बल्कि घर का माहौल भी सुधर गया है। अब मेरे पति और मुझे एक-दूसरे को समझने का समय मिलता है," उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा।

30. Education Unlocked: Siddhi Thakur's New Chapter

Young Siddhi Thakur used to wake up before dawn, gathering water from kilometers away with her mother, often missing school in the process. The water scarcity in Balabehat meant that children like Siddhi had to prioritize survival over education, a sacrifice that was all too common in the village. When wells dried up during summer, Siddhi's morning routine grew longer, and many days she would arrive late to school, exhausted and unable to focus.

Since the implementation of the Jal Jeevan Mission, Siddhi's mornings have transformed. She no longer has to wake up at 4 a.m. to fetch water. Now, water flows from a tap at home, and she can dedicate her time to studies and playing with her friends. Siddhi proudly shares how she attends school daily, full of energy and enthusiasm. "Now, I get enough time to study and play," she says, feeling the freedom that JJM has brought to her life.

JJM has enabled children in Balabehat to experience a life where education is prioritized, and their energy is focused on learning and personal growth, rather than physical labor. Siddhi's story exemplifies how the Jal Jeevan Mission is empowering the next generation by providing them with the opportunity to pursue their dreams without the constraints of water scarcity.

Young Siddhi can now go to school. Earlier she has the duty to fetch water often missing her school.
Source: SWSM, Uttar Pradesh

30.शिक्षा का मार्ग प्रशस्त: सिद्धि ठाकुर का नया अध्याय

युवा सिद्धि ठाकुर हर सुबह तड़के उठकर अपनी मां के साथ कई किलोमीटर दूर से पानी लाती थी, स्कूल जाने का समय अक्सर छूट जाता था। बलबेहट की पानी की कमी के कारण बच्चों के लिए शिक्षा प्राथमिकता की जगह बुनियादी जीविकोपार्जन की स्थिति में आ जाती थी, जो गांव में आम थी। गर्मियों के दौरान कुएं सूख जाते थे, जिससे सिद्धि का सुबह का काम बढ़ जाता था, और कई दिनों में वह स्कूल लेट पहुंचती थी, थकान और एकाग्रता की कमी के साथ।

जल जीवन मिशन की शुरुआत के बाद, सिद्धि के सुबह पूरी तरह बदल गए हैं। अब उसे तड़के 4 बजे उठने की जरूरत नहीं है पानी लाने के लिए। अब घर में नल से पानी आता है, और वह अपने समय का पूरा उपयोग पढ़ाई और दोस्तों के साथ खेलने में कर सकती है। सिद्धि गर्व से कहती है, "अब मुझे पढ़ाई और खेल दोनों के लिए पर्याप्त समय मिलता है।" जल जीवन मिशन ने उसके जीवन को स्वतंत्रता दी है।

बलबेहट के बच्चों के लिए, जल जीवन मिशन ने शिक्षा को प्राथमिकता दी है और उनके ऊर्जा को सीखने और व्यक्तिगत विकास की ओर मोड़ दिया है, न कि शारीरिक श्रम की ओर। सिद्धि की कहानी दर्शाती है कि जल जीवन मिशन नई पीढ़ी को सशक्त बना रहा है और उन्हें उनके सपनों को पूरा करने का अवसर दे रहा है, बिना पानी की कमी की सीमाओं के।

युवा सिद्धि अब स्कूल जा सकती है। इससे पहले उसे अक्सर स्कूल से गायब होकर पानी लाने का काम करना पड़ता था।

स्रोत: एसडब्लूएसएम, उत्तर प्रदेश

31. The big transformation: From waterwoes to marriage vows in UP's Bundelkhand, courtesy JJM

What is the connection between marriage prospects and water?

Well, you will know the connect only if you have lived in Uttar Pradesh's Bundelkhand where many youths, who didn't migrate, stayed bachelors, simply because their village lacked access to potable drinking water at the doorstep. The arrival of Jal Jeevan Mission – Indian government's flagship programme, focused at providing functional household tap connections (FHTCs) to rural households – has brought with it not just water, but a radiant smile too on the faces of such youth who stayed bachelors, for no fault of theirs.

As traditional concerns surrounding water scarcity begin to evaporate, marriage proposals are back again for the youth of Bundelkhand. Local residents admit how absence of clean drinking water had previously deterred potential brides' families from considering marriage proposals from youths of Bundelkhand. "However, with the water issue now resolved, the region's youth are finding it easier to find life partners," they say.

Mewalal Sendh, a resident of Baijpur village, in Jhansi, happily recalls how marriage prospects of the youths of his village have brightened considerably, courtesy transformation brought about by the Jal Jeevan Mission's initiative to ensure availability of water in parched Bundelkhand region in Uttar Pradesh, the country's most populous state. Mewalal recalls that earlier parents of prospective brides were hesitant to marry their daughters to the village's youths, fearing they would be burdened with fetching water.

Additionally, things became still tougher due to the Zamindari system that was followed in the village.

"The women were required to wear veils and walk barefoot to fetch water from kilometers away. During the rainy season, the area became slippery, and women often slipped, hurt themselves, and broke their water-filled pitchers, he says. "Now, we're extremely happy that women don't have to venture out for water," Mewalal says. "They have access to clean drinking water in their own homes," he adds.

He says if water had been available earlier, many youths wouldn't have remained bachelors, and their families wouldn't have shifted to other places. "The scarcity of water had led to migration of people involved in agriculture to other villages or areas, including Gwali and Phulpur. Even the village's Lumberdar had moved to a separate location downhill. However, with the water issue resolved, smiles are back again as people are returning to their roots," says Mewalal.

Mewalal Sendh, a resident of Baijpur village, in Jhansi, happily recalls how marriage prospects of the youths of his village have brightened considerably, courtesy transformation brought about by the Jal Jeevan Mission's initiative.
Source: SWSM, Uttar Pradesh

"Ab to hum bahut khush hain ki mahilaon ko paani ke liye bahar nahi jaana padta," Mewalal kehte hain. "Unke ghar me hi saaf paani mil raha hai," woh muskaraate hue jodhte hain.

"Pehle paani ki kami ke wajah se kheti ka kaam chhod ke log doosre gaon ya shehron mein chale gaye the, jaise Gwali aur Phulpur. Gaon ke Lumberdar tak neeche vale ilaqe mein shift ho gaye the. Par ab jab paani ka masla sulajh gaya hai, to log wapas laut rahe hain. Unke chehre par khushi wapas aa gayi hai," Mewalal ne apni baat rakhi.

("Now, we are extremely happy that women no longer have to go out to fetch water," says Mewalal. "They have access to clean drinking water right in their homes," he adds with a smile.

"Earlier, due to water scarcity, people involved in farming had to leave for other villages or towns like Gwali and Phulpur. Even the village's Lumberdar had shifted to a location downhill. But now that the water issue has been resolved, people are returning to their roots, and their faes are lit with joy," shared Mewalal.

31.उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड में महत्वपूर्ण परिवर्तन: जल जीवन मिशन के तहत: पानी की समस्याओं से शादी के वादों तक।

शादी के प्रस्तावों और पानी के बीच क्या संबंध है? अगर आपने यूपी के बुंदेलखंड में जीवन नहीं जिया है, तो शायद आपको इसका एहसास नहीं होगा। यहां कई युवाओं ने अविवाहित बने रहने का विकल्प चुना, क्योंकि उनके गांव में घर के द्वार पर पीने के पानी की सुविधा नहीं थी। जल जीवन मिशन – भारतीय सरकार का प्रमुख कार्यक्रम, जो ग्रामीण घरों में कार्यात्मक घरेलू नल कनेक्शनों (FHTCs) को प्रदान करने पर केंद्रित है – केवल पानी नहीं, बल्कि ऐसे युवाओं के चेहरे पर भी एक चमक ला चुका है, जिनकी अविवाहित रहने की स्थिति उनके किसी भी दोष के बिना थी।

पानी की कमी के पारंपरिक मुद्दे अब समाप्त हो रहे हैं, जिससे बुंदेलखंड के युवाओं के लिए विवाह प्रस्ताव वापस आने लगे हैं। स्थानीय निवासी स्वीकार करते हैं कि साफ पीने के पानी की अनुपस्थिति ने पहले संभावित दुल्हनों के परिवारों को बुंदेलखंड के युवाओं से विवाह प्रस्तावों पर विचार करने से रोक दिया था। "अब, पानी की समस्या हल हो गई है, और क्षेत्र के युवा जीवनसाथी खोजने में सक्षम हैं," वे कहते हैं।

झांसी जिले के बैजपुर गांव के निवासी मेवालाल सेनध खुशी-खुशी याद करते हैं कि जल जीवन मिशन की पहल से बुंदेलखंड क्षेत्र में पानी की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए जो बदलाव आया है, वह युवाओं के लिए विवाह संभावनाओं को काफी हद तक बढ़ा दिया है। मेवालाल याद करते हैं कि पहले संभावित दुल्हन के माता-पिता बुंदेलखंड के युवाओं से शादी करने में संकोच करते थे, क्योंकि उन्हें डर था कि उन्हें पानी लाने का बोझ उठाना पड़ेगा।

इसके अलावा, चीजें और भी कठिन हो गईं क्योंकि गांव में जमींदारी प्रणाली का पालन किया जाता था। "महिलाओं को कई किलोमीटर दूर से पानी लाने के लिए वादियां पहननी पड़ती थीं और नंगे पांव चलना पड़ता था। बारिश के मौसम में क्षेत्र फिसलन भरा हो जाता था, और महिलाएं अक्सर फिसल जाती थीं, चोटिल होती थीं और पानी से भरे घड़े टूट जाते थे," मेवालाल कहते हैं। "अब, हम बेहद खुश हैं कि महिलाओं को पानी लाने के लिए बाहर नहीं जाना पड़ता। उनके पास अपने घरों में साफ पीने का पानी है," वह कहते हैं।

उन्होंने कहा कि अगर पहले पानी उपलब्ध होता, तो कई युवाओं ने अविवाहित रहने का विकल्प नहीं चुना होता, और उनके परिवार दूसरे स्थानों पर स्थानांतरित नहीं होते। "पानी की कमी ने कृषि में लगे लोगों के पलायन को अन्य गांवों या क्षेत्रों, जैसे कि ग्वाली और फूलपुर में बढ़ावा दिया। यहां तक कि गांव का लंबरदार भी एक अलग स्थान पर चला गया था। अब, पानी की समस्या हल हो गई है, और लोग फिर से अपने मूल स्थान पर लौट रहे हैं," मेवालाल कहते हैं।

झाँसी के बैजपुर गाँव के निवासी मेवालाल सेंध ख़ुशी से याद करते हैं कि कैसे जल जीवन मिशन की पहल के कारण उनके गाँव के युवाओं की शादी की संभावनाएँ काफी हद तक उज्ज्वल हो गई हैं।

स्रोत: एसडब्लूएसएम, उत्तर प्रदेश

"अब तो हम बहुत खुश हैं कि महिलाओं को पानी के लिए बाहर नहीं जाना पड़ता," मेवालाल कहते हैं। "उनके घर में ही साफ पानी मिल रहा है," वह मुस्कुराते हुए जोड़ते हैं।

"पहले पानी की कमी के कारण खेती का काम छोड़कर लोग दूसरे गाँव या शहरों जैसे ग्वाली और फुलपुर चले गए थे। गाँव के लंबरदार तक नीचे वाले इलाके में शिफ्ट हो गए थे। पर अब जब पानी का मसला सुलझ गया है, तो लोग अपनी जड़ों की ओर वापस लौट रहे हैं। उनके चेहरे पर खुशी लौट आई है," मेवालाल ने अपनी बात रखी।

32. 'As if my son has arrived' -- Jal Jeevan Mission's healing touch in UP's grieving couple's life

Ram Saran and his wife, residents of Mahoba's Shivhar village in Uttar Pradesh, still recall those days when cruel hands of fate snatched away their son – the ageing couple's life support and sole hope.

The grief-stricken couple felt numb as their world appeared to collapse around them. More so, as Ram Saran's ageing wife, suffered from a debilitating joint pain. With her only son, her pillar of strength gone, the daily grind of fetching water, a chore essential for survival became even more difficult. The couple felt completely listless and lost.

It was at this moment that the Jal Jeevan Mission (JJM) – a flagship programme of the Indian government, focused at providing functional household tap connections (FHTCs) to rural households -- arrived in Shivhar village.

JJM's arrival, which meant doorstep access to potable tap water, marked a turning point in the life of Ram Saran, his wife and in fact the entire Shivhar too. "The pain of losing my only child was unbearable,

" Ram Saran's wife said, tears welling up in her eyes. "I felt like giving up on life," she said adding that it was a dire situation which threatened to consume them. "But, the Jal Jeevan Mission's (JJM) tap water has reignited hope," she says.

"Tap water at my doorstep! It's nothing short of a miracle," she exclaimed. "It means that I don't have to undertake those painful walks, endure those seemingly endless waits. Water, a necessity, is now within my reach. It appears to me as if my son has arrived," she adds.

Ram Saran's family along with many others in the village also celebrated "Jal Diwali" – a festival recreated on the lines of Diwali, the festival of lights that symbolises triumph of good over evil but in case of "Jal Diwali" it symbolises the triumph over water scarcity. With folded hands, she offered prayers to the tap, to express her gratitude for the water at the doorstep initiative of the government. "This tap has eased my physical pain and softened the emotional blow of losing my only son," she says.

"Though his absence still hurts, access to water has made life manageable," she adds, gently touching the tap and looking at it with a sparkle in his eyes and a sense of renewed hope. "Life has given me a second chance. I'll cherish every moment, every drop of water," she adds. For this grieving couple, Jal Jeevan Mission has rekindled hope, alleviating their suffering.

Their story serves as a testament to the Mission's impact and how it has brought cheer in the lives of the poorest of the poor and brought about a qualitative improvement in the lives of the poor.

Ram Saran and his wife celebrating Jal Diwali with the Tap connection. To him it is like his second son.
Source: SWSM, Uttar Pradesh

"Ramcharan ki patni Sumitra kehati hain, 'Gaon ke darwaje tak nal ka paani! Yeh to ek chamatkaar se kam nahi hai. Ab hume wo dardnaak raaste tay karne ki zaroorat nahi padti, aur na hi wo lambi intezaar ki ghadiyan. Paani, jo pehle ek zarurat thi, ab mere paas hai. Mujhe to aisa lagta hai jaise mera beta ghar aa gaya ho," woh aage kehti hain.

("Tap water at my doorstep! It's nothing short of a miracle," she exclaimed. "It means I don't have to undertake those painful walks, endure those seemingly endless waits. Water, a necessity, is now within my reach. It feels to me as if my son has returned," she adds.)

32.शोकाकुल दंपति के जीवन में जल जीवन मिशन की संजीवनी

राम सरन और उनकी पत्नी, उत्तर प्रदेश के महोबा के शिवहर गांव के निवासी, अभी भी उन दिनों को याद करते हैं जब दुखद हाथों ने उनके बेटे को छीन लिया था – वृद्ध दंपति की जीवन रेखा और एकमात्र उम्मीद। इस दुःख में डूबे दंपति का मन सुन्न था, और उनका दुनिया उनके चारों ओर धराशायी होती प्रतीत होती थी। इससे भी अधिक, क्योंकि राम सरन की वृद्ध पत्नी को दर्दनाक जोड़ दर्द था। उनके केवल बेटे की, उनकी ताकत की आधारशिला चले जाने के बाद, पानी लाने का दिन-प्रतिदिन का काम, जो जीवित रहने के लिए जरूरी था, और भी कठिन हो गया था। दंपति पूरी तरह से बिना ऊर्जा और खो गया महसूस कर रहे थे।

इस क्षण में, जल जीवन मिशन (JJM) – भारतीय सरकार का प्रमुख कार्यक्रम, जो ग्रामीण घरों में कार्यात्मक घरेलू नल कनेक्शनों (FHTCs) को प्रदान करने पर केंद्रित है – शिवहर गांव में पहुंचा। जल जीवन मिशन की पहुंच, जो कार्यात्मक नल के पानी तक घर के द्वार पर पहुंच प्रदान करती है, राम सरन, उनकी पत्नी और पूरे शिवहर के जीवन में एक मोड़ का प्रतीक था। "मेरे एकमात्र बच्चे के खोने का दर्द असहनीय था," राम सरन की पत्नी ने कहा, उसकी आंखों में आंसू भरे। "मैंने जीवन से हार मान ली थी," उसने कहा, यह बताते हुए कि यह एक खतरनाक स्थिति थी जो उन्हें निगलने वाली थी। "लेकिन, जल जीवन मिशन (JJM) का नल का पानी ने फिर से उम्मीद जगादी," वह कहती है।

"मेरे घर पर पानी का नल! यह कोई चमत्कार से कम नहीं है," वह चिल्लाती है। "इसका मतलब है कि मुझे उन दर्दनाक यात्राओं पर नहीं जाना होगा, उन प्रतीक्षा के अंतहीन इंतजारों का सामना नहीं करना होगा। पानी, एक आवश्यकता, अब मेरे हाथों में है। यह मुझे ऐसा प्रतीत होता है जैसे मेरे बेटे का आगमन हुआ है," वह जोड़ती है।

राम सरन का परिवार और गांव के कई अन्य लोग भी "जल दिवाली" का उत्सव मनाते हैं – दिवाली के समान ही एक त्योहार, जो अच्छाई की बुराई पर विजय का प्रतीक है लेकिन जल दिवाली के मामले में, यह पानी की कमी पर विजय का प्रतीक है। उन्होंने हाथ जोड़कर धन्यवाद दिया नल को, सरकार के घर में पानी की सुविधा की पहल के लिए प्रार्थना की।

"इस नल ने मेरे शारीरिक दर्द को कम कर दिया और मेरे केवल बेटे की अनुपस्थिति से लगी चोट को भी नरम कर दिया है," वह कहती है। "हालांकि उसकी अनुपस्थिति अभी भी दर्द देती है, पानी की पहुंच जीवन को प्रबंधनीय बना देती है," वह नल को हल्की सी छूते हुए और उसमें एक नई उम्मीद की चमक के साथ उसे देखते हुए कहती है।

"जीवन ने मुझे दूसरा मौका दिया है। मैं हर पल, हर बूंद का आनंद लूंगी," वह कहती है। इस शोकाकुल दंपति के लिए, जल जीवन मिशन ने उम्मीद जगा दी है, उनकी पीड़ा को कम किया है। उनकी कहानी मिशन के प्रभाव का प्रमाण है और कैसे यह सबसे गरीब लोगों के जीवन में खुशी लाया है और गरीबों के जीवन में गुणात्मक सुधार लाया है।

नल कनेक्शन से जल दिवाली मनाते राम सरन और उनकी पत्नी। उनके लिए यह उनके दूसरे बेटे की तरह है।

स्रोत: एसडब्ल्यूएसएम, उत्तर प्रदेश

रामचरण की पत्नी सुमित्रा कहती हैं, "गाँव के दरवाजे तक नल का पानी! यह तो किसी चमत्कार से कम नहीं है। अब हमें वो दर्दनाक रास्ते तय करने की जरूरत नहीं पड़ती, और ना ही वो लंबी इंतजार की घड़ियां। पानी, जो पहले सिर्फ एक जरूरत थी, अब मेरे पास है। मुझे तो ऐसा लगता है जैसे मेरा बेटा घर आ गया हो," वह आगे कहती हैं।

Uttarakhand

33. Transforming Lives with Water: The Journey of 'Dudhali Village

Surrounded by lush verdant forests, Dudhali, a village in the Doiwala block of Uttarakhand, about 15 km from Dehradun, stands as a testament to the transformative power of clean water. For years, the residents faced the daily struggle of accessing clean water. The dream of having water flow through every tap seemed distant, but today, that dream is a reality, thanks to Jal Jeevan Mission.

Water is life. If there is water, there is tomorrow. This belief resonated deeply with the villagers of Dudhali, where providing clean water to every household was a daunting challenge. Jal Jeevan Mission, however, embraced this challenge head-on. The task was enormous – connecting every house with water pipelines, setting up standposts, and ensuring that the materials reached every corner of the village. But the Bilpani agency, tasked with this mission, worked tirelessly, drawing from their experience and the hope that everyone shared.

Today, water flows freely to all 505 houses in Dudhali Gram Sabha. The transformation doesn't end there; water now also reaches four schools and two Anganwadi centres, ensuring that the next generation grows up with access to clean water. The impact is profound, especially for families who previously had to rely on motors to supply water during shortages. The struggles of the past, when water had to be fetched from neighbours' homes, are now a distant memory.

The government's initiative to provide water connections for just one rupee brought relief to financially weak families. This small but significant step made a huge difference, solving water access issues and ensuring that every household had its own tap.

Beneficiary receiving water through tap connection.
Source: Uttarakhand Jal Sansthan

An integral part of the mission's success was the formation of a Village Water Sanitation Committee (VWSC), consisting of local women trained to test water quality. This committee not only safeguards the water supply in the village but also empowers women to take an active role in their community's health and well-being. These women now monitor water sources and ensure that the water flowing into their homes is safe for consumption.

FTK testing members of the VWSC regularly monitor water Quality. Source: Uttarakhand Jal Sansthan In the spirit of innovation, Dudhali village is one of the few places in India where the Tata Group has installed a water flow meter. This advanced system, linked to Google, allows anyone to monitor water flow online, ensuring transparency and accountability. Every six hours, data is monitored to address any discrepancies, ensuring that the scheme runs efficiently.

Dudhali's journey towards water security is a shining example of what can be achieved when a community comes together with the right support and resources. The village is not just surviving; it is thriving, moving steadily towards a future where clean water is not just a dream, but a reality for all. As water makes the earth beautiful, it has also made Dudhali a beacon of hope and progress, symbolizing the success of the Jal Jeevan Mission.

FTK testing members of the VWSC regularly monitor water Quality.
Source: Uttarakhand Jal Sansthan

33. जीवन में जल से परिवर्तन: दुधाली गांव की यात्रा

ऊर्जावान हरी-भरी वनों से घिरा, दुधाली, उत्तराखंड के डोईवाला ब्लॉक का एक गांव, देहरादून से लगभग 15 किमी दूर, साफ पानी की परिवर्तनकारी शक्ति का प्रमाण है। वर्षों तक, निवासियों को स्वच्छ पानी प्राप्त करने के लिए दैनिक संघर्ष करना पड़ा। हर नल में पानी का सप्लाई होने का सपना दूर का लगता था, लेकिन आज वह सपना हकीकत में बदल चुका है, जल जीवन मिशन की बदौलत।

पानी जीवन है। अगर पानी है, तो कल है। यह विश्वास दुधाली के गांव वालों के दिल में गहराई तक बसा हुआ था, जहां हर घर में स्वच्छ पानी उपलब्ध कराना एक चुनौतीपूर्ण कार्य था। जल जीवन मिशन ने इस चुनौती का सामना किया। कार्य बहुत बड़ा था – हर घर को पानी की पाइपलाइन से जोड़ना, स्टैंड पोस्ट स्थापित करना, और यह सुनिश्चित करना कि सामग्री गांव के हर कोने तक पहुंचे। लेकिन बिलपानी एजेंसी, जिसने इस मिशन की जिम्मेदारी संभाली, ने बिना थके काम किया, अपनी अनुभव और हर किसी की उम्मीद से प्रेरित होकर।

आज, दुधाली ग्राम सभा में सभी 505 घरों में पानी freely बहता है। परिवर्तन यहीं नहीं रुकता; पानी अब चार स्कूलों और दो आंगनवाड़ी केंद्रों तक पहुंचता है, यह सुनिश्चित करता है कि अगली पीढ़ी स्वच्छ पानी तक पहुंच के साथ बड़ी हो। इसका प्रभाव गहरा है, विशेष रूप से उन परिवारों के लिए जिन्होंने पहले पानी की आपूर्ति के लिए मोटरों पर निर्भर रहना पड़ा था। अतीत की संघर्ष जब पानी पड़ोसियों के घरों से लाना पड़ता था, अब एक दूर की याद बन गई है।

सरकार की एक रुपए में पानी के कनेक्शन की पहल ने वित्तीय रूप से कमजोर परिवारों को राहत दी। यह छोटा लेकिन महत्वपूर्ण कदम पानी की पहुंच की समस्याओं का समाधान किया और यह सुनिश्चित किया कि हर घर में अपना नल हो।

हितग्राही को नल कनेक्शन के माध्यम से जल प्राप्त हो रहा है।
स्रोत: उत्तराखंड जल संस्थान

मिशन की सफलता का एक अभिन्न हिस्सा था एक गांव जल एवं स्वच्छता समिति (VWSC) का गठन, जिसमें स्थानीय महिलाएं शामिल थीं जिन्हें पानी की गुणवत्ता परीक्षण के लिए प्रशिक्षित किया गया था। इस समिति ने न केवल गांव में जल आपूर्ति की रक्षा की, बल्कि महिलाओं को अपनी समुदाय की स्वास्थ्य और भलाई में सक्रिय भूमिका निभाने का अधिकार भी दिया। अब इन महिलाएं पानी के स्रोतों की निगरानी करती हैं और सुनिश्चित करती हैं कि उनके घरों में बहता पानी सुरक्षित हो।

नवाचार की भावना में, दुधाली गांव भारत के कुछ स्थानों में से एक है जहां टाटा समूह ने एक पानी के प्रवाह मीटर स्थापित किया है। इस उन्नत प्रणाली, जो गूगल से लिंक है, किसी को भी ऑनलाइन पानी के प्रवाह की निगरानी करने की अनुमति देता है, यह सुनिश्चित करता है कि पारदर्शिता और जिम्मेदारी बनी रहे। हर छह घंटे में डेटा की निगरानी की जाती है ताकि कोई असंगति का समाधान किया जा सके और यह योजना कुशलता से चले।

दुधाली की जल सुरक्षा की यात्रा एक चमकदार उदाहरण है कि जब एक समुदाय सही समर्थन और संसाधनों के साथ एक साथ आता है तो क्या हासिल किया जा सकता है। गांव केवल जीवित नहीं है; यह फल-फूल रहा है, एक भविष्य की ओर बढ़ रहा है जहां स्वच्छ पानी सिर्फ एक सपना नहीं, बल्कि सभी के लिए वास्तविकता है। जब पानी पृथ्वी को सुंदर बनाता है, तो उसने दुधाली को उम्मीद और प्रगति की एक मीनार बना दिया है, जो जल जीवन मिशन की सफलता का प्रतीक है।

वीडब्ल्यूएससी के एफटीके परीक्षण सदस्य नियमित रूप से पानी की गुणवत्ता की निगरानी करते हैं।
स्रोत: उत्तराखंड जल संस्थान

West Bengal

34. Empowering Tribal Communities: Resolving Water Crisis in Darial Village, Maldah District of West Bengal

Darial Village had always been dry, in every sense. Located deep in the tribal heartland of Bhabuk Gram Panchayat, Old Malda Block, it was a place where thirst seemed perpetual and hope often felt like a luxury. For Marangmai Soren and the 46 families in her community, daily life was dictated by water scarcity. The scarcity went beyond the physical—without water, dreams shrivelled and ambitions faded. But Marangmai, a fierce and resilient mother, had always harboured a small spark of hope.

For years, she had walked miles, often under the blazing sun, carrying heavy pots filled with muddy water back to her home. She suffered from back ache, and the anguish of difficulties made her heart heavy and bitter. The children grew up around this struggle, their childhoods defined by the constant battle for survival. Many were often too sick from waterborne illnesses to attend school, and Marangmai feared they would be bound to this life of hardship forever. She would glance down at her worn, cracked hands and wonder if there would ever be an end to the struggle.

But then, one day, whispers of change arrived and her life was changed. The Public Health Engineering Department (PHED) and an Implementation Support Agency had taken notice of Darial's plight.

Marangmai listened as the officials and engineers spoke to the community, discussing plans and surveying the village. She'd been cautious at first, like everyone else. Years of unmet promises had hardened their hearts. But as the days went by, something shifted. The teams didn't just plan and leave—they stayed, talking to villagers, explaining every step, and asking for their insights. laid and the taps installed. The day she saw water streaming from a tap near her home, Marangmai could hardly believe it when

the pipes were she felt an overwhelming surge of relief—a release from the invisible chains that had bound her family for generations. No more treks to distant sources, no more sick children kept from school. She watched as her children's health and spirits revived, their laughter echoing across the village. She saw other parents, their faces usually lined with worry, begin to smile with the same amazement.

With newfound time and energy, the community found that they could do more with their fields. Agriculture began to flourish as they now had a steady water supply. Food was abundant, and income from their increased yield helped them live better. Marangmai and her neighbours had seen firsthand how the gift of water could empower every aspect of life. But she knew that change had to be preserved. Inspired by the transformation, Marangmai took action. She rallied the villagers to form a water user committee, determined to safeguard what they had fought so long to gain. She reminded everyone: Her dedication inspired others, and soon the entire village was invested in protecting their new lifeline.

Today, Darial Village stands transformed, and Marangmai walks through her village with a renewed sense of pride. She knows that the journey has not only changed her life but has ignited hope in places where it was once forgotten. And for the first time, Marangmai is confident her children will inherit a future brighter than anything she had ever imagined.

Marangami Sharing her transformational journey in her words.
Source: PHE, Wast Bengal

Group Meeting in Progress for discussing matter related to water.
Source: PHE, West Bengal

"Paani boko kela, ara kakad do kakar pipes ara taps boko kela. Edien hul kalam, sahul kamwana. Aimen ene kelamar boko eka git, kanag lok kende minimpa. Ai paika sanka sahul, hae aimen re nihin dikam dang. Horon angana ma nidan pahur, mur sorolal khar do ari, haak katha ya hakma. Kiya kende dimair hakapha, ommar boko thomai. Aiya kayaman dobo pankao."

“Water is precious, and more precious are the pipes and taps. If these get broken, the facilities will not work. I am thankful for this precious gift, which will affect my future generations. I could not study as I had responsibilities like fetching water when I was young, but my kids will study and become what they want to be."

34.পিছিয়ে পড়া সম্প্রদায়ের এক স্বপ্নের বাস্তবায়ন : পশ্চিমবঙ্গের মালদহ জেলার দারিয়াল গ্রামে জল সংকটের সমাধান

দারিয়াল গ্রাম সবসময়ই শুকনোই ছিল। ভৈরব গ্রাম পঞ্চায়েতের অন্তর্গত, ওল্ড মালদা ব্লকে অবস্থিত এই গ্রামে, তৃষ্ণা যেন এক চিরন্তন সঙ্গী এবং বাড়িতেই নিজের নলবাহিত পানীয় জলের কল থাকা ছিল এক বিলাসিতার স্বপ্ন। মারাংমাই সোরেন এবং তার গ্রামের আরো ৪৬টি পরিবারের প্রতিনিয়ত পানীয় জলের সমস্যা সম্মুখীন হতে হতো। প্রতিনিয়ত জীবন সংগ্রামে মানুষের স্বপ্ন, এবং উচ্চাশাও একসময় মুছে যায়। তবে মারাংমাই সুদৃঢ় এক ব্যক্তিত্বশালী মা, যিনি তার অন্ত: স্থলে একটি আশার আলো ধরে রেখেছিলেন।

বছরের পর বছর, তিনি মাইলের পর মাইল হেঁটে, গরম রোদে, ঝড় বৃষ্টিতেও জল পূর্ণ হাঁড়ি মাথায় নিয়ে বাড়ি ফিরেছেন। তার ঘাড়ে ব্যথাও হত, এবং সময় সময় যন্ত্রণা তার মন ভারী এবং তিক্তও করে তুলত।

বাচ্চারাও এই সংগ্রামের মধ্যেই বড় হয়েছে, তাদের শৈশব যেন এক অভ্যস্ত যুদ্ধ। অনেক সময় তারা জলবাহিত রোগের জন্য স্কুলে যেতে পারত না, আর মারাংমাই ভয় পেত যে তারা হয়তো এই কষ্টের জীবনেই আটকে যাবে। সে তার ক্ষয়ে যাওয়া হাতগুলো দেখতে দেখতে ভাবত, কখনো কি এই সংগ্রামের শেষ হবে?

কিন্তু একদিন, এক পরিবর্তনে তার জীবন বদলে গেল। জনস্বাস্থ্য কারিগরি বিভাগ এবং বিভিন্ন সহায়ক সংস্থা (ইমপ্লিমেন্টেশন সাপোর্ট এজেন্সি) সারা পশ্চিমবঙ্গ রাজ্যে বাড়ি বাড়ি নলবাহিত পানীয় জল পরিষেবার এক প্রকল্পের রূপায়ণ করছিলেন। মারাংমাই শুনতে পায়, সরকারি আধিকারিকরা গ্রামবাসীদের সাথে কথা বলছে, পরিকল্পনা ও জরিপ নিয়ে আলোচনা করছে। প্রথমে সে সাবধান ছিল, যেমন সবাই ছিল। বছরের পর বছর অপূর্ণ প্রতিশ্রুতি তাদের হৃদয়কে কঠিন করে তুলেছিল। তবে দিন দিন কিছু পরিবর্তন হতে লাগল।

"মারাঙ্গামি খুব আনন্দের সাথে আমাদের জানাচ্ছেন তার পরিবার খুব খুশি বাড়িতেই নলবাহিত পানীয় জল সংযোগ পেয়ে।"
সূত্র : জনস্বাস্থ্য কারিগরী বিভাগ, পশ্চিমবঙ্গ সরকার।"

দলগুলি শুধু পরিকল্পনা করে চলে যেত না—তারা থাকতো, গ্রামবাসীদের সাথে কথা বলত, প্রতিটি পদক্ষেপ ব্যাখ্যা করত এবং তাদের মতামত নিত।

মারাংমাই বিশ্বাস করতে পারছিলো না যখন পাইপগুলি স্থাপন করা হল এবং ট্যাপগুলি লাগানো হল। যে দিন সে দেখল তার বাড়ির কাছাকাছি একটি ট্যাপ থেকে জল প্রবাহিত হচ্ছে, সে এক অদ্ভুত মুক্তির অনুভূতি পেল—যে অদৃশ্য শিকলগুলি তাদের পরিবারকে প্রজন্মের পর প্রজন্ম বেঁধে রেখেছিল, সেগুলি খুলে গেল। আর কোনো দূরবর্তী উৎসে যেতে হবে না, শিশুদের জল বাহিত রোগের প্রাদুর্ভাব কমবে। সে দেখল, অন্য বাবা-মায়েরা, যাদের মুখ সাধারণত চিন্তায় ভরা থাকত, তাদের মুখ হাসিভরা।

পানি সংক্রান্ত বিষয়ে আলোচনার জন্য গ্রুপ মিটিং চলছে।
সূত্র: পিএইচই পশ্চিমবঙ্গ

"জল অমূল্য, এবং তার থেকেও অমূল্য হল পাইপ ও ট্যাপ। যদি এগুলি নষ্ট হয়ে যায়, তাহলে এই সুবিধাগুলি কাজ করবে না। আমি এই অমূল্য নলবাহিত পানীয় জলের জন্য খুব আনন্দিত, যা আমার ভবিষ্যৎ প্রজন্মের ওপর প্রভাব ফেলবে। আমি বেশিদূর পড়াশোনা করতে পারিনি, কারণ ছোটবেলায় আমাদের ওপর অনেক দায়িত্ব ছিল, জল বই আনাটাও একটা দায়িত্বও ছিল, কিন্তু আমার সন্তানরা পড়াশোনা করবে এবং তারা বড়ো হয়ে যা হতে চায়, তা হতে পারবে।"

35. From Scarcity to Transformation: The Journey of Raghuram Village and the Jal Jeevan Mission.

Raghuram is a tribal village in the Naxalbari block of Darjeeling District. 105 families comprising 481 people reside in this village, including 431 tribal people. The village has been certified as a Har Ghar Jal. With potable water now being provided to all families, the villagers, who work in nearby tea gardens have their lives changed. With the implementation of the Jal Jeevan Mission in the area and the provision of tap connections, people's lives took a positive turn. This intervention brought about a remarkable transformation, addressing various challenges, and improving the community's overall well-being.

Sumita Munda a resident of this village has been facing a scarcity of potable water for a long. Being a mother of two girls, Joys of 13 years and Srijana of 9 years, Sumita Munda had to be extra cautious about the well-being of her family. Sumita shares, that during the scorching summer months, the villagers would travel long distances to fetch water. Sometimes, the water quality was severely compromised, leading to recurrent health issues like diarrhoea and dysentery among the children. Mrs. Sumita Munda joyfully shares that after having piped water connection in her home, her daughters no longer suffer from frequent bouts of stomach-ache. She says, with access to safe drinking water, the risk of waterborne illnesses has significantly reduced, resulting in a healthier and more hygienic lifestyle for the entire family.

The provision of clean water has positively influenced the socio-economic aspects of the village. Mrs. Sumita Munda explains that with the availability of safe drinking water, the villagers can now focus more on their livelihoods and productive activities, leading to an overall improvement in their standard of living. The burden of water-related chores has lessened, allowing women and children to engage in other productive pursuits. Further, there is a sense of unity and empowerment among the villagers. Mrs. Sumita Munda expresses her heartfelt gratitude towards them for their unity, dedication, and efforts in transforming their lives for the better. However, their lives took a positive turn when they received a drinking water connection at their home. The family's water woes and worries were finally resolved.

Happy Faces from Raghuram Village

Now, they enjoy the luxury of clean drinking water without any hardships. Recognizing the value of this precious resource, Paro made three firm promises. Firstly, turn off the tap after water is collected so that others could have water. Secondly, prioritize cleanliness by washing hands with soap and clean water before meals. And lastly, avoid wastage of water.

With the water problem behind them, the family now embraces a healthier and worry-free lifestyle. The children can attend school regularly, and the financial burden of frequent illnesses has eased. This transformation in their lives highlights the significance of accessible and clean drinking water, leaving them grateful and committed to responsible water usage.

Sumita Munda happy to receive FHTC.
Source: PHE, West Bengal

Paro Nayek is a mother of two Daughters. She educated the fellow villagers to converve water.
Source: PHE, West Bengal

Paro's three rules in her own words

1. "Pani pura leoke hoi jaoel ke baad, moy panikar nal ke band kair debu, taki mor ghar kar baad main wale ghar bhi pani pai". (I will turn off the tap when not in use, so that others can also have drinking water).

2. "Khaonkar agea saaf pani ebong sabun sei haat dhui ke khana khabu". (I will wash hands with clean water & soap before eating.)

3. "Pani ke barbai band karop". (I will stop wasting water)

Source: Source: PHE West Bengal

35. পিছিয়ে পড়া সম্প্রদায়ের এক স্বপ্নের বাস্তবায়ন : পশ্চিমবঙ্গের মালদহ জেলার দারিয়াল গ্রামে জল সংকটের সমাধান

রঘুরাম দার্জিলিং জেলার নক্সালবাড়ি ব্লকের একটি প্রত্যন্ত গ্রাম। এই গ্রামে ১০৫টি পরিবার বসবাস করে, এবং ৪৮১ জন মোট জনসংখ্যার মধ্যে ৪৩১ জন আদিবাসী। গ্রামটি "সজল গ্রামে" হিসেবে পরিচিতি পেয়েছে। এখানে সমস্ত পরিবারের নলবাহিত পানীয় জল সরবরাহ করা হচ্ছে, যার ফলে নিকটবর্তী চা বাগানে কাজ করা গ্রামবাসীদের জীবনযাত্রায় পরিবর্তন এসেছে। এই অঞ্চলে নলবাহিত পানীয় জল সরবারহ প্রকল্প বাস্তবায়ন এবং ট্যাপ সংযোগের মাধ্যমে মানুষের জীবনে একটি ইতিবাচক পরিবর্তন এসেছে। এর ফলে বিভিন্ন সমস্যার সমাধান এবং গ্রামের সার্বিক কল্যাণে উন্নতি ঘটায়।

সুমিতা মুন্ডা, এই গ্রামের বাসিন্দা, দীর্ঘ সময় ধরে পানীয় জলের অভাবের সম্মুখীন হচ্ছিলেন। সুমিতা মুন্ডাকে তার পরিবার তাঁর দুই কন্যাসন্তানের সুস্থতার ব্যাপারে অতিরিক্ত সতর্ক থাকতে হত। সুমিতা

বলেন, গরমের সময়, গ্রামবাসীরা জল আনার জন্য অনেক দূরেই যেতে হয়। কখনও কখনও, জলের গুণমান অনেকটাই খারাপ থাকায়, শিশুদের মধ্যে ডায়রিয়া এবং আমাশয়সহ নানা সমস্যা দেখা দিত। সুমিতা মুন্ডা আনন্দের সঙ্গে জানান, এখন তার বাড়িতে নলবাহিত পানীয় জলের সংযোগ থাকায় তার মেয়েরা আর পেটব্যথায় ভোগে না। তিনি বলেন, নিরাপদ পানীয় জল পাওয়ার ফলে জলবাহিত রোগের ঝুঁকি অনেক কমে গেছে, যার ফলে পুরো পরিবারের জন্য একটি সুস্থ ও আরও স্বাস্থ্যকর জীবনযাত্রা নিশ্চিত হয়েছে।

পরিশুদ্ধ পানীয় জল সরবরাহ হওয়ায় গ্রামটির সামাজিক ও অর্থনৈতিক দিকগুলোতে ইতিবাচক প্রভাব ফেলেছে। সুমিতা মুন্ডা বলেন, নিরাপদ পানীয় জলের সরবরাহ থাকায়, গ্রামবাসীরা এখন তাদের জীবিকা এবং উৎপাদনমূলক কর্মকাণ্ডে আরও মনোযোগ দিতে পারেন, যার ফলে তাদের জীবনযাত্রার মানে সামগ্রিক উন্নতি হয়েছে। জল বয়ে আনার কষ্টসাধ্য কাজের বোঝা কমে গেছে, যার ফলে নারী ও শিশুরা অন্যান্য উৎপাদনশীল কাজে অংশ নিতে পারছে। এছাড়া, গ্রামবাসীদের মধ্যে ঐক্য ও একতা হয়েছে। সুমিতা মুন্ডা সরকারের প্রতি কৃতজ্ঞতা প্রকাশ করে বলেন, গ্রামের ঐক্য, এবং জীবনধারার উন্নতির করার প্রচেষ্টার জন্য তিনি অন্তর থেকে কৃতজ্ঞ।

পারো নায়েক এবং তার স্বামী এই গ্রামেরই চা বাগানের শ্রমিক। তারা একটি

রঘুরাম গ্রামের সুখী মুখ

সমস্যার সম্মুখীন ছিলেন - নিরাপদ পানীয় জলের। তাদের পানীয় জলের উৎস ছিল চা বাগানের ট্যাংক এবং পাতকুয়োর জল। যদিও ট্যাংকের জল নিরাপদ ছিল, কিন্তু এটি প্রতিদিন পাওয়া যেত না, যার ফলে তাদের কুয়োর জল ব্যবহার করতে হত। দুর্ভাগ্যবশত, এর ফলে বারবার শারীরিক অসুস্থতা, ডাক্তার এবং ওষুধপত্রের খরচ এবং শিশুদের অসুস্থতার কারণে স্কুলে কামাইও হতো।

তবে, তাদের জীবন একটি ইতিবাচক মোড় নেয় যখন তারা বাড়িতেই নলবাহিত পানীয় জলের সংযোগ পায়। পরিবারের পানীয় জলের সমস্যা অবশেষে সমাধান হয়। এখন, তারা কোনো কষ্ট ছাড়াই নিরাপদ পানীয় জলের পাচ্ছেন।

পানীয় জলের সমস্যাটি পেছনে ফেলে, এখন পরিবারটি একটি স্বাস্থ্যকর এবং চিন্তামুক্ত জীবনযাপন করছে। শিশুরা নিয়মিতভাবে স্কুলে যেতে পারে, এবং বারবার অসুস্থতার ফলে আর্থিক বোঝাও কমে গেছে। তাদের জীবনে এই রূপান্তরটি নলবাহিত পানীয় জলের গুরুত্বকেই তুলে ধরে, যার ফলে তারা কৃতজ্ঞ এবং দায়িত্বশীলভাবে নলবাহিত পানীয় জল ব্যবহারের প্রতি প্রতিশ্রুতিবদ্ধ।

FHTC পেয়ে খুশি সুমিতা মুন্ডা।
সূত্র: পিএইচই পশ্চিমবঙ্গ

পারো নায়েক দুই কন্যার মা। তিনি গ্রামবাসীদের জল পরিবর্তন করতে শিক্ষিত করেছিলেন।

সূত্র: বাস : জনস্বাস্থ্য কারিগরী বিভাগ, পশ্চিমবঙ্গ সরকার।

এই মূল্যবান সম্পদটির গুরুত্ব বুঝে, পারো তিনটি দৃঢ় প্রতিশ্রুতি করেছেন। প্রথমত, পানীয় জল সংগ্রহ করার পর ট্যাপ বন্ধ করে দেওয়া যাতে অন্যরাও জল পেতে পারে। দ্বিতীয়ত, খাবারের আগে সাবান এবং পরিষ্কার জল দিয়ে হাত ধুয়ে স্বাস্থ্যবিধি মানা। এবং অবশেষে, জলের কোনোরূপ অপচয় না করার প্রতিশ্রুতি।

36. From Grief to Relief: A Widow's Journey to Safe Water

Luiytel Nayek, is a 62-year-old widow, from this village who lives with her two children, who are employed as labourers in a local tea garden. Tragedy struck their family when one of their children passed away due to a stomach disease, followed by her husband's demise from a similar ailment. The cause was attributed to consuming water from an unsanitary well in a distant tea garden, which they had to laboriously fetch for years.

Happy Faces from Raghuram Village

For a long time, they suffered from water-related challenges. However, since receiving a drinking water connection at their homes, their lives have taken a positive turn. The availability of clean drinking water has significantly improved their overall well-being, ensuring a healthier and more secure future for the family.

Durgi Santal from the same village is working as a pump operator at Ghusura Pumping station, she says, "As a pump operator, providing water to Raghuram village's tribal population fills me with joy. Seeing the positive impact on their lives, especially on Sumita Munda and her daughters, is truly rewarding. The Jal Jeevan Mission has transformed their well-being, empowered the community, and created a brighter future, especially the drudgery of women, who had to fetch water over long distance."

The success story of Raghuram village exemplifies the transformative impact of the Jal Jeevan Mission. The provision of safe drinking water through tap connections has not only resolved the water scarcity issues but has also improved the overall quality of life for the villagers. Mrs. Sumita Munda's experience highlights the profound benefits of this initiative, including enhanced safety, better health, socio-economic development, and community empowerment. The Jal Jeevan Mission has truly brought about a positive change, creating a brighter and more prosperous future for the residents of Raghuram village and similar communities across the nation.

Luiytel Nayek with FHTC in her house sharingher story

"Luiytel Nayek, 62 bochorer ek bhidba, amar dui ta meye ke niye ei gram e thaki, jara ek local cha bagane labourer hisebe kaj kore. Amader jibon e boro ek durghotona ghotlo, jokhon amar ekta meye peta roge maray, ebong tar por amar swami o same roge mara jay. Ei sab er karon chhilo, amra je ashwasthho ekta kuar er pani khete pertham, jeta amader dure cha bagane jete hoye chhilo.

Onnek bochhor dhore amra pani niye asubidha chhilo. Kintu jokhon amra amader barite jal jonne konekshan peyechhi, tokhon amader jibon ek notun dike ghure geche. Shudhho pani pete amader swasthyo o samagra kolyane boro poriborton eseche, jar fale amader bhobishwot aro nirapod o sustho hoyeche." "Luiytel Nayek, 62-year-old widow, lives in this village with her two children, both of whom work as labourers in a local tea garden. A great tragedy struck our family when one of our children died from a stomach illness, followed by the death of my husband from the same disease. The cause was the water from an unsanitary well, which we had to fetch from a distant tea garden.

For many years, we suffered from water-related challenges. However, after we received a drinking water connection at home, our lives took a new turn. The availability of clean water has greatly improved our health and overall well-being, ensuring a safer and healthier future for us."
Source: PHE West Bengal

36. "নিরাপদ পানীয় জলের ছোঁয়ায় লুইটেল নায়েকের জীবনে নতুন সূচনা"

৬২ বছর বয়সী লুইটেল নায়েক, তার দুই সন্তানসহ গ্রামে বসবাস করেন। দীর্ঘদিন ধরে পানীয় জলের অভাবে কঠিন সময় পার করেছেন। তার পরিবারে বিপর্যয় নেমে আসে যখন দূরবর্তী চা বাগানের একটি পাতকুয়ো থেকে সংগ্রহ করা জল খেয়ে পেটের রোগে আক্রান্ত হয়ে তাঁর এক সন্তান এবং স্বামী মারা যান।

বাড়িতে নলবাহিত পানীয় জলের সংযোগ আসার পর, লুইটেল নায়েকের গ্রামবাসীদের জীবন বদলে যায়। নিরাপদ ও পরিষ্কার জলের সহজলভ্যতা তাদের শারীরিক ও মানসিক স্বাস্থ্যের উন্নতি করেছে এবং ভবিষ্যতের জন্য একটি নিরাপদ ও স্বাস্থ্যকর পরিবেশ নিশ্চিত করেছে।

একই গ্রামের বাসিন্দা দুর্গী সান্তাল, যিনি গুসুরা পাম্পিং স্টেশনে পাম্প অপারেটর হিসেবে কাজ করেন, অভিজ্ঞতা ভাগ করে বলেন, "পাম্প অপারেটর হিসেবে রঘুরাম গ্রামের আদিবাসী জনগণের জন্য জল সরবরাহ করতে পেরে আমি গর্বিত। বিশেষ করে সুমিতা মুন্ডা এবং তার মেয়েদের জীবনে ইতিবাচক পরিবর্তন আনতে পেরে আমি আনন্দিত।"

এই গ্রামে শুধু পানীয় জলের সংকট দূর হয়নি, বরং মহিলাদের কষ্টও লাঘব করেছে, যারা আগে দীর্ঘ পথ অতিক্রম করে জল আনতে বাধ্য হতেন।

রঘুরাম গ্রামের গল্পটি নলবাহিত পানীয় জল পরিষেবায় গ্রাম জীবনে উন্নতির একটি উজ্জ্বল উদাহরণ। ট্যাপ সংযোগের মাধ্যমে পানীয় জলের সরবরাহ শুধু স্বাস্থ্য ও

নিরাপত্তার উন্নতি আনেনি, বরং সামাজিক ও অর্থনৈতিক উন্নয়নেও অবদান রেখেছে।

সুমিতা মুন্ডার মতো মানুষের জীবনের পরিবর্তন নলবাহিত পানীয় জল পরিষেবার সাফল্যের সাক্ষ্য বহন করে। এটি শুধু গ্রামজীবনের পানীয় জল সংক্রান্ত সংগ্রামের অবসান করেনি, বরং একটি উজ্জ্বল ও সমৃদ্ধ ভবিষ্যৎ তৈরির জন্য নতুন দিশা দেখিয়েছে।

ঘুসুরু পাম্পিং স্টেশনের পাম্প অপারেটর দুর্গী সান্তাল।
সূত্র : জনস্বাস্থ্য কারিগরী বিভাগ, পশ্চিমবঙ্গ সরকার।"

নিজের বাড়িতে নিরাপদ পানীয় জলের সংযোগ পেয়ে লুইটেল নায়েক খুব খুশি
সূত্র : জনস্বাস্থ্য কারিগরী বিভাগ, পশ্চিমবঙ্গ সরকার।"

"আমার দুইটা মেয়ে কে নিয়ে এই গ্রামে থাকি, যারা এক লোকাল চা বাগানে লেবারার হিসেবে কাজ করে। আমাদের জীবনে বড় এক দুর্ঘটনা ঘটল, যখন আমার একটা মেয়ে পেটের রোগে মারা যায়, এবং তার পর আমার স্বামীও একই রোগে মারা যায়। এই সবের কারণ ছিল, আমরা যে অস্বাস্থ্যকর একটা কুয়ার জল খেতে পেতাম, যেটা আমাদের দূরে চা বাগানে যেতে হতো।

অনেক বছর ধরে আমাদের জল নিয়ে অসুবিধা ছিল। কিন্তু যখন আমরা আমাদের বাড়িতে জলের জন্য কল পেয়েছি, তখন আমাদের জীবন এক নতুন দিকে ঘুরে গেছে। শুদ্ধ জল পেতে আমাদের স্বাস্থ্য ও সামগ্রিক কল্যাণে বড় পরিবর্তন এসেছে, যার ফলে আমাদের ভবিষ্যৎ আরও নিরাপদ ও সুস্থ হয়েছে।"

— লুইটেল নায়েক

37. A tribal young girl forms water use committee to address safe keeping of infrastructure.

Siuli Soren, a determined tribal girl in her twenties from Bhagabandpur, has emerged as a beacon of hope in her community. For years, the 59 families of Bhagabandpur village had been grappling with a severe water crisis. With only one functional hand pump serving around 250 people, daily life was a constant struggle.

Women, children, and even the elderly spent hours waiting in line for their turn at the hand pump, which was often unreliable. The lack of water impacted not only health and hygiene but also livelihoods, with farming and other daily activities severely disrupted by the scarcity. This hardship, however, was alleviated under the Jal Jeevan Mission (JJM), which brought the provision of piped water to the village. Siuli, who had seen her family and neighbours suffer for years, was quick to recognize that the success of this new system would depend on the involvement of the local community.

She took it upon herself to inspire and mobilize her fellow villagers to form the Bhagabandpur Jol Byboharkari Samiti, or the Water User Committee, to oversee the safekeeping and proper use of the newly installed facilities.

Siuli's leadership was instrumental in establishing this committee, bringing together villagers who were initially sceptical about managing such a system.

Source: PHE, West Bengal

Siuli's leadership was instrumental in establishing this committee, bringing together villagers who were initially skeptical about managing such a system. The committee was formed with a clear mandate: to ensure the long-term sustainability of the piped water system and to make the community responsible stewards of their water resources. Siuli guided them in raising a small fund from the households, contributing to the maintenance and operation of the water supply system. The committee decided that each household would contribute Rs 35 per month, a modest amount that would help cover any necessary repairs and ensure the system's smooth functioning.

The Bhagabandpur Jol Byboharkari Samiti also took a crucial step by opening a bank account at the Paschim Banga Gramin Bank. The account, with Gangarani Bauri and Hapanbhai Marandi as signatories, allowed for transparent management of the collected funds. The money is carefully managed, with every household contributing regularly to ensure there are sufficient resources for maintaining the system.

Water is now provided twice a day, from 6 am to 7 am in the morning, and again from 5 pm to 6 pm in the evening. This reliable supply has transformed the lives of the villagers, who now have easy access to clean water for drinking, cooking, and cleaning. The community, under Siuli's guidance, also takes responsibility for addressing any issues related to water wastage or breakdowns in the system. Complaints are handled by the water user committee, which ensures swift action is taken to resolve any problems.

Siuli's efforts have not only brought water to the village but also empowered her community to take ownership of the system. The success of the Bhagabandpur Jol Byboharkari Samiti stands as a testament to the power of community-driven initiatives and the leadership of young women like Siuli Soren, who are paving the way for sustainable development in rural India.

A meeting of the water user committee

Source: PHE, West Bengal

37. এক তরুণী তার গ্রামে নলবাহিত পানীয় জল সরবরাহ পরিকাঠামোর সুরক্ষার জন্য জল ব্যবহারকারীদের নিয়ে কমিটি গঠন করল

শিউলি সোরেন, ভগবন্দপুরের একজন দৃঢ়প্রতিজ্ঞ সাঁওতালি তরুণী, যিনি তাঁর গ্রামে এক আশার আলো সঞ্চার করেছেন। বছরের পর বছর ধরে ভগবন্দপুর গ্রামের ৫৯টি পরিবার জলের সংকটে ভুগছিল। প্রায় ২৫০ জন মানুষ একটি চাপাকলের উপর নির্ভরশীল ছিল। মহিলা, শিশু, এমনকি বয়স্করাও জলের জন্য মাঝে মাঝেই এই চাপাকলে অনেকক্ষন অপেক্ষা করতো। জলের অভাব শুধুমাত্র স্বাস্থ্য ও পরিচ্ছন্নতাই নয়, জীবিকাকেও প্রভাবিত করে, কৃষিকাজ এবং অন্যান্য দৈনন্দিন কাজগুলিও জলের অভাবের মারাত্মকভাবে ব্যাহত হয়।

ভগবন্দপুর গ্রামে পানীয় জলের অসুবিধা নলবাহিত পানীয় জল সরবরাহে প্রশমিত হল। শিউলি, যিনি বছরের পর বছর ধরে তার পরিবার এবং প্রতিবেশীদের কষ্ট দেখেছেন, তিনি দ্রুত বুঝতে পেরেছিলেন যে এই নতুন ব্যবস্থার সাফল্য স্থানীয় সম্প্রদায়ের একতার উপরেই নির্ভর করবে। তিনি নতুন স্থাপন করা পানীয় জল বহনকারী নলের ও কলের সুরক্ষা এবং সঠিক ব্যবহারের তত্ত্বাবধানে ভগবন্দপুর জল ব্যবহারকারী সমিতি গঠনের জন্য তার গ্রামবাসীদের অনুপ্রাণিত ও সংগঠিত করার জন্য পদক্ষেপ গ্রহণ করেন।

শিউলির নেতৃত্ব এই কমিটি গঠনে সহায়কের ভূমিকা পালন করেছিল, গ্রামবাসীদের একত্রিত করেছিল যারা প্রাথমিকভাবে এই ধরনের ব্যবস্থা পরিচালনার বিষয়ে সন্দিহান ছিল। কমিটি একটি স্পষ্ট উদ্দেশ্যে গঠিত হয়েছিল: নলবাহিত পানীয় জল সরবরাহ ব্যবস্থার স্থায়িত্ব নিশ্চিত করা এবং সম্প্রদায়কে তাদের জলসম্পদের দায়িত্বশীল করা। শিউলি তাদের পরিবার থেকে একটি ক্ষুদ্র তহবিল সংগ্রহ করে জল সরবরাহ ব্যবস্থার রক্ষণাবেক্ষণ ও পরিচালনায় অবদান রাখতে সহায়তা করল।

শিউলির নেতৃত্ব এই কমিটি গঠনে সহায়ক ভূমিকা পালন করেছিল, গ্রামবাসীদের একত্রিত করেছিল যারা প্রাথমিকভাবে এই ধরনের ব্যবস্থা পরিচালনার বিষয়ে সন্দিহান ছিল।
সূত্র: পিএইচই পশ্চিমবঙ্গ

কমিটি সিদ্ধান্ত নিয়েছে যে প্রতিটি পরিবার প্রতি মাসে ৩৫ টাকা অবদান করবে, একটি সামান্য পরিমাণ যা প্রয়োজনীয় মেরামত কভার করতে এবং নলবাহিত পানীয় জল সরবরাহ ব্যবস্থার মসৃণ কার্যকারিতা নিশ্চিত করবে।

ভগবন্দপুর জল ব্যবহারকারী সমিতি পশ্চিমবঙ্গ গ্রামীণ ব্যাঙ্কে অ্যাকাউন্ট খোলার একটি গুরুত্বপূর্ণ পদক্ষেপ নিল। গঙ্গারানি বাউরি এবং হাপনভাই মারান্ডির নাম স্বাক্ষরকারী হিসাবে অ্যাকাউন্টটিতে সংগৃহীত তহবিলের স্বচ্ছ ব্যবস্থাপনার জন্য কমিটি দ্বারা অনুমোদিত হলো। এই ব্যবস্থাপনা বজায় রাখার জন্য ও পর্যাপ্ত সংস্থান রয়েছে তা নিশ্চিত করতে প্রতিটি পরিবার নিয়মিত অবদান দেয় যা যত্ন সহকারে কমিটি দ্বারা পরিচালিত হয়।

এখন দিনে দুবার, সকাল ৬টা থেকে সকাল ৭টা এবং আবার বিকেল ৫টা থেকে সন্ধ্যা ৬টা পর্যন্ত পানীয় জল সরবরাহ করা হয়। এই নির্ভরযোগ্য সরবরাহ গ্রামবাসীদের জীবনকে বদলে দিয়েছে, যারা এখন পানীয় জল, রান্না এবং অন্যান্য কাজের জন্য পেয়েছে। শিউলির নির্দেশনায় তাঁর গ্রামের মানুষ, পানীয় জলের অপচয় বা কল ভাঙা সংক্রান্ত যে কোনও সমস্যার সমাধানের দায়িত্বও নেয়। অভিযোগগুলি জল ব্যবহারকারী কমিটি দ্বারা পরিচালিত হয়, যা নিশ্চিত করে যে কোনও সমস্যা সমাধানের জন্য দ্রুত পদক্ষেপ নেওয়া হয়।

শিউলির প্রচেষ্টা তাঁর গ্রামে সিস্টেমের দীর্ঘস্থায়ী হওয়ার সুযোগ দিয়েছে। ভগবন্দপুর জল ব্যবহারকারী সমিতির সাফল্য মানুষের একটা ও উদ্যোগ এবং শিউলি সোরেনের মতো তরুণ মহিলাদের নেতৃত্বের প্রমাণ হিসাবে দাঁড়িয়েছে, যারা গ্রামীণ ভারতে উন্নয়নের পথ প্রশস্ত করছে।

পানি ব্যবহারকারী কমিটির সভা
সূত্র: পিএইচই পশ্চিমবঙ্গ

38. From Struggle to Strength: Lakshmi Murmu's Journey with the Jal Jeevan Mission

Lakshmi Murmu's journey from hardship to prosperity is a testament to the transformative power of the Jal Jeevan Mission. Lakshmi's early years were marked by adversity as she tirelessly fetched water from a distant stream to sustain her family. With limited resources, she earned by collecting leaves from the jungle, facing each day with unwavering determination As her family grew, so did her responsibilities, and the drying stream compounded her challenges.However, the tide began to turn when the Jal Jeevan Mission brought water directly through FHTC to her doorstep. With this newfound accessibility, Lakshmi's burden eased, allowing her to focus on expanding her leaf-selling business. Empowered by the mission's impact, Lakshmi's burden eased and hopes renewed with faith in the government. Today, Lakshmi dreams of a brighter future, filled with self-reliance and better opportunities for her family. Her story mirrors countless others across villages, where the Jal Jeevan Mission has illuminated paths once shrouded in darkness. Through tireless efforts, the mission has quenched thirst and nurtured dreams, paving the way for a brighter tomorrow.

Lakshmi Murmu's journey is a testament to the transformative power of the Jal Jeevan Mission, turning adversity into opportunity and illuminating lives with the promise of a better future.

Today, Village Moubellia is a testament to the transformative power of the Jal Jeevan Mission. What began as a dream is now a reality, ushering in a new era of prosperity and well-being for its residents. As the taps continue to flow with clean water, the story of Village Moubellia serves as a shining example of how access to water can truly change lives and uplift communities.

Lakshi Murmu with her FHTC.
Source: PHE, West Bengal

Excited children running through Moubelia village spreading news that water is coming from the taps!
Source: PHE, West Bengal

Moubelia PWSS
Source: PHE, West Bengal

38. "লক্ষ্মী মুর্মুর জীবনে নিরাপদ পানীয় জলের অভাবের কষ্ট দূর হওয়া গ্রাম জীবনের উন্নতির লক্ষ্য অর্জনের একটি বাস্তব প্রমাণ।"

লক্ষ্মীর জীবন প্রতিকূলতা ও সংগ্রামের, তাকে দূরবর্তী নদী থেকে অনেক পরিশ্রমে জল বয়ে আনতে হতো। প্রতিদিন জঙ্গলে পাতা সংগ্রহ করে জীবিকা নির্বাহ করতো। তার পরিবারে সদস্য সংখ্যা বৃদ্ধির সঙ্গে তার দায়িত্বও বাড়ছিল এবং গ্রীষ্মকালে শুকিয়ে যাওয়া নদী তার সমস্যাগুলো আরও কঠিন করে তুলছিল। তবে, নলবাহিত পানীয় জল পরিষেবায় সরাসরি বাড়িতেই পরিস্রুত পানীয় জল পাওয়ার সুবিধা শুরু হওয়ার পর লক্ষ্মীর বোঝা লাঘব হয়। এই প্রকল্প তাকে ভরসা যোগায়, যেখানে তার পরিবারের জন্য আরো উন্নত সুযোগের আশা রয়েছে। নলবাহিত পানীয় জলের পরিষেবা শুধুমাত্র মানুষের তৃষ্ণা নিবারণ করেনি, বরং এটি মানুষের স্বপ্নকে বাঁচিয়ে রেখেছে, এবং উজ্জ্বল আগামীর পথ প্রশস্ত করেছে।

লক্ষ্মীর যাত্রা জল জীবন মিশনের রূপান্তরকারী শক্তির একটি জীবন্ত প্রমাণ, যা প্রতিকূলতাকে সুযোগে পরিণত করে এবং উন্নত ভবিষ্যতের প্রতিশ্রুতি দিয়ে জীবনকে আলোকিত করেছে।

আজ, গ্রাম মৌবেলিয়ায় পরিস্রুত নলবাহিত পানীয় জল পরিষেবার এক আশার আলোর সঞ্চার করেছে । পানীয় জলের পরিষেবা কিভাবে গ্রাম জীবন পরিবর্তন করতে পারে মৌবেলিয়া গ্রাম তার এক উজ্জ্বল উদাহরণ।

লক্ষ্মী মুর্মু তার বাড়িতেই ট্যাপকল থেকে পানীয় জল কলসিতে ভরছেন

সূত্র : জনস্বাস্থ্য কারিগরী বিভাগ, পশ্চিমবঙ্গ সরকার।"

মউবেলিয়া গ্রামের উল্লসিত শিশুরা দৌড়ে খবর দিচ্ছে "ট্যাপ থেকে জল আসতে শুরু করেছে!"

সূত্র : জনস্বাস্থ্য কারিগরী বিভাগ, পশ্চিমবঙ্গ সরকার।"

মউবেলিয়া PWSS

সূত্র : জনস্বাস্থ্য কারিগরী বিভাগ, পশ্চিমবঙ্গ সরকার।"

39. Raghuramer Chhat Village: A Journey to Empowerment with Jal Jeevan Mission.

In the tranquil hills of Darjeeling district lies Raghuramer Chhat Village, a small community of 109 tribal residents nestled within the lush Vijaynagar Tea Garden. The events of the past year, marked by the COVID-19 pandemic and subsequent lockdowns, brought an unexpected stillness to the area. However, it also ushered in new challenges, notably the intrusion of wild animals like elephants and leopards, posing a threat to the safety of villagers and their livestock.

Compounding these hardships was a severe water crisis within the tea garden. With just two tube wells and dry spells during the summer months, the villagers had to embark on long journeys along desolate paths to fetch water. This not only consumed their precious time but also perpetuated economic struggles.

However, a ray of hope dawned when the Jal Jeevan Mission extended its reach to Raghuramer Chhat Village. This initiative brought about a transformative change as tap connections were provided to all 21 families, delivering safe and potable water right to their doorsteps.

The impact was profound – villagers no longer had to venture far for water, fear of encounters with wild animals diminished significantly.

Mrs. Dipti Xaxa, Mrs. Manjita Nayek, Mrs. Sarita Oroan, and Mrs. Sampa Oroan, along with other villagers, expressed their profound gratitude to the government for this life-altering intervention. With clean water readily available, the villagers could now focus on their livelihoods, resulting in an overall improvement in their standard of living. Furthermore, the burden of water-related chores significantly reduced, empowering women and children to engage in more productive pursuits.

Dipti Xaxa relieved to receive FHTC connection at her doorstep.
Source: PHE, West Bengal

Before having a FHTC connection, Urmila Oroan, a 32-year-old resident of Raghuramer Chhat Village, endured the arduous task of traveling long distances to fetch water from wells and tea garden tanks. Unreliable water sources led to frequent illnesses, financial difficulties, and her children missing school. However, with the provision of clean drinking water in her home, her family's worries were resolved. Her children now attend school regularly, and the family enjoys a healthier and worry-free lifestyle.

Mrs. Dipti Xaxa, Mrs. Manjita Nayek, Mrs. Sarita Oroan, Mrs. Sampa Oroan, and Urmila Oroan have pledged to turn off taps after use, prioritize cleanliness, and avoid wastage of water. Together, they set an example for responsible water usage, ensuring a sustainable future for their community.

The success stories of Raghuramer Chhat Village underscore the importance of water conservation and responsible usage. With access to clean water, the villagers have learned to appreciate this precious resource even more and are actively promoting its responsible use within their community.

Raghuramer Chhat Village stands as a shining example of how the Jal Jeevan Mission is not only providing clean water but also empowering rural communities, enhancing their quality of life, and fostering a sense of security and well-being amidst the breathtaking landscapes of Darjeeling.

Urmila Oroan – Embracing a Healthier Lifestyle
Source: PHE, West Bengal

3 9 . "রঘুরাম এর ছাত গ্রাম: নলবাহিত পানীয় জল পরিষেবার মাধ্যমে জীবনযাত্রার পরিবর্তন"

দার্জিলিং জেলার শান্ত পাহাড়গুলির মধ্যে অবস্থিত রঘুরাম এর ভিজয়নগর চা বাগানের ভিতরে ছোট্ট ছাত গ্রামে ১০৯টি ওঁরাও সম্প্রদায়ের মানুষের বাস । কোভিড-১৯ মহামারী এবং পরবর্তী লকডাউনের ফলে এই গ্রাম এক অপ্রত্যাশিত স্থিরতা নিয়ে আসে। তবে, এটি নতুন সমস্যাও নিয়ে আসে, বিশেষ করে বন্য পশু যেমন হাতি এবং চিতাবাঘের আগমন, যা গ্রামবাসী এবং তাদের পশুসম্পদের নিরাপত্তা বিঘ্নিত করছিলো।

এই কঠিন পরিস্থিতির সাথে যোগ হয়েছিল চা বাগানে একটি গুরুতর জল সংকট। মাত্র দুটি টিউবওয়েল এবং গরম মাসগুলিতে জলকষ্টের কারণে, গ্রামবাসীদের দীর্ঘ এবং নির্জন পথ দিয়ে জল নিয়ে আসতে হত। এটি শুধু তাদের সময়ই নষ্ট করত না, বরং জীবন সংগ্রামকেও আরও কঠিন করে তুলেছিল।

তবে, একটি আশার রশ্মি দেখা দেয় যখন নলবাহিত পানীয় জল পরিষেবা রঘুরাম এর ছাত গ্রামে পৌঁছায়। এই উদ্যোগটি গ্রামে পরিবর্তন নিয়ে আসে, কারণ ২১টি পরিবারের প্রতিটিতে ট্যাপ সংযোগ প্রদান করা হয়, যা তাদের দরজায় নিরাপদ পানীয় জল সরবরাহ করে। প্রভাব ছিল গভীর – গ্রামবাসীদের আর দূরে যেতে হত না জল সংগ্রহ করতে, বন্য পশুদের সাথে মুখোমুখি হওয়ার ভয় উল্লেখযোগ্যভাবে কমেও গিয়েছিল।

শ্রীমতি দীপ্তি সাক্সা, শ্রীমতি মঞ্জিতা নায়েক, শ্রীমতি সারিতা ওরাঁও এবং শ্রীমতি সাম্পা ওরাঁও, অন্যান্য গ্রামবাসীদের সাথে মিলিয়ে, এই জীবন পরিবর্তনকারী হস্তক্ষেপের জন্য সরকারকে তাদের গভীর কৃতজ্ঞতা জানিয়েছেন। পরিষ্কার জল সহজলভ্য হওয়ায়, গ্রামবাসীরা এখন তাদের জীবিকা উপার্জনে মনোযোগ দিতে পারে, যার ফলে তাদের জীবনযাত্রার মানে সামগ্রিক উন্নতি হয়েছে। তাছাড়া, জল বয়ে আনার বোঝা উল্লেখযোগ্যভাবে কমে গেছে, যা মহিলাদের আরও উৎপাদনশীল কাজে অংশগ্রহণের সুযোগ দিয়েছে। কলের সংযোগ পাওয়ার আগে, ৩২ বছর

দীপ্তি জাক্সা তার দোরগোড়ায় FHTC সংযোগ পেয়ে স্বস্তি পেয়েছেন।
সূত্র: পিএইচই পশ্চিমবঙ্গ

বয়সী উর্মিলা ওরাঁও, এই গ্রামেরই বাসিন্দা, দীর্ঘ দূরত্ব পাড়ি দিয়ে কুয়া এবং চা বাগানের ট্যাংক থেকে জল বয়ে আনতেন । যার কারণে প্রায়ই অসুস্থতা ভুগতেন এবং তাঁর শিশুরা স্কুলে যেতে পারতো না। তবে, বাড়িতে পরিস্রুত নলবাহিত পানীয় জল সরবরাহ পাওয়ার পর, তাঁর পরিবারের চিন্তা দূর হয়েছে। বাচ্ছারাও এখন নিয়মিত স্কুলে যায়।

শ্রীমতি দীপ্তি সাক্সা, শ্রীমতি মঞ্জিতা নায়েক, শ্রীমতি সারিতা ওরাঁও, শ্রীমতি সাম্পা ওরাঁও, এবং উর্মিলা ওরাঁও প্রতিশ্রুতি দিয়েছেন যে তারা ব্যবহারের পর ট্যাপ বন্ধ করবেন, জল অপচয় করবেন না । একসাথে, তারা দায়িত্বশীলতাঁর উদাহরণ স্থাপন করেছেন, যা তাদের গ্রামের জন্য একটি সুনিশ্চিত ভবিষ্যৎ নিশ্চিত করবে।

গ্রামবাসীরা এই মূল্যবান সম্পদটির আরও বেশি মূল্য বুঝতে শিখেছে এবং তারা তাদের সম্প্রদায়ে এর দায়িত্বশীল ব্যবহার প্রচার করছে। রঘুরাম এর ছাত গ্রামটি একটি উজ্জ্বল উদাহরণ হিসেবে দাঁড়িয়ে আছে যে, কিভাবে নলবাহিত পানীয় জল পরিষেবা শুধুমাত্র জল সরবরাহ করছে না, বরং গ্রামীণ সম্প্রদায়গুলোকে একত্রিত করছে, তাদের জীবনযাত্রার মান উন্নত করছে এবং দার্জিলিংয়ের অপূর্ব প্রাকৃতিক দৃশ্যের মধ্যে নিরাপত্তা এবং সুস্থতার অনুভূতি সৃষ্টি করছে।

উর্মিলা ওরান - স্বাস্থ্যকর জীবনধারা গ্রহণ করা
উৎস: পিএইচই পশ্চিমবঙ্গ

Tamil Nadu

40. Smt. Navaneedham's Story: A New Dawn for Kannapanthal

In Kannapanthal Village of Tiruvannamalai District, dawns used to be anything but tranquil. The faint light of morning would bring the sound of clinking pots and hurried footsteps, as women began to gather by the lone public tap that was their only source of water. Among them was Smt. Navaneedham, a woman known for her patience but who, like many others, was burdened by the daily struggle to secure her family's water supply. This routine was no new beginning but a relentless cycle, marked by waiting, worry, and sometimes, frustration.

Navaneedham standing aside her functional tao connections.
Source: TWAD, Tamil Nadu

For Navaneedham, these early hours were precious, yet they were consumed in a line that rarely moved as quickly as she wished. She would secure her spot before the tap, often standing for hours in the sweltering heat or biting chill. As the morning wore on, tension inevitably filled the air. "You took more than your share!" someone would shout, and tempers would flare. Amid the clamour of arguments over water, Navaneedham's patience would be tested, but she had little choice. Her family depended on the limited water she managed to collect, which she would carefully ration to make it last.

Day after day, Navaneedham's schedule revolved around water collection, affecting her ability to devote time to her family and livelihood. The hours spent at the tap cost her the chance to tend to household chores, nurture her children, and explore ways to earn a modest income. This struggle defined her mornings, transforming what should have been a peaceful time into one of stress and urgency. Her dreams for a better life were often clouded by the immediate need for water, a necessity she could not ignore.

"Munna naalu mani neram thanni ku paathirundhene. Ippo, kudineer enga veetukku varudhu. Ulagame maari pochu nu nenakren," Navaneedham sonnal.

"Before, I used to wait for water for four hours. Now, clean drinking water comes to our home. It feels like the world has changed," said Navaneedham.

Then, one day, news spread through the village that the Jal Jeevan Mission (JJM) was coming to Kannapanthal. There was skepticism at first; promises of change were not new to the villagers. However, as work began and water connections were installed across households, the community started to feel hope blossom. For Navaneedham, the moment was life-changing when the JJM team arrived at her doorstep and installed a tap right outside her home. She could scarcely believe it—after years of struggle, she finally had easy access to water without waiting in line or fighting for her share.

Today, Navaneedham's mornings look very different. She wakes with a renewed sense of calm, knowing that the reliable flow of clean water is just steps away. The time she once spent waiting in frustration is now filled with the joys of family life and the pursuit of new interests. Her children have noticed the change, too; their mother is less anxious, more present, and able to devote herself to their needs. Navaneedham is deeply grateful for this transformation.

"I can finally focus on my family without worrying about water," she says, her face lit with a smile of quiet relief. The Jal Jeevan Mission has brought more than water to her home—it has brought freedom and peace, a chance for a life that's not defined by scarcity but by possibility. For the first time in years, Navaneedham feels hopeful, her days no longer dominated by worry, but filled with the promise of a brighter future.

40. திருமதி நவநீதம் அவர்களின் கதை: கண்ணபந்தலுக்கு ஒரு புதிய விடியல்

திருவண்ணாமலை மாவட்டம் கண்ணப்பந்தல் கிராமத்தின் விடியல் எப்போதும் அமைதியாக இருக்கும். காலையினல் மங்கலான வெளிச்சத்தில் பானைகளின் கிலுகிலுப்பும் அவசரமான காலடி ஓசையும் கேட்கும். தங்களுக்கு தண்ணீர் ஆதாரமாக இருந்த ஒரே பொதுக் குழாயருகே பெண்கள் கூடத் தொடங்குவார்கள். அவர்களில் திருமதி நவநீதம் என்ற பெண்மணியும் ஒருவர், பொறுமைக்குப் பெயர் பெற்றவர், ஆனால் பலரைப் போலவே, தனது குடும்பத்தின் தண்ணீர் விநியோகத்தைப் பெறுவதற்கான அன்றாட போராட்டத்தால் சுமையாக இருந்தார். இந்த வழக்கம் புதியதல்ல. காத்திருப்பு, கவலை மற்றும் சில நேரங்களில் விரக்தி ஆகியவை தொடர்ந்து காணப்பட்டது.

நவநீதமைப் பொறுத்தவரை, இந்த அதிகாலை நேரங்கள் விலைமதிப்பற்றவை, ஆனால் அவை அவள் விரும்பியபடி விரைவாக நகராத ஒரு வரிசையில் நகர்த்தப்பட்டன. சுட்டெரிக்கும் வெயிலிலும், குளிரிலும் மணிக்கணக்காக நின்று கொண்டிருப்பாள். பொழுது விடிந்ததும் அவர்களது பதற்றம் காற்றை நிறைத்தது. "நீ உன் பங்கை விட அதிகமாக எடுத்துக்கொண்டாய்! " என்று யாராவது கத்துவார்கள், கோபம் கொப்பளிக்கும். தண்ணீருக்கான வாக்குவாதங்களின் கூச்சலுக்கு மத்தியில், நவநீதத்தின் பொறுமை சோதிக்கப்படும், ஆனால் அவர்களுக்கு வேறு வழியில்லை.

அவரது குடும்பம் அவர் சேகரிக்க முடிந்த மட்டுப்படுத்தப்பட்ட தண்ணீரை நம்பியிருந்தது, அதை அவர் நீடிக்க கவனமாக பங்கிட்டார். நாளுக்கு நாள், நவநீதத்தின் அட்டவணை நீர்சேகரிப்பைச் சுற்றியே இருந்தது, இது அவரது குடும்பம் மற்றும் வாழ்வாதாரத்திற்காக நேரத்தை ஒதுக்கும் திறனை பாதித்தது. குழாயில் செலவழித்த மணிநேரங்கள் வீட்டு வேலைகளைக் கவனிக்கவும், தனது குழந்தைகளை வளர்க்கவும், ஒரு சாதாரண வருமானத்தை ஈட்டுவதற்கான வழிகளை ஆராயவும் அவளுக்கு வாய்ப்பளித்தன. இந்தப் போராட்டம் அவளுடைய காலைகளை வரையறுத்தது, அமைதியான நேரமாக இருந்திருக்க வேண்டியதை மன அழுத்தம் மற்றும் அவசரம் நிறைந்த ஒன்றாக மாற்றியது. ஒரு சிறந்த வாழ்க்கைக்கான அவளுடைய கனவுகள் பெரும்பாலும் தண்ணீரின் உடனடி தேவையால் மேகமூட்டமாக இருந்தன, அவளால் புறக்கணிக்க முடியாத ஒரு தேவை.

பின்னர், ஒரு நாள், வீடுதோறும் குடிநீர் திட்டம் கண்ணபந்தல் கிராமத்தில் செயல்படுத்தப்போவதாக கிராமம் முழுவதும் செய்தி பரவியது. முதலில் சந்தேகம் இருந்தது; மாற்றத்திற்கான வாக்குறுதிகள் கிராமவாசிகளுக்கு புதிதல்ல. இருப்பினும், பணிகள் தொடங்கி, வீடுகள் முழுவதும் நீர் இணைப்புகள் நிறுவப்பட்டபோது, சமூகத்தில் நம்பிக்கை மலர்வதை உணரத் தொடங்கியது. நவநீதமைப் பொறுத்தவரை, வீடுதோறும் குடிநீர் திட்ட குழு அவரது வீட்டு வாசலுக்கு வந்து அவரது வீட்டிற்கு வெளியே ஒரு குழாயை நிறுவிய தருணம் அவரது வாழ்க்கையை மாற்றியது. அவர்களால் அதை நம்ப முடியவில்லை - பல வருட போராட்டத்திற்குப் பிறகு, வரிசையில் காத்திருக்காமல் அல்லது தனது பங்கிற்காக சண்டையிடாமல் இறுதியாக அவளுக்கு எளிதாக தண்ணீர் கிடைத்தது.

இன்று நவநீதத்தின் காலை நேரம் மிகவும் வித்தியாசமாக இருக்கிறது. சுத்தமான தண்ணீரின் நம்பகமான ஓட்டம் சில அடிகள் தொலைவில் இருப்பதை அறிந்து, அமைதியின் புதிய உணர்வுடன் அவள் எழுந்தாள். அவள் ஒரு காலத்தில் விரக்தியுடன் காத்திருந்த நேரம் இப்போது குடும்ப வாழ்க்கையின் மகிழ்ச்சிகள் மற்றும் புதிய ஆர்வங்களைத் தேடுவதால் நிரப்பப்பட்டுள்ளது. அவளுடைய குழந்தைகளும் மாற்றத்தைக்

கவனித்திருக்கிறார்கள்; அவர்களின் தாய் குறித்த கவலை, மற்றும் அவர்களின் தேவைகளுக்கு தன்னை அர்ப்பணிக்க முடிகிறது. இந்த மாற்றத்திற்கு நவநீதம் ஆழ்ந்த நன்றியைத் தெரிவித்துக் கொண்டார்கள். "தண்ணீரைப் பற்றி கவலைப்படாமல் இறுதியாக என் குடும்பத்தின் மீது கவனம் செலுத்த முடிகிறது", என்று அவர் கூறுகிறார், அவரது முகம் அமைதியான நிம்மதியின் புன்னகையால் ஒளிர்ந்தது. வீடுதோறும் குடிநீர் அவரது வீட்டிற்கு தண்ணீரை விட சுதந்திரத்தையும் அமைதியையும் அதிகமாக கொண்டு வந்துள்ளது. பற்றாக்குறையால் வரையறுக்கப்படாத ஆனால் சாத்தியத்தால் வரையறுக்கப்பட்ட ஒரு வாழ்க்கைக்கான வாய்ப்பு. பல ஆண்டுகளில் முதல் முறையாக, நவநீதம் நம்பிக்கையுடன் உணர்கிறார், அவரது நாட்கள் இனி கவலையால் ஆதிக்கம் செலுத்தவில்லை, ஆனால் பிரகாசமான எதிர்காலத்தின் வாக்குறுதியால் நிரப்பப்பட்டுள்ளன.

நவநீதம் வீடுதோறும் குடிநீர் திட்டத்தின் கீழ் வழங்கப்பட்டுள்ள குடிநீர் குழாய் இணைப்பின் அருகில் நிற்கிறார்.

" முன்ன நாளு மணி நேரம் தண்ணிக்கு காத்திருந்தேன். இப்போ, குடிநீர் எங்க வீட்டுக்கே வருது. உலகமே மாறி போச்சுன்னு நெனக்கறன்," - நவநீதம்

41. Smt. Vanitha's Story: A Journey to Stability

In Kannapanthal Village, a quiet settlement in Tiruvannamalai District, Smt. Vanitha's life was a constant balancing act. A devoted wife and mother, she also worked as a farm labourer, earning the wages that kept her family afloat and supported her children's schooling. Her day began before dawn, yet each morning brought the same obstacle: water scarcity. The single public tap in the village was a lifeline, but it was also the source of endless frustration and struggle. Vanitha would wake early, rushing to the tap with hopes of filling her pots quickly, but she would often find a crowd already gathered. The line moved slowly, and tensions simmered as women, just like her, vied for their share of the limited water. Arguments were common, and disputes over who would fill their pots next delayed everyone further. "Every time I got delayed, it was my family and my wages that suffered," Vanitha explains, recalling the countless hours she lost at the public tap. For a working mother like her, time was everything.

On days when the wait dragged on, Vanitha faced difficult choices. Sometimes, she had to rush to the fields without sufficient water, forcing her to skip meals to avoid being late. This affected her health and her strength to work through long hours in the fields. Her children, too, felt the impact, often hurrying to school without breakfast or arriving late because they waited with her for water. The relentless daily struggle took a toll on her entire family, eroding time that could have been spent nurturing them or focusing on work. Then, the Jal Jeevan Mission (JJM) arrived in Kannapanthal. At first, Vanitha hesitated to believe that things would change—promises of improvement had come before. But as installation teams set to work and household taps began to appear, hope stirred in the community. When the JJM team finally came to Vanitha's home and installed a tap just outside her door, the relief was overwhelming. Her own water source, right at her doorstep—she could barely believe it.

Today, Vanitha's life is transformed. Her mornings, once filled with anxiety and haste, are now calm and predictable. She no longer has to wake in the dark to secure a spot at the public tap; she simply fills her pots with clean water outside her home. The hours she previously spent waiting are now dedicated to her family and her work. "With the time saved, I'm back in the fields on time, and my children are in school promptly," she beams. Her family's health has improved, as she no longer has to skip meals or rush through cooking.

For Vanitha, the Jal Jeevan Mission has brought stability, allowing her to work without worry and to tend to her family without interruption. The reliable water connection has given her back her mornings and her peace of mind. Each day, she sees her children thriving, her work progressing, and her family's well-being growing stronger. The change has been profound—a simple tap has granted her the freedom to live, work, and care for her loved ones without the ever-present worry of water scarcity.

Vanitha's life is transformed after receiving the tap connection. she shares her story with joy

"Munna ellam kaalai thodangaradhe oru kavalaiya irundhudhu. Ippo, veettukku thanni kidaikkaradhu romba periya maariyadhai. Naal velaiya seekirama mudichuttu, pasanga schoolukku poiduraanga," Vanitha magizhchiya sonnal.

(*"Mornings used to begin with so much anxiety. Now, having water at home has made a huge difference. I finish my work on time, and my children leave for school promptly,"* said Vanitha with joy.)

41. திருமதி வனிதாவின் கதை: ஸ்திரத்தன்மையை நோக்கிய பயணம்

திருவண்ணாமலை மாவட்டத்தில் உள்ள அமைதியான குடியிருப்பான கண்ணப்பந்தல் கிராமத்தில், திருமதி வனிதாவின் வாழ்க்கை ஒரு நிலையான சமநிலைப்படுத்தும் செயலாக இருந்தது. ஒரு அர்ப்பணிப்புள்ள மனைவி மற்றும் தாயாக, அவர் ஒரு விவசாயத் தொழிலாளியாகவும் பணியாற்றி ஊதியம் பெற்று வந்தார், அந்த ஊதியம் அவரது குடும்பம் மற்றும் அவரது குழந்தைகளின் பள்ளிப் படிப்பை ஆதரித்தது. அவளுடைய நாள் விடிவதற்கு முன்பே தொடங்கிவிடும். ஆனால் ஒவ்வொரு காலையும் தண்ணீர் பற்றாக்குறை தடையைக் கொண்டு வந்தது. கிராமத்தின் ஒற்றை பொதுக் குழாய் ஒரு உயிர்நாடியாக இருந்தது, ஆனால் அதுவே வனிதாவின் வாழ்வில் விரக்தி மற்றும் போராட்டத்தின் காரணமாக இருந்தது. வனிதா அதிகாலையிலேயே எழுந்து குழாயை நோக்கி விரைந்து செல்வார். பானைகளை சீக்கிரம் நிரப்பிவிடலாம் என்ற நம்பிக்கையுடன் இருப்பாள். ஆனால், ஏற்கெனவே கூட்டம் கூடியிருப்பதை அடிக்கடி பார்ப்பாள். வரிசை மெதுவாக நகரும், அவளைப் போலவே பெண்களும் குறைவான தண்ணீரில் தங்கள் பங்கிற்காக போட்டியிடுவதால் அவர்களிடத்தில் தினமும் பதற்றம் அதிகரிக்கும். வாக்குவாதங்கள் பொதுவானவை. அடுத்து யார் தங்கள் பானைகளை நிரப்புவது என்ற சர்ச்சைகள் அனைவரையும் மேலும் தாமதப்படுத்தின. " ஒவ்வொரு முறையும் தனக்கு தாமதமாகும்போது, தனது குடும்பமும், தினசரி ஊதியமும் பாதிக்கப்படுகிறது" என்று, பொதுக் குழாயில் தான் இழந்த எண்ணற்ற மணிநேரங்களை நினைவு கூர்ந்தார் வனிதா. அவளைப் போன்ற வேலைக்குச் செல்லும் தாய்க்கு நேரம்தான் எல்லாமே. காத்திருப்பு அதிகமான நாட்களில், வனிதா கடினமான சோதனைகளை எதிர்கொண்டார். சில நேரங்களில், அவர் போதுமான தண்ணீர் இல்லாமல் வயல்களுக்கு விரைந்து செல்ல வேண்டியிருந்தது, தாமதமாக வருவதைத் தவிர்ப்பதற்காக உணவைத் தவிர்க்க வேண்டிய கட்டாயம் ஏற்பட்டது. இது அவரது ஆரோக்கியத்தையும் வயல்களில் நீண்ட நேரம் வேலை செய்யும் வலிமையையும் பாதித்தது. அவரது குழந்தைகளும் அதன் தாக்கத்தை உணர்ந்தனர், பெரும்பாலும் காலை உணவு இல்லாமலும், தண்ணீருக்காக அவருடன் காத்திருந்ததால் தாமதமாக சென்றனர். இடைவிடாத இந்த தினசரி போராட்டம் அவரது முழு குடும்பத்தையும் பாதித்தது, அவர்களை வளர்ப்பதற்கு அல்லது வேலையில் கவனம் செலுத்துவதற்கு செலவிடக்கூடிய நேரத்தை அரித்தது. பின்னர், வீடுதோறும் குடிநீர் திட்டம் கண்ணபந்தல் கிராமத்தில் செயல்படுத்தப்பட்டது. அதனால் தனது நிலை மாறும் என்று நம்ப வனிதா தயங்கினார் - முன்னேற்றத்திற்கான வாக்குறுதிகள் முன்பே வந்திருந்தன. ஆனால் செயல்படுத்தும் முகமை வேலை செய்யத் தொடங்கி, வீட்டுக் குழாய்கள் பதிக்க தொடங்கியபோது, சமூகத்தில் நம்பிக்கை காணப்பட்டது. வீடுதோறும் குடிநீர் திட்டத்தின் முகமை இறுதியாக வனிதாவின் வீட்டிற்கு வந்து அவரது கதவுக்கு வெளியே ஒரு குழாயை நிறுவியபோது கிடைத்த நிம்மதி மிகப்பெரியது. வனிதாவின் வீட்டு வாசலிலேயே சொந்த நீர் ஆதாரம் – அவர்களால் அதை நம்ப முடியவில்லை. இன்று வனிதாவின் வாழ்க்கையில் மாற்றம் ஏற்பட்டுள்ளது. ஒரு காலத்தில் கவலையாலும் அவசரத்தாலும் நிரம்பியிருந்த அவளது காலை நேரம் இப்போது அமைதியாகவும் கணிக்கக்கூடியதாகவும் இருக்கிறது. பொதுக் குழாயில் இடம் பிடிக்க அவர் இனி இருட்டில் எழுந்திருக்க வேண்டியதில்லை; அவர் தனது வீட்டிற்கு வெளியே சுத்தமான தண்ணீரால் தனது பானைகளை நிரப்புகிறாள். முன்பு அவர் காத்திருந்த மணிநேரங்கள் இப்போது அவரது குடும்பத்திற்கும் அவரது வேலைக்கும் அர்ப்பணிக்கப்பட்டுள்ளன. "நேரத்தை மிச்சப்படுத்தியதால், நான் சரியான நேரத்தில் வயல்களுக்கு திரும்புகிறேன், என் குழந்தைகள் சரியான நேரத்தில் பள்ளிக்கு வருகிறார்கள்," என்று அவர் புன்னகைக்கிறார். அவரது குடும்பத்தின் உடல்நிலை மேம்பட்டுள்ளது, ஏனெனில் அவர் இனி உணவைத் தவிர்க்கவோ அல்லது சமையலுக்கு விரைந்து செல்லவோ வேண்டியதில்லை. வனிதாவைப் பொறுத்தவரை, வீடுதோறும் குடிநீர் திட்டம் ஸ்திரத்தன்மையைக் கொண்டுவந்துள்ளது, கவலைப்படாமல் வேலை செய்யவும், அவரது குடும்பத்தை இடையூறு இல்லாமல் கவனிக்கவும் அனுமதித்துள்ளது. உறுதியான நீர் இணைப்பு அவருக்கு இனிமையான காலையையும், மன அமைதியையும் திருப்பித் தந்துள்ளது. ஒவ்வொரு நாளும், தன் பிள்ளைகள் செழிப்பாக வளர்வதையும், பணி முன்னேறுவதையும், தன் குடும்பத்தின் நலன் வலுவாக வளர்வதையும் பார்க்கிறாள். மாற்றம் ஆழமானது - ஒரு எளிய குழாய் இணைப்பு அவளுக்கு வாழ, வேலை செய்ய மற்றும் தண்ணீர் பற்றாக்குறை பற்றிய எப்போதும் இருக்கும் கவலை இல்லாமல் தனது அன்புக்குரியவர்களை கவனித்துக்கொள்வதற்கான சுதந்திரத்தை வழங்கியுள்ளது.

திருமதி. வனிதா ஒரு அர்ப்பணிப்புள்ள மனைவி மற்றும் தாய். அவளுடைய வீட்டில் குடிநீரைப் பெற்ற பிறகு அவளுடைய வாழ்க்கை மகிழ்ச்சியாகவும் எளிதாகவும் மாறிவிட்டது.

" முன்ன ஒரு குடம் தண்ணிக்கு நெறைய சண்டையும், கஷ்டமும், தண்ணிக்கு காத்திருக்க வேண்டும்னு நெனச்சாலே, மனசுல ஒரு பயம் வந்திடும். இப்போ குடிநீர் எங்க வீட்டுக்கு வருது. வேலையும், குடும்பமும் எல்லாம் சரியா நடக்குது," - வனிதா

42. Smt. Meena's Story: A New Mother's Relief

In Kothattai village, nestled in the heart of Cuddalore district, Smt. Meena was navigating the challenges of new motherhood. Balancing the needs of her newborn with household responsibilities was demanding, but water scarcity turned an already difficult time into an unrelenting struggle.

For Smt. Meena, fetching water meant long walks to the nearest public tap, often with her infant in tow. The journey was arduous, and waiting in line under the scorching sun tested her endurance. “Some days, I could barely manage to carry the water home, let alone care for my child properly,” she recalls. The lack of a reliable water source left her drained, affecting her ability to recover post-delivery and give her baby the care he needed.

Amid this challenge, the Jal Jeevan Mission brought hope to her village. When the installation team arrived, Smt. Meena watched with cautious optimism as household taps were connected across her community. When her own home received its tap, just steps from her kitchen, she felt an immense burden lift.

Life is now markedly different for Smt. Meena. She no longer has to spend hours fetching water or worry about running out during critical moments. With a reliable water supply at her doorstep, she can focus on nurturing her child and taking care of herself. “I feel healthier and more at ease. My baby is thriving, and I have time to rest and recover,” she shares with a grateful smile.

The transformation has been profound. A simple tap has not only provided water but has also restored Smt. Meena’s ability to live her life with dignity and care for her family without compromise. In Kothattai, the Jal Jeevan Mission has brought not just water but also the gift of time and well-being to a new mother and her child.

Meena’s life is transformed after receiving the tap connection. she shares her story with joy

42. திருமதி. மீனாவின் கதை - ஒரு தாயின் சுமை நீங்கியது

கடலூர் மாவட்டத்தின் மையப்பகுதியில் அமைந்துள்ள கொத்தட்டை கிராமத்தில் திருமதி.மீனா என்பவர் தனக்கு குழந்தை பிறந்துள்ளதால் ஒரு புதிய தாயின் சவால்களை எதிர்கொண்டார். தனது பிறந்த குழந்தையின் தேவைகளையும் வீட்டு பொறுப்புகளையும் கவனிப்பதற்கு மிகவும் கடினமாக இருந்தது. மேலும் தண்ணீர் பற்றாக்குறை ஏற்கனவே கடினமான நேரத்தை இடைவிடாத போராட்டமாக மாற்றியது.

திருமதி. மீனா தண்ணீர் எடுப்பதற்காக அருகிலுள்ள பொதுக்குழாய்க்கு நீண்ட தூரம் நடந்து செல்லும்போது பெரும்பாலும் தனது குழந்தையையும் சுமந்து செல்ல வேண்டிய நிலை இருந்தது. பயணம் மிகவும் கடினமான நிலையிலும் கொளுத்தும் வெயிலில் வரிசையில் காத்திருந்து தண்ணீர் பிடிப்பது அவரது சகிப்புத்தன்மையை சோதித்தது. சில நாட்களில் தன் குழந்தையை சரியாக பராமரிப்பது ஒருபுறமிருக்க வீட்டிற்கு தண்ணீர் எடுத்து செல்வது கூட என்னால் முடியவில்லை என அவர் மனதார உணர்ந்தார். போதுமான நீர் ஆதாரம் இல்லாத நிலையில் குழந்தை பிறந்த தனது உடல் நிலைமையை கவனிக்கவும் பிறந்த குழந்தைக்கு தேவையான பராமரிப்பை வழங்கவும் அவரால் இயலாத நிலை ஏற்பட்டது.

இத்தகைய சவாலுக்கு மத்தியில் வீடுதோறும் குடிநீர் திட்டம் அவளது கிராமத்திற்கு நம்பிக்கையை அளித்தது. தண்ணீர் குழாய் அமைக்க குழு வந்தபோது திருமதி, மீனா தனது கிராமம் முழுவதும் ஒவ்வொரு வீட்டிற்கும் தண்ணீர் குழாய்கள் இணைக்கப்படுவதை நம்பிக்கையுடன் பார்த்தார். சமையலறையிலிருந்து சிறு அடிகள் தொலைவிலேயே தனது சொந்த வீட்டிற்கு குழாய் மூலம் பாதுகாக்கப்பட்ட குடிநீர் வழங்கியதால் மிக பெரிய மனச்சுமை நீங்கியதாக உணர்ந்தாள்.

தற்போது திருமதி.மீனாவின் வாழ்க்கையில் தண்ணீர் எடுப்பதற்காக மணிக்கணக்கில் நேரம் செலவிடாமலும் மற்றும் முக்கியமான நேரங்களில் தண்ணீர் தீர்ந்துவிடுமோ என்ற பயமில்லாத நிலையில் வாழ்க்கை மாறியது. அவரது வீட்டு வாசலில் குடிநீர் விநியோகம் வழங்கப்பட்ட நிலையில் அவள் தனது உடல்நலத்தையும் கவனித்துக்கொள்ளவும், குழந்தையை வளர்ப்பதிலும் கவனம் செலுத்த போதுமான நேரம் கிடைத்தது. மேலும் தான் ஆரோக்கியமாகவும் நிம்மதியாகவும் இருக்கிறேன். மேலும் எனது குழந்தையும் நன்கு வளர்ந்து வருகிறது. தான் ஓய்வெடுக்க போதுமான நேரம் இருக்கிறது என நன்றியுடனும் புன்னகையுடனும் பகிர்ந்து கொள்கிறார்.

தான் குழாய் தண்ணீரை எளிதாக பயன்படுத்துவது மட்டுமில்லாமல் சமரசமில்லாமல் தனது குடும்பத்திற்காக கண்ணியத்துடனும் அக்கறையுடனும் தனது வாழ்க்கையை வாழ திருமதி. மீனாவின் திறனை மீட்டு எடுத்துள்ளது. கொத்தட்டையில் ஜல் ஜீவன் மிஷன் தண்ணீரை மட்டுமல்ல ஒரு புதிய தாய் மற்றும் அவரது குழந்தைக்கு நேரம் மற்றும் நல்வாழ்வின் பரிசையும் கொண்டு வந்துள்ளது.

குழாய் இணைப்பு கிடைத்ததும் மீனாவின் வாழ்க்கை மாறுகிறது. அவள் தன் கதையை மகிழ்ச்சியுடன் பகிர்ந்து கொள்கிறாள்.

43. From Sickness to Safety: Smt. Chinnapappa's Story

In the remote village of Kannapanthal, nestled in Tiruvannamalai District, Tmt. Chinnapappa's life revolved around a struggle for water—a daily routine that was more than inconvenient; it was a threat to her family's health. Each morning, Chinnapappa would set out with buckets and pots, trekking a considerable distance to reach the nearest public tap. Water was available only at set times, and every villager scrambled to collect as much as possible before the supply ran dry. For Chinnapappa, this meant hours spent gathering water for her household, braving the crowd and carrying heavy loads back to her home.

Due to these limitations, Chinnapappa was forced to store large quantities of water in any container she could find, rationing it carefully over the days. However, with each passing day, the stored water became increasingly stagnant, giving rise to a new problem—unseen but serious health hazards. "We had no choice," Chinnapappa recalls. "We couldn't waste a single drop, even if it was making us ill." This stagnant water became a breeding ground for bacteria and other pathogens, causing frequent bouts of sickness in her household. Despite her best efforts to keep her family safe, the illnesses continued. Her children fell ill often, and even she was not spared, struggling to balance her responsibilities as a mother and the demands of her daily water trek. The situation weighed heavily on her. Chinnapappa knew the risk her family faced by drinking the stored water, yet she felt powerless to change it. Clean, accessible water was a distant hope in her mind—a luxury she believed was out of reach. Each time someone in her family fell sick, her heart sank, knowing the water was to blame but feeling helpless to prevent it.

Then, everything changed with the arrival of the Jal Jeevan Mission (JJM) in Kannapanthal. Word spread that the program would bring water pipelines directly to each household, and Chinnapappa dared to hope. Soon, a JJM team arrived at her home, installing a tap that connected her family to a steady supply of clean water. With a tap right at her doorstep, she no longer needed to store water for days or fear that it would make her family sick.

Now, Chinnapappa's days are filled with relief and gratitude. She no longer has to ration water or worry about her children's health. "Now we drink fresh water every day, without any fear," she says with a profound sense of relief. The constant trips to the tap, the heavy buckets, the stagnant water—all of these have become memories of the past.

The Jal Jeevan Mission has not only transformed Chinnapappa's daily life but has also brought peace of mind and security to her household. Her children are healthier, her family's worries have eased, and she is free from the fear of illness that once loomed over them. "Our lives have changed forever," she says, grateful for the clean, accessible water that has become part of their everyday life. For Chinnapappa, the journey from sickness to safety has been nothing short of transformative, a testament to the power of accessible, reliable water.

Chinnapappa sharing her transformational story.
Source: TWAD, Tamil Nadu

"Naanga Kannapanthal gramathula vaazhndhu irukom. Munna kudineer ku thoorathukku poi public tap la thanni eduthuttu, rendu-moonu naal ku pathiya vechom. Adhaan romba neram kashtamum, udambellam kashtapattadhum. Ippo JJM moolam kudineer veetukku pipe connection moolama varudhu. Thanni alachathum, noigalum illa. Enga kudumbam thanni amaidhiyana vaazhkaiya koduthadhu," Chinnapappa sandhoshama sonnal.

"We live in Kannapanthal village. Earlier, we fetched drinking water from a public tap far away and stored it for two to three days, which caused a lot of trouble and sickness. Now, through the JJM scheme, we have a pipe connection delivering drinking water directly to our homes. There's no wastage or health issues anymore. It has brought peace and health to our family," said Chinnapappa happily.

43. நோயிலிருந்து பாதுகாப்பு வரை: திருமதி சின்னப்பப்பாவின் கதை

திருவண்ணாமலை மாவட்டத்தில் அமைந்துள்ள தொலைதூர கிராமமான கண்ணப்பந்தலில், திருமதி சின்னப்பாப்பாவின் வாழ்க்கை தண்ணீருக்கான போராட்டத்தைச் சுற்றியே சுழன்றது - இது அவருக்கு அன்றாட சிரமத்தை ஏற்படுத்தியது. இது அவரது குடும்பத்தின் ஆரோக்கியத்திற்கு அச்சுறுத்தலாக இருந்தது. தினமும் காலையில், சின்னப்பப்பா வாளிகளுடனும் பானைகளுடனும் புறப்பட்டு, அருகிலுள்ள பொதுக் குழாயை அடைய கணிசமான தூரம் நடந்து செல்வார். குறிப்பிட்ட நேரத்தில் மட்டுமே தண்ணீர் கிடைத்தது, ஒவ்வொரு கிராமவாசியும் விநியோகம் நிறுத்தப்படுவதற்கு முன்பு முடிந்தவரை சேகரிக்க துடித்தனர். சின்னப்பப்பாவைப் பொறுத்தவரை, இது அவரது வீட்டிற்கு தண்ணீர் சேகரிப்பதற்கு அதிக சுமைகளை சுமந்து தனது வீட்டிற்கு கொண்டு வருவதால் மணிக்கணக்கில் நேரம் வீணாக செலவழிக்கப்பட்டது.

இதன் காரணமாக, சின்னப்பாப்பா தனக்குக் கிடைத்த அனைத்து குடங்களிலும் அதிக அளவு தண்ணீரைச் சேமித்து வைக்க வேண்டிய கட்டாயம் ஏற்பட்டது, பல நாட்களாக அதை கவனமாக பங்கீடு செய்தார். இருப்பினும், கடந்து செல்லும் ஒவ்வொரு நாளும், சேமிக்கப்பட்ட நீர் பெருகிய முறையில் தேங்கி நின்றது, இது ஒரு புதிய பிரச்சினைக்கு வழிவகுத்தது - கண்ணுக்குத் தெரியாத ஆனால் கடுமையான சுகாதார அபாயங்கள். " எங்களுக்கு வேறு வழியில்லை", என்று சின்னப்பப்பா நினைவு கூர்ந்தார். "எங்களால் ஒரு சொட்டு கூட வீணாக்க முடியாது, அது எங்களுக்கு உடல்நிலை சரியில்லாமல் போனாலும் கூட." இந்த தேங்கி நிற்கும் நீர் பாக்டீரியா மற்றும் பிற நோய்க்கிருமிகளின் இனப்பெருக்கம் செய்யும் இடமாக மாறியது, இதனால் அவரது வீட்டில் அடிக்கடி நோய்கள் ஏற்பட்டன. தனது குடும்பத்தை பாதுகாப்பாக வைத்திருக்க அவர் சிறந்த முயற்சிகளை மேற்கொண்ட போதிலும், நோய்கள் தொடர்ந்தன. அவரது குழந்தைகள் அடிக்கடி நோய்வாய்ப்பட்டனர், அவரும் கூட விட்டுவைக்கப்படவில்லை, ஒரு தாயாக தனது பொறுப்புகளையும். சூழ்நிலை அவளை மிகவும் பாதித்தது. சேமித்து வைக்கப்பட்ட தண்ணீரைக் குடிப்பதால் தனது குடும்பம் எதிர்கொள்ளும் ஆபத்தை சின்னப்பப்பா அறிந்திருந்தார், இருப்பினும் அதை மாற்ற சக்தியற்றவராக உணர்ந்தார். சுத்தமான மற்றும் பருகக்கூடிய தண்ணீர் அவளுடைய மனதில் ஒரு தொலைதூர கனவாக இருந்தது. ஒவ்வொரு முறையும் அவளுடைய குடும்பத்தில் யாராவது நோய்வாய்ப்படும்போது, அவளுடைய இதயம் சோகத்தில் மூழ்கும், தண்ணீர்தான் காரணம் என்று தெரிந்தும், அதைத் தடுக்க உதவியற்றவளாக உணர்ந்தாள். பின்னர், கண்ணபந்தலில் வீடுதோறும் குடிநீர் திட்டம் செயல்படுத்தப்பட்டபோது எல்லாம் மாறியது. இந்தத் திட்டம் ஒவ்வொரு வீட்டிற்கும் நேரடியாக குடிநீர் குழாய்களைக் கொண்டு வரும் என்று செய்தி பரவியது, விரைவில், ஊரக வளர்ச்சி துரையின் மூலம் அவர்கள் வீட்டில் ஒரு குழாய் நிறுவப்பட்டது. அது அவரது குடும்பத்திற்கு சுத்தமான தண்ணீர் கிடைப்பதை உறுதிப்படுத்தியது. அவரது வீட்டு வாசலில் ஒரு குழாய் இருப்பதால், அவர் இனி தண்ணீரை பல நாட்களுக்கு சேமிக்க வேண்டிய அவசியமில்லை அல்லது அது அவரது குடும்பத்தினரை நோய்வாய்ப்படுத்தும் என்ற பயமும் இல்லை. இப்போது, சின்னப்பப்பாவின் நாட்கள் நிம்மதியும், நன்றியும் நிறைந்தவை. அவர் இனி தன நேரத்தை தண்ணீருக்காக செலவழிக்க வேண்டியதில்லை அல்லது அவரது குழந்தைகளின் ஆரோக்கியத்தைப் பற்றி கவலைப்பட வேண்டியதில்லை. "இப்போது நாங்கள் எந்த பயமும் இல்லாமல் ஒவ்வொரு நாளும் சுத்தமான தண்ணீரைக் குடிக்கிறோம்", என்று அவர் மிகுந்த நிம்மதியுடன் கூறுகிறார். குழாயை நோக்கி இடைவிடாமல் பயணிப்பது, கனமான வாளிகள், தேங்கி நிற்கும் தண்ணீர்—இவை அனைத்தும் கடந்த காலத்தின் நினைவுகளாக மாறிவிட்டன. வீடுதோறும் குடிநீர் சின்னப்பாப்பாவின் அன்றாட வாழ்க்கையை மாற்றியமைத்தது மட்டுமல்லாமல், அவரது குடும்பத்திற்கு மன அமைதியையும் பாதுகாப்பையும் கொண்டு வந்துள்ளது. அவளுடைய பிள்ளைகள் ஆரோக்கியமாக இருக்கிறார்கள், அவளுடைய குடும்பத்தின் கவலைகள் தணிந்திருக்கின்றன, ஒரு காலத்தில் அவர்களை ஆட்கொண்டிருந்த நோய் பற்றிய பயத்திலிருந்து அவள் விடுபட்டிருக்கிறாள். "எங்கள் வாழ்க்கை என்றென்றும் மாறிவிட்டது," என்று அவர் கூறுகிறார், அவர்களின் அன்றாட வாழ்க்கையின் ஒரு பகுதியாக மாறியுள்ள சுத்தமான, அணுகக்கூடிய தண்ணீருக்கு நன்றி. சின்னப்பப்பாவைப் பொறுத்தவரை, பருகக்கூடிய சுத்தமான தண்ணீர் கிடைப்பது, நோயிலிருந்து பாதுகாப்பை நோக்கிய ஒரு அசாதாரமான மாற்றத்தை உருவாக்கியது.

சின்னபாப்பா தனது கதையை பகிர்கிறார்.

" நாங்க கண்ணப்பந்தல் கிராமத்துல வாழ்ந்துகிட்டு இருக்கோம். முன்ன குடிநீர் எடுக்க தூரத்துக்கு போய் பொது குழாய்ல எடுத்துக்கிட்டு வந்து, ரெண்டு மூனு நாள் வச்சிருப்போம். அதனால ரொம்ப கஷ்டம், உடம்பெல்லாம் வலிக்கும். இப்போ வீடுதோறும் குடிநீர் மூலமா குடிநீர் வீட்டுக்கு பைப் மூலமா வருது. தண்ணி எடுக்க அலைச்சலும் இல்ல, நோய்களும் இல்ல. எங்க குடும்பத்துக்கு அமைதியான வாழ்க்கைய குடுத்தது,"
- சின்னபாப்பா.

44. Dhanalakshmi's Story: A New Rhythm for Life

Life in Kannapanthal Village, Tiruvannamalai District, had always been a balancing act for Tmt. Dhanalakshmi. Living on the middle street of the village, she and her family had grown used to waiting for water at the public tap—if it came at all. Water arrived sporadically, sometimes every two days, sometimes not for three. Every time the tap sputtered to life, she had to be ready, dropping everything to ensure she collected enough for the family's needs.

Dhanalakshmi remembers the tension of waiting by the tap, listening intently for the first drops, knowing the window for collection could close at any moment. On days when water came late, her family struggled. She would miss cooking meals, and her family would be late to their daily work and school.

Then came the life-changing implementation of the Jal Jeevan Mission. A tap-water at her own doorstep became her new reality, bringing a steady, uninterrupted flow of clean water. Now, Dhanalakshmi's days have a new rhythm. She can plan meals without worry, send her children to school on time, and watch as her family leaves each day without the burden of water scarcity. "JJM gave us back our time and peace," she smiles, knowing the difference it has made in her life and her family's future.

Source: TWAD

Dhanlakshimis story in her own words

"Munna thanni varumnu kettukitte, tap pakkathula edha vidaama kathirundhene. Thanni late-aa varadhala samayalum, kudumbathoda velaiyum thavara pogum. Ippo, veetuku tap connection kidaichadhala, naan plan panni saapadu seiyalam; pasanga nerathukku school pogalaam," Dhanalakshmi magizhchiya sonnal.

"Before, I would wait by the tap, listening for the sound of water, afraid to step away. When it came late, cooking and my family's work would all be delayed. Now, with a tap connection at home, I can plan meals on time, and my children can go to school without a worry," said Dhanalakshmi with a smile.

Source: TWAD Tamil Nadu

44. தனலட்சுமியின் கதை: வாழ்க்கைக்கு ஒரு புதிய கோணம்

திருவண்ணாமலை மாவட்டம் கண்ணப்பந்தால் கிராம வாழ்க்கை திருமதி தனலட்சுமிக்கு எப்போதுமே ஒரு சமநிலையாக இருந்தது. கிராமத்தின் மையத்தில் வசிக்கும் அவரும் அவரது குடும்பத்தினரும் பொதுக் குழாயில் தண்ணீர் வருவதற்காக காத்திருக்கப் பழகிவிட்டனர். தண்ணீர் எப்போதாவது ஒருநாள் சரிவர கிடைத்தது. சில நேரங்களில் இரண்டு நாட்களுக்கு ஒருமுறை, சில நேரங்களில் மூன்று நாட்களுக்கு இல்லை. ஒவ்வொரு முறையும் குழாய் விநியோகிக்கப்படும்போது அவள் தயாராக இருக்க வேண்டியிருந்தது, குடும்பத்தின் தேவைகளுக்கு போதுமான அளவு சேகரிப்பதை உறுதி செய்ய எல்லாவற்றையும் கைவிடினாள்.

தண்ணீர் சேகரிப்பதற்கான ஜன்னல் எந்த நேரத்திலும் மூடப்படலாம் என்பதை அறிந்து, குழாயின் அருகே காத்திருந்து, முதல் சொட்டுகளை உன்னிப்பாகக் கவனித்துக் கொண்டிருந்த பதற்றத்தை தனலட்சுமி நினைவு கூர்ந்தார். தண்ணீர் தாமதமாக வந்த நாட்களில், அவரது குடும்பம் போராடியது. அவள் உணவு சமைப்பதை இழக்க நேரிடும், மேலும் அவளுடைய குடும்பம் அவர்களின் அன்றாட வேலைக்கும், பள்ளிக்கும் தாமதமாக செல்ல வேண்டிய சூழ்நிலை ஏற்படும்.

பின்னர் வீடுதோறும் குடிநீர் எனும் வாழ்க்கையை மாற்றும் திட்டம் செயல்படுத்தப்பட்டது. அவளுடைய வீட்டு வாசலில் ஒரு குழாயின் மூலம் கிடைக்கும் நீர் அவளுடைய புதிய யதார்த்தமாக மாறியது, சுத்தமான மற்றும் தினசரி நீர் விநியோகம் மன மகிழ்சியை ஏற்படுத்தியது. இனி அவர் கவலைப்படாமல் உணவைத் சமைக்கலாம், தனது குழந்தைகளை சரியான நேரத்தில் பள்ளிக்கு அனுப்பலாம், ஒவ்வொரு நாளும் தண்ணீர் பற்றாக்குறையின் சுமை இல்லாமல் அவரது குடும்பம் அன்றாட பணிகளை மேற்கொள்வதை பார்க்கலாம். "வீடுதோறும் குடிநீர் திட்டம் எங்களுக்கு எங்கள் நேரத்தையும், அமைதியையும் திருப்பித் தந்தது," என்று அவர் புன்னகைத்தார்.

அது அவரது வாழ்க்கையிலும் அவரது குடும்பத்தின் எதிர்காலத்திலும் ஏற்படுத்திய மாற்றத்தை அறிந்திருக்கிறார்.

" முன்ன தண்ணி வருமான்னு கேட்டுக்கிட்டே, தண்ணி குழாய் பக்கத்துல இடத்த விடாம காத்திருந்தேன். தண்ணி லேட்ட வரதால சமயலும், மத்த வேலையும் சரியான நேரத்துல செய்ய முடியாது. இப்போ, வீட்டுக்கு டேப் கனெக்ஷன் கெடச்சதால, நான் திட்டமிட்டு சாப்பாடு செய்யலாம், பசங்க நேரத்துக்கு பள்ளி போகலாம்,"
-தனலட்சுமி

45. Success Story of Har Ghar Jal in Kurandi Village, Kariapatty Panchayat Union, Virudhunagar District

Kurandi is a rural village within the Kariapatty Block of Virudhunagar District, located approximately 15 km from the block center. With a population of around 2,100 residents, Kurandi is largely comprised of farming families, many of whom live below the poverty line.

Despite the existing infrastructure, water scarcity persisted. Moreover, the dependence on public taps caused frequent inconveniences. People had to walk long distances to fetch water, and the pressure was often inconsistent, leading to unequal distribution and disputes.

Recognizing the need for improved water access, the Gram Sabha in Kurandi convened to draft a Village Action Plan in line with the JJM guidelines. After careful planning, surveys were conducted to map out the village and assess the areas in most need of piped water access. The estimated cost for this extensive upgrade was set at Rs. 48 lakh. The plan included the drilling of two new borewells, laying of main pipelines, distribution pipelines, and establishing FHTCs for all households in Kurandi. Each step of the execution was closely monitored by the Village Water & Sanitation Committee, along with district-level officers, to ensure quality and accountability. With this concerted effort, 630 households in Kurandi now have access to a consistent, clean water supply directly at their doorsteps.

A series of water quality tests were conducted to confirm the safety and purity of the newly supplied water. The results were promising, indicating that the water met all standards for potability.

With the implementation of JJM, Kurandi villagers experienced significant improvements in their daily lives:

Women being included as part of VAP

The impact of JJM on the residents of Kurandi has been profound, with villagers sharing how the new water connections have transformed their lives:

Brindha, Age 12, Daughter of Marudhappan:
"I am in the eighth standard at Government Middle School, Kurandi. Before, I had to collect water from the public tap, which was far from my home. It often made me late for school and left me with little time for studying. Now, I have water right at my doorstep, and I can go to school on time and focus on my studies. Our family no longer has to worry about water shortages or quality, which has brought a sense of relief to our lives. I am grateful for the time I now have to study and complete my assignments." it has made in her life and her family's future.

Pitchaiamma, Age 58, Wife of Mokkai:
"I am old and suffer from leg pain, which made it difficult to carry water from the public tap far from my house. Every trip was exhausting, and it worsened my pain. With the new tap connection, I now have water right at my doorstep, which has saved me both time and energy. I am thankful that I no longer have to endure the physical strain of fetching water."

Pushpam, Wife of Jeyaraj, Location: AD Colony: "We used to receive water only every two days, and fetching it was a struggle. The public tap was far, and by the time I got there, nearby households had often emptied the storage tanks. This made it difficult to get enough water for my family, and I would sometimes miss my daily wage work because of the time spent collecting water. Now, with the new tap under Jal Jeevan Mission, I get water every day at my doorstep, which allows me to go to work on time and increases my family's income."

The success of the Jal Jeevan Mission in Kurandi village underscores the importance of accessible and safe water for rural communities. This initiative has not only improved the quality of life for residents but also fostered a sense of independence, health, and productivity. With the reliable water supply, children attend school on time, elderly residents avoid the physical strain of fetching water, and workers can focus on their livelihoods without the constant worry of water scarcity. The impact of JJM has been life-changing for the people of Kurandi, bringing them security, convenience, and peace of mind.

Source: TWAD

Source: TWAD

45.விருதுநகர் மாவட்டம், காரியாபட்டி ஊராட்சி ஒன்றியம், வீடுதோறும் குடிநீர் இணைப்பு வழங்கப்பட்ட குரண்டி கிராம ஊராட்சியின் வெற்றிக் கதை :

விருதுநகர் மாவட்டம், காரியாபட்டி ஊராட்சி ஒன்றியத்திலிருந்து குரண்டி ஊராட்சி 15 கி. மீ. தொலைவில் அமைந்துள்ளது. இங்கு 644 குடும்பங்களைச் சேர்ந்த சுமார் 2100 மக்கள் வசித்து வருகிறார்கள். இவ்வுராட்சி பெரும்பாலும் விவசாய குடும்பங்களை சார்ந்தது. இவர்களில் பெரும்பாலும் வறுமைக் கோட்டிற்கு கீழே வாழ்ந்து வருகின்றனர்.

இவ்வூராட்சியில் குடிநீர் விநியோக உட்கட்டமைப்பில் போதிய வசதிகள் இல்லாததால் குடிநீர் பற்றாக்குறை நிலவியது. மேலும், இவ்வூராட்சியில் பொதுக்குழாய்களை மட்டும் மக்கள் நம்பி இருந்ததால் அடிக்கடி

தண்ணீர் பிரச்சனை இருந்து வந்தது. மேலும், மக்கள் குடிநீர் எடுக்க மிக நீண்ட தூரம் நடந்து செல்ல வேண்டியிருந்தது. கிராம செயல் திட்டம் தயார் செய்வதில் பெண்களின் பங்களிப்பு எனவே, பொதுமக்களுக்கு பாதுகாக்கப்பட்ட குடிநீர் வழங்க வேண்டியதின் அவசியத்தை உணர்ந்து வீடுதோறும் குடிநீர் திட்ட வழிகாட்டுதலின்படி கிராம செயல் திட்டம் தயார் செய்யப்பட்டு கிராம சபையில் ஒப்புதல் பெற தீர்மானிக்கப்பட்டது.

அதன்படி மிக கவனமாக திட்டமிடப்பட்டு குடிநீர் குழாய் விரிவாக்கம் அதிகம் தேவைப்படும் பகுதிகள், குடிநீர் விநியோக குழாய்கள் செல்லும் பாதைகளை கண்டறிந்து மதிப்பிடுவதற்கு கிராம படத்தினை உருவாக்கிட ஆய்வுகள் நடத்தப்பட்டது. இந்த ஆய்வுகளின் அடிப்படையில் ரூ. 48.00 இலட்சம் மதிப்பீட்டில் இரண்டு புதிய ஆழ்துளை கிணறுகள் அமைத்தல், குடிநீர் விநியோக குழாய்கள் மற்றும் அனைத்து வீடுகளுக்கும் தனிநபர் குடிநீர் குழாய்கள் அமைத்தல் உள்ளிட்ட பணிகளுக்கு விரிவான திட்ட அறிக்கை தயார் செய்யப்பட்டது. திட்டத்தினை திறம்பட செயல்படுத்துவதற்கு மாவட்ட அளவிலான அலுவலர்களுடன் (DWSM) கிராம குடிநீர் மற்றும் சுகாதார குழுவும் (VWSC) இணைந்து செயல்பட்டது. இத்தகைய ஒருங்கிணைந்த முயற்சியால் இக்கிராமத்திலுள்ள 644 வீடுகளுக்கும் பாதுகாக்கப்பட்ட மற்றும் தன்னிறைவான குடிநீர் விநியோகம் செய்யப்பட்டு வருகிறது.

মহিলাদের অন্তর্ভুক্ত করা হচ্ছে ভ্যাপের অংশ

தற்போது விநியோகம் செய்யப்படும் குடிநீரானது ஆய்வகத்தில் ஆய்வு செய்யப்பட்டு குடிப்பதற்கு உகந்தது எனவும், வேதியியல் மற்றும் பாக்டீரியா மாசற்ற குடிநீர் எனவும் சான்று பெறப்பட்டுள்ளது. மேலும், களநீர் பரிசோதனை பெட்டி மூலம் அவ்வப்போது ஆய்வு செய்யப்பட்டு குடிநீரின் தூய்மை தன்மை உறுதி செய்யப்பட்டு வருகிறது.

வீடுதோறும் குடிநீர் திட்டம் மூலம் கிராம மக்கள் தங்கள் அன்றாட வாழ்க்கையில் குறிப்பிடத்தக்க முன்னேற்றங்களை அனுபவித்து வருகின்றனர்.

இத்திட்டத்தின் மூலம் புதிய குடிநீர் குழாய் இணைப்புகள் பெற்ற பொதுமக்கள் வாழ்கையில் எத்தகைய மாற்றத்தை உருவாக்கியது என்பதை கீழ்காண்டவாறு பகிர்ந்து கொண்டுள்ளனர்.

সূত্র: TWAD

সূত্র: TWAD

সূত্র: TWAD

The UT of Ladakh

46. From Struggle to Strength: Nur Jahan's Journey to Clean Water and a Brighter Future

Nur Jahan, 36, from the remote village of Padum in Zanskar Valley, once led a daily life centered around a gruelling struggle—fetching water for her family from a river 4 kilometres away. The rocky terrain made the journey even more exhausting, and she spent hours each day carrying heavy containers of water back to her home. With no other option, she often had to sacrifice her personal time, education, and other opportunities just to ensure her family had water to drink, cook, and clean. Worse still, the water was dirty, leading to frequent illnesses in her household.

Before the Jal Jeevan Mission (JJM), Nur Jahan's children often had to miss school to assist with fetching water. It was a constant burden that left little room for dreams of education and a better future. The strain of poor health and endless work weighed heavily on her, but there seemed to be no escape.

Then came a turning point. The Jal Jeevan Mission undertook the challenge of installing water taps in Padum. Despite the tough, rocky terrain, workers managed to lay pipelines and install a tap right near her home. The impact was immediate and profound. Nur Jahan no longer had to spend half her day on the exhausting task of water collection. With clean water available just a few steps away, her life—and her family's future—was transformed.

Today, Nur Jahan proudly sends her children to school, relieved that they no longer have to sacrifice their education to help fetch water. The clean, safe water has also brought newfound health to her household, with water-borne diseases becoming a thing of the past. "The JJM water is a blessing," she says. "It has not only improved our health but has also given us hope for a better future."

Nur Jahan now has more time for herself and her family, and she envisions a brighter future for her children, knowing that education and good health are within their grasp—all because of the life-changing gift of clean water.

Nur Jahan was delighted to receive tap water connection at her house which has transformed her life.
Source: PHED, Ladakh

46. ནུར་ཇ་ཧཱན་གིས་གཡོན་བསྐོར་ལས་སྦྱོད་སྐྱེད་དུ་མིག་ལྷི་འི་བྱེས་པའི་སྣང་ དགོངས་ཀྱི་བྱེད་རྒྱུ།

སེམས་སེམས་མཐོང་འབྲུམ་ལས་སུ་གཡོན་བསྐོར་གད་སྤུད་བསྒྲིགས་སྤང་ལེན་དགའ་བསྐོར་དུས་ལྟར།
ཕྱོགས་སེམས་འབར་གཏོན་བཅད་ནས་སྨུག་ཞིག་བསྐྱངས་ནས་དོན་དང་ལག་རྟགས་འཕྲུལ་བ་དམག་བསྒྲིགས་ལས་འབྲེལ།
ནུར་ཇ་ཧཱན་༢༨

ལྷུར་པདུམ་གྲོང་དུ་མཚམས་དུས་དགེ་གནས་དེར་ཚེས་དམིགས་བྱིན་སྒྲུབ་དུས་མེད་དུས་ནས་མི་སེལ་ཡུལ་མཆོན་བརྟེན་དུ་རག་འགྲེད་ཀྱི་བཅད་མཛོས་ཀྱི་སྟོན་པ་ལ་དགའ་ལྡན་དགོངས་ཡོལ་ལག་རྟགས་མཚམས་བརྗོད་བཅད་མ་གསར་སྐད་ཅིག་མར་འགྱུར་ཀྱི་བསྐོར་སྒྲུབ་བདུད་སྟེ།

ཟོན་གྱི་འགྲུབ་སྤྱོད་སྤྱོད་བཏུབ་མེད་རྣམས་གཞོན་སྐད་ཀྱི་རྣམ་བཅུད་མེད་དེ་འཕེལ་འགྱུར་སྒྲུབ་ནས་གཞུང་དབང་རིགས་དང་གཏོན་བཅད་བདེ་མེད་མངགས་ཡིག་འདུལ་བྱུང་གི་ཕོ་གསར་མ་རྣམ་དག་འགྱུར་མེད་དུས་ནས།

བསྐོར་སྒྲུབ་ལས་སྤྱོད་དང་རྩིག་འཛུག་ཏུ་འགྲུབ་བཞུགས་དགའ་སྟེ་གོང་ནོར་གཅིག་བསྒྲུབ་ནས་མགོན་དེང་སྤོངས་མེད་དགའ་མཐོང་གྲུབ་སྒྲུབ་དེར་དང་དབང་གཞིས་མཐར་གཞུང་ལས་བཅད་བཅུག་སྤྱོད་ཏུ་རག་ཡོལ་དུས་སྟེ།

ནུར་ཇ་ཧཱན་དུས་རོགས་སྤྱོད་འབད་སྐྱོད་ཀྱི་མགོན་རག་ཡོལ་ཡང་བ་ཅན་མཚམས་བསྒྲུབ་ཡོལ་དང་གཞུང་དེ་མགོན་རིགས་དུ་འཛུག་གས་ར་དང་བདག་ཏུ་མི་ཡིན་སྒྲུབ་དགའ་མཁར་དེ་ཡོད་རེད།

སེམས་སེམས་མཐོང་འབྲུམ་ལས་སུ་གཡོན་བསྐོར་གད་སྤུད་བསྒྲིགས་སྤང་ལེན་དགའ་བསྐོར་དུས་ལྟར།

ཕྱོགས་སེམས་འབར་གཏོན་བཅད་ནས་སྨུག་ཞིག་བསྐྱངས་ནས་དོན་དང་ལག་རྟགས་འཕྲུལ་བ་དམག་བསྒྲིགས་ལས་འབྲེལ།

ནུར་ཇ་ཧཱན་༢༨
ལྷུར་པདུམ་གྲོང་དུ་མཚམས་དུས་དགེ་གནས་དེར་ཚེས་དམིགས་བྱིན་སྒྲུབ་དུས་མེད་དུས་ནས་མི་སེལ་ཡུལ་མཆོན་བརྟེན་དུ་རག་འགྲེད་ཀྱི་བཅད་མཛོས་ཀྱི་སྟོན་པ་ལ་དགའ་ལྡན་དགོངས་ཡོལ་ལག་རྟགས་མཚམས་བརྗོད་བཅད་མ་གསར་སྐད་ཅིག་མར་འགྱུར་ཀྱི་བསྐོར་སྒྲུབ་བདུད་སྟེ།
ཟོན་གྱི་འགྲུབ་སྤྱོད་སྤྱོད་བཏུབ་མེད་རྣམས་གཞོན་སྐད་ཀྱི་རྣམ་བཅུད་མེད་དེ་འཕེལ་འགྱུར་སྒྲུབ་ནས་གཞུང་དབང་རིགས་དང་གཏོན་བཅད་བདེ་མེད་མངགས་ཡིག་འདུལ་བྱུང་གི་ཕོ་གསར་མ་རྣམ་དག་འགྱུར་མེད་དུས་ནས།

བསྐོར་སྒྲུབ་ལས་སྤྱོད་དང་རྩིག་འཛུག་ཏུ་འགྲུབ་བཞུགས་དགའ་སྟེ་གོང་ནོར་གཅིག་བསྒྲུབ་ནས་མགོན་དེང་སྤོངས་མེད་དགའ་མཐོང་གྲུབ་སྒྲུབ་དེར་དང་དབང་གཞིས་མཐར་གཞུང་ལས་བཅད་བཅུག་སྤྱོད་ཏུ་རག་ཡོལ་དུས་སྟེ།

ནུར་ཇ་ཧཱན་དུས་རོགས་སྤྱོད་འབད་སྐྱོད་ཀྱི་མགོན་རག་ཡོལ་ཡང་བ་ཅན་མཚམས་བསྒྲུབ་ཡོལ་དང་གཞུང་དེ་མགོན་རིགས་དུ་འཛུག་གས་ར་དང་བདག་ཏུ་མི་ཡིན་སྒྲུབ་དགའ་མཁར་དེ་ཡོད་རེད།

نور جہاں اپنے گھر میں نلکے کا پانی ملنے سے بہت خوش ہوئی، جس نے اس کی زندگی بدل دی۔

47. We Too Can Now Go To School!

The breathtaking yet remote high-altitude desert of Ladakh, Zanskar Valley is a land of extremes. Spanning over 7,000 sq. km and home to around 16,000 resilient souls, its majestic beauty masked a harsh reality: water scarcity. For generations, the people of Zanskar lived at the mercy of limited public stand posts, where long lines and empty pots defined their daily struggles. Life revolved around this precious resource, turning water into a daily battleground. For 10-year-old Tsering Dolkar, this was life as she knew it.

The hours spent fetching water meant missing school, and even when she could attend, exhaustion often clouded her ability to learn. This cycle of hardship changed forever with the Government of India's Jal Jeevan Mission (JJM). Through relentless efforts led by the Public Health Engineering (PHE) Division, a miracle unfolded. Every home—2,788 households—was provided with reliable, direct access to clean water. For the first time, the taps in Zanskar Valley didn't just trickle; they flowed with promise.

The journey wasn't easy. Brutal winters, with temperatures dropping to -30°C, froze both the water sources and pipelines. Yet, where nature posed a challenge, human ingenuity found a way. Engineers designed an underground pipeline system insulated to withstand the harshest cold, and solar-powered submersible pumps ensured uninterrupted supply. A dedicated winter water line brought the warmth of reliability even during the snowiest of days. Schools and Anganwadi centers were not forgotten. With water connections and solar water heaters, children could finally wash their hands with warm water, and staff could provide clean, hygienic meals.

For families like Tsering's, this was more than convenience—it was a lifeline. No longer burdened with the daily struggle for water, children could finally attend school without interruption. "Phaymay tsokpa lazhang le yang nyipa gi skina logtang tsap, skam yapsang nga," Tsering Dolkar khoklang tang nyamchen ghi yikstang. ("I can now go to school with clean hands and a fresh mind. I'm no longer tired from carrying water," Tsering Dolkar said with a shy smile.)

Today, Zanskar Valley stands as a shining example of how determination and innovation can overcome even the harshest obstacles. The collaboration between the Zanskar community and the PHE team turned an age-old struggle into a success story. Against the backdrop of biting cold and isolation, clean water flows freely to every doorstep, transforming lives and offering hope to children like Tsering Dolkar, who now dreams of a brighter future—with a full schoolbag and empty water pot. This is not just a story of water. It is a story of empowerment, dignity, and the promise of education for every child. Because, at long last, they too can now go to school.

Children happily bracing the tap connections, giving them new opportunities in life.
Source: PHED, Ladakh

"Nyinmo skamtsa khoks phyang gangla ngarmo gi tapla khoks ringzang," Tsering Dolkar tsar thunmo zhi yang nangsa khemsang. ("In the mornings, we would wake early to stand in long lines at the tap, hoping to fill our buckets before the water ran out," said Tsering Dolkar, her small hands wrapped around a now-abundant water tap.)

47. ང་རང་དུ་ལྟ་སློབ་གྲྭ་ལ་འགྲོ་ཆོག་པའི་སྐྱར་འདུག!

ལ་དྭགས་ཀྱི་མཐོ་སྒང་བྱེ་ཐང་དེ་ཟན་ཀར་ལུང་གཤོངས་ནི་མཐའ་མ་ཚམས་ཀྱི་ས་ཆ་ཞིག་རེད།
རྒྱ་ཁྱོན་གྲུ་བཞི་མ་7000ལྷག་ཙམ་ལ་ཁྱབ་ཡོད། ཀི་ལོ་མི་ཊར་ ༧༥
དང་ཐེམ་འཁྱུག་ལྡན་པའི་སེམས་ཅན་ ༧༥༠༠༠
ཙམ་གྱི་ཁྱིམ་གཞིས་ཡིན།
མི་རབས་དུ་མའི་རིང་ལ་ཟན་སི་ཀར་གྱི་མི་དམངས་ཚོ་ཚད་གཞི་ཅན་གྱི་སྤྱི་པའི་སྔོད་གནས་ཀྱི་སྙིང་རྗེའི་འོག་ཏུ་འཚོ་བ་སྐྱེལ་བཞིན་ཡོད།
མི་ཚེ་ནི་རིན་ཐང་ཅན་གྱི་ཐོན་ཁུངས་འདིའི་མཐའ་འཁོར་དུ་འཁོར་ནས་ཆུ་དེ་ཉིན་རེའི་དམག་འཁྲུག་གི་ས་ཆར་བསྒྱུར་ཡོད།
ལོ་10ལ་སླེབས་པའི་བུ་མོ་ཚེ་རིང་གིས་འདི་ནི་མོ་རང་གིས་འབྲེལ་བ་བརྒྱུད་ནས་མི་ཚེ་ཡིན།
ཏ་དེས་ཆུ་འཁྱེར་བར་དུས་ཚོད་བཏང་བ་དེས་སློབ་གྲྭ་བཀག་པ་སྟོན་གྱི་ཡོད།
དཀའ་ངལ་གྱི་འཁོར་རིམ་འདི་རྒྱ་གར་གཞུང་གི་ཇལ་ཛི་ཝན་ལས་འགུལ་ (J J M) དང་མཉམ་དུ་གཏན་ནས་འགྱུར་བ་ཕྱིན་ཡོད།
སྤྱི་པའི་འཕྲོད་བསྟེན་བཟོ་སྐྲུན་སྡེ་ཚན་གྱིས་སྡེ་ཁྲིད་པའི་འབད་བརྩོན་ཕྱོད་མེད་བྱས་པ་བརྒྱུད་ནས་ཡ་མཚན་ཅན་གྱི་བྱ་བ་ཞིག་བྱུང་ཡོད།
ཁྱིམ་ཚང་རེ་རེར་ཁྱིམ་ཚང་ ༢༧༨༨
ལ་བརྟན་པོ་དང་ཐད་ཀར་ཆུ་གཙང་མ་མགོ་སྦྱོད་བྱས།
ཐེངས་དང་པོ་ཟན་སི་ཀར་ལུང་གཤོངས་ཀྱི་ཆུ་རགས་དེ་ཚོ་ཆུ་བཞུར་བ་ཙམ་མ་རེད། ཁོང་ཚོ་ཁས་ལེན་དང་བཅས་བཞུར་བྱུང་།
འགྲུལ་བཞུད་དེ་ལས་སླ་པོ་མ་རེད། དྲོད་ཚད་-30°C
ལ་མར་ཆག་པའི་དགུན་ཁ་དྲག་པོ་དེས་ཆུའི་ཐོན་ཁུངས་དང་མདོང་ལམ་གཉིས་ཀ་འཁྱགས་པ་བཟོས་ཡོད། ཡིན་ནའང་།
རང་བྱུང་ཁམས་ལ་འགྲན་སློང་བྱུང་བའི་ས་ཆར་མིའི་བློ་རིག་གིས་ལམ་ཁ་ཞིག་རྙེད་པ་རེད།
བཟོ་སྐྲུན་པ་ཚོས་ས་འོག་མདོང་ལམ་གྱི་མ་ལག་ཅིག་བཟོས་ནས་གྲང་ངར་ཆེ་ཤོས་ལ་གདོང་ལེན་བྱེད་ཐུབ་པ་དང་།
དགུན་དུས་ཀྱི་ཆུ་ཐིག་དམིགས་བསལ་གྱིས་གངས་ཀྱི་དུས་ཚོད་ཀྱང་བརྟན་པོའི་དྲོད་ཁོལ་འཁྱེར་ཡོང་།
སློབ་གྲྭ་དང་ཨང་སྒྲན་ཕ་ཊེ་ལྟེ་གནས་ཁག་བརྗེད་མེད་པ་རེད།
ཆུ་མཐུད་ཁང་དང་ཉི་འོད་ཀྱི་ཆུ་ཚ་པོ་བཟོ་ཆས་ཡོད་པས་ཕྲུ་གུ་ཚོས་མཐར་ཆུ་དྲོ་པོས་ལག་པ་བཀྲུ་ཐུབ་པ་དང་།
ལས་བྱེད་པས་གཙང་མ་དང་འཕྲོད་བསྟེན་ལྡན་པའི་ཁ་ལག་མགོ་སྦྱོད་བྱེད་ཐུབ་ཀྱི་ཡོད།
ཚེ་རིང་ལྟ་བུའི་ཁྱིམ་ཚང་ལ་འདི་ནི་སྟབས་བདེ་ལས་མང་བ་ཡིན།
ཉིན་ལྟར་ཆུའི་ཆེད་དུ་འཐབ་རྩོད་བྱེད་པའི་ཁུར་པོ་མེད་པར་ཕྲུ་གུ་ཚོ་མཐར་སློབ་གྲྭར་བར་ཆད་མེད་པར་འགྲོ་ཐུབ་ཀྱི་ཡོད།
"ཕའི་མའི་ཚོགས་པ་ལ་ཞང་ལེ་ཡང་ཉི་པ་གི་སྐྱ་ན་ལོག་ཏང་ཙམ། སྐམ་ཡབ་སང་ང"
ཚེ་རིང་སྒྲོལ་དཀར་ཁོག་ལང་ཏང་ཉམ་ཆེན་གྱི་ཡིག་སྟྲང།
ང་ད་ལྟ་ལག་པ་གཙང་མ་དང་སེམས་གསར་པ་ཞིག་གིས་སློབ་གྲྭར་འགྲོ་ཐུབ་ཀྱི་ཡོད། ང་ཆུ་འཁྱེར་ནས་ངལ་དུབ་མེད་པ་རེད།
དེང་སང་ཟན་སི་ཀར་ལུང་གཤོངས་ནི་བློ་ཐག་ཚོད་པོ་དང་གསར་གཏོད་ཀྱིས་དཀའ་ངལ་ཆེ་ཤོས་དེ་དག་ལས་རྣམ་པར་རྒྱལ་ཐུབ་པའི་དཔེ་མཚོན་འོད་སྟོང་འབར་བ་ཞིག་ཏུ་གྱུར་ཡོད།
ཟན་སི་ཀར་སྤྱི་ཚོགས་དང་ཊ་ཁག་གི་མཉམ་ལས་ཀྱིས་ལོ་མང་རིང་གི་འཐབ་རྩོད་དེ་གྲུབ་འབྲས་ལྡན་པའི་གཏམ་རྒྱུད་ཅིག་ཏུ་བསྒྱུར་ཡོད།
གྲང་ངར་དང་ཁེར་རྐྱང་གི་རྒྱབ་ལྗོངས་འོག
ཆུ་གཙང་མ་དེ་སྒོ་ཚང་མར་རང་མོས་དང་རྒྱུག་བཞིན་ཡོད་ལ། མི་ཚེ་སྒྱུར་བཅོས་གཏོང་བ་དང་།
ཚེ་རིང་སྒྲོལ་དཀར་ལྟ་བུའི་བྱིས་པ་ཚོར་རེ་བ་སྤྲོད་ཀྱི་ཡོད།
འདི་ནི་ཆུའི་གཏམ་རྒྱུད་ཙམ་མ་ཡིན་པར།
དེ་ནི་བྱིས་པ་ཚང་མར་དབང་ཆ་སྤྲོད་རྒྱུ་དང་། གཟི་བརྗིད།
དེ་བཞིན་ཤེས་ཡོན་གྱི་ཁས་ལེན་བྱེད་པའི་སྐྱུང་ཞིག་རེད།
གང་ཡིན་ཟེར་ན།
མཐའ་མར་ཁོང་ཚོ་ཡང་ད་ལྟ་སློབ་གྲྭར་འགྲོ་ཐུབ་ཀྱི་ཡོད།

Children happily bracing the tap connections, giving them new opportunities in life.
Source: PHED, Ladakh

"Nyinmo skamtsa khoks phyang gangla ngarmo gi tapla khoks ringzang," Tsering Dolkar tsar thunmo zhi yang nangsa khemsang. ("In the mornings, we would wake early to stand in long lines at the tap, hoping to fill our buckets before the water ran out," said Tsering Dolkar, her small hands wrapped around a now-abundant water tap.)

48. Leading the Way to Clean Water: Najma Bano's Mission to End Water Scarcity in Bhimbat

In the rugged valleys of Drass, Kargil—where icy winds sweep through the landscape and winters freeze water sources solid—Najma Bano's voice has risen as a force of change. A former Block Development Council (BDC) member from Bhimbat, Najma turned her personal grief and her community's struggles into a relentless pursuit of clean and sustainable water for all.

Najma's concern for water quality stemmed from deep personal loss. "I have seen families crumble because of dirty water. My people would drink water from streams and open wells, not realizing the diseases it carried. We lost children; we lost hope," she shared, her voice heavy with emotion. "I knew I had to act—not just as a leader but as one of them."

She mobilized her village, holding countless Gram Sabhas to explain the Jal Jeevan Mission's importance. Her rallying cry wasn't just about access but about safety. Collaborating with PHED Kargil, she spearheaded an initiative to train women in water quality testing, ensuring every family could trust the water they consumed.

"We started small," Najma said. "Five women from each village learned how to test the water using Field Test Kits. Watching them grow into protectors of their community's health—it was incredible. For the first time, women held the power to change the narrative of clean water in Bhimbat."

Her efforts didn't stop at training. Najma personally inspected every stage of the mission, from laying pipelines to installing taps. Winters brought unique challenges—pipes had to be insulated, and backup systems ensured water flowed even when temperatures dropped to -30°C.

Today, Bhimbat's homes, schools, and Anganwadi centers are equipped with reliable tap water. The burden of fetching water from distant, contaminated sources is gone, replaced by a sense of security and pride. "We no longer live in fear of what our water might do to us," Najma said. "This isn't just about taps; it's about giving my people dignity."

Najma's story is a testament to resilience and the power of local leadership. She turned Bhimbat's struggle into a movement, proving that even in the harshest conditions, determination can lead to transformation. Her legacy is etched in every drop of clean water that now flows in her community.

Najma Bano is being recognized for her contribution by the PHED department.
Source: PHED, Ladakh

48. ཁོང་ཚོས་ཆུ་གཙང་མ་ལ་སྣེ་ཁྲིད་བྱེད་ཀྱི་ཡོད། དེ་ནི་ཧྲིམ་ཧྲཏ་ནང་ཆུ་དཀོན་པོ་མེད་པ་བཟོ་རྒྱུའི་ན་ཛ་མ་བྷ་ནོ་ཡི་ལས་འགན་ཡིན།

ཀར་གྷིལ་གྱི་དྲ་རས་ཀྱི་ལུང་གཞོངས་རྩུབ་པོའི་ནང་། འཁྲུགས་ཀླུང་གིས་ས་ཆ་དེ་བཀལ་ནས་དགུན་དུས་ཆུའི་ཐོན་ཁུངས་བ རྟན་པོ་ཆགས་ཡོད། བི་མ་ཧྲཏ་ནས་ཡོང་བའི་ས་ཁུལ་འཕེལ་རྒྱས་ལྡན་ཚོགས་ཀྱི་འཐུས་མི་ཟུར་པ་ན་ཛ་མ་ཡིས་ཁོ་མོའི་སྙིར་གྱི་སེམས་སྟུག་དང་ཁོ་མོའི་སྤྱི་ཚོགས་ཀྱི་འཐབ་རྩོད་དེ་མི་ཚང་མར་ཆུ་གཙང་མ་དང་ཡུན་གནས་ཐུབ་པའི་འབད་བརྩོན་ལ་བསྒྱུར་ཡོད། ནཛ་མའི་ཆུའི་ཐུས་ཚད་ལ་སེམས་ཁྲལ་བྱེད་པ་དེ་སྙིར་གྱི་གྲོང་གུན་ག ཧིང་ཟབ་པོ་ལས་བྱུང་བ་རེད། "ངས་ཆུ་བཙོག་པའི་རྐྱེན་གྱིས་ནང་མི་ཚོ་ཚག་སྒོ་བྱུང་བ་མཐོང་ཡོད། ངའི་མི་དམངས་ཀྱིས་ཆུ་བོ་དང་ཁ་ཕྱེ་བའི་ཆུ་རགས་ནས་ཆུ་འཐུང་བ་དང་། དེས་འཁྱེར་བའི་ནད་རིགས་ཤེས་རྟོགས་མ་བྱུང་། ང་ཚོས་ཕྲུ་གུ་ཤོར་ཡོད། ང་ཚོའི་རེ་བ་བརླག་སོང་།" ཁོ་མོའི་སྐད་གདངས་སེམས་འགྲུལ་ཐེབས་ནས་བརྗེ་རེས་བྱས། "ངས་འགོ་ཁྲིད་ཅིག་ཡིན་པའི་ཆ་ནས་མ་ཡིན་པར་ཁོང་ཚོའི་གྲས་ཤི་ག་ཡིན་པའི་བྱ་སྤྱོད་སྤེལ་དགོས་པ་ཤེས་ཀྱི་ཡོད།" མོས་ཁོ་མོའི་གྲོང་གསེབ་དེ་བསྒྱུར་བཅོས་བྱས་ཏེ་ཇལ་ཇི་ཝན་གྱི་ལས་འགན་གྱི་གལ་ཆེན་རང་བཞིན་འགྲེལ་བཤད་རྒྱག་ཆེད་དུ་གྲམ་ས་ཧྲ་མང་པོ་འཚོགས་པ་རེད། མོའི་འདུ་འཛོམས་ཀྱི་ཅ་སྐད་དེ་འགྲོ་འོང་སྐོར་ཁོ་ན་མ་ཡིན་པར་བདེ་འཇགས་སྐོར་ཡིན། དང་མཉམ་དུ་ཁོ་མོས་བུད་མེད་ཚོར་ཆུའི་ཐུས་ཚད་བརྟག་དཔྱད་བྱེད་པའི་སྦྱོང་བརྡར་སྤྲོད་པའི་ལས་གཞི་ཞིག་ལ་འགོ་ཁྲིད་བྱས་པ་དང་། ང་ཚོས་ཆུང་ཆུང་ནས་འགོ་བཙུགས་པ་རེད།"ཅེས་ནྭ་ཛ་མ་ཡིས་བཤད །

"གྲོང་གསེབ་རེ་ནས་བུད་མེད་ལྔ་རེ་ཡིས་ཞིང་ཁའི་ཚོད་ལྟའི་ཡོ་ཆས་བཀོལ་ནས་ཆུ་ཚོད་ལྟ་བྱེད་སྟངས་ཤེས་ཡོད། དེ་ཚོ་ཁོང་ཚོའི་སྤྱི་ཚོགས་ཀྱི་འཕྲོད་བསྟེན་སྲུང་སྐྱོབ་པ་ཆགས་པར་བ ལྟས་པ་དེ་ཡིད་ཆེས་བྱེད་ཐུབ་ཀྱི་མ་རེད། ཐོག་མར་བུད་མེད་ཚོས་ཧྲིམ་ཧྲཏ་ནང་ཆུ་གཙང་མའི་གཏམ་རྒྱུད་བསྒྱུར་བའི་དབང་ཆ་བཟུང་ཡོད།"

མོའི་འབད་བརྩོན་དེ་སྒྲོང་བཏར་ཁོ་ནར་མཚམས་འཇོག་བྱས་མེད། ན་ཛ་མ་ཡིས་རང་ཉིད་ཀྱིས་ལས་འགན་གྱི་རིམ་པ་རེ་རེ་ལ་ཞིབ་བཤེར་བྱས། དགུན་དུས་ལ་འགྲན་སློང་གཞན་དང་མི་འདྲ་བ་ཞིག་འཁྱེར་ཡོང་། ཆུ་མཛོད་ལ་གློག་འགོག་བྱེད་དགོས་པ་དང་། དྲོད་ཚད་-30°C ལ་མར་ཆག་ཀྱང་རྒྱབ་སྐྱོར་མ་ལག་གིས་ཆུ་རྒྱུག་པར་ཁག་ཐེག་བྱེད་ཀྱི་ཡོད། དེང་སང་ཧྲིམ་ཧྲཏ་ཀྱི་ཁྱིམ་ཚང་དང་། སློབ་གྲྭ། ཨང་ལྒན་ཝ་ཌི་ལྟེ་གནས་བཅས་ལ་བརྟན་པོའི་ཆུ་ཁུངས་བཀོད་སྒྲིག་བྱས་ཡོད། ཐག་རིང་དང་བཙོག་པའི་ཆུ་ཁུངས་ནས་ཆུ་ལེན་པའི་ཁུར་པོ་དེ་མེད་པར་གྱུར་ནས་དེའི་ཚབ་ཏུ་བདེ་འཇགས་དང་སྟོབས་པ་ཡོད། ང་ཚོའི་ཆུ་ཡིས་ང་ཚོར་ག་རེ་བྱེད་སྲིད་པའི་འཇིགས་སྣང་འོག་འཚོ་བ་སྐྱེལ་གྱི་མེད། "འདི་ནི་ཆུ་རགས་གཅིག་པུའི་སྐོར་མ་རེད། ངའི་མི་དམངས་ལ་ཆེ་མཐོང་སྤྲོད་རྒྱུ་དེ་རེད།"

Najma Bano is being recognized for her contribution by the PHED department.
Source: PHED, Ladakh

ནང་མ་ཡི་སྐྱུང་ནི་བརྟན་ལྷིང་དང་ས་གནས་ཀྱི་འགོ་ཁྲིད་ཀྱི་སྟོབས་ཤུགས་ཀྱི་བདེན་དཔང་ཡིན།

མོས་ཧྲིམ་ཧྲཏ་ཀྱི་འཐབ་རྩོད་དེ་ལས་འགྱུལ་ཞིག་ལ་བསྒྱུར་ནས་གནས་སྟངས་རྒྱུབ་ཤོར་ནང་ཡང་བློ་ཐག་ཆོད་པོས་བསྒྱུར་བཅོས་གཏོང་ཐུབ་པ་ཁུངས་སྐྱེལ་བྱས།

མོའི་ཤུལ་བཞག་དེ་ད་ལྟ་ཕོ་མོའི་སྡེ་ཁུལ་དུ་བཞུར་བཞིན་པའི་ཆུ་གཙང་མའི་ཐིགས་པ་རེ་རེའི་ནང་དུ་བྲིས་ཡོད།

དེང་སང་ཧྲིམ་ཧྲཏ་ཀྱི་ཁྲིམ་ཚང་དང་། སློབ་གྲྭ། ཨང་ཧྲན་ལྷ་ཊེ་ལྷེ་གནས་བཅས་ལ་བརྟན་པོའི་ཆུ་ཁུངས་བཀོད་སྒྲིག་བྱས་ཡོད།

ཐག་རིང་དང་བཅོག་པའི་ཆུ་ཁུངས་ནས་ཆུ་ལེན་པའི་ཁུར་པོ་དེ་མེད་པར་གྱུར་ནས་དེའི་ཚབ་ཏུ་བདེ་འཇགས་དང་སྤྲོབས་པ་ཡོད།

ང་ཚོའི་ཆུ་ཡིས་ང་ཚོར་ག་རེ་བྱེད་སྲིད་པའི་འཇིགས་སྣང་འོག་འཚོ་བ་སྐྱེལ་གྱི་མེད། “འདི་ནི་ཆུ་རགས་གཅིག་པུའི་སྐོར་མ་རེད། ངའི་མི་དམངས་ལ་ཆེ་མཐོང་སྤྲོད་རྒྱུ་དེ་རེད།”

ནང་མ་ཡི་སྐྱུང་ནི་བརྟན་ལྷིང་དང་ས་གནས་ཀྱི་འགོ་ཁྲིད་ཀྱི་སྟོབས་ཤུགས་ཀྱི་བདེན་དཔང་ཡིན།

མོས་ཧྲིམ་ཧྲཏ་ཀྱི་འཐབ་རྩོད་དེ་ལས་འགྱུལ་ཞིག་ལ་བསྒྱུར་ནས་གནས་སྟངས་རྒྱུབ་ཤོར་ནང་ཡང་བློ་ཐག་ཆོད་པོས་བསྒྱུར་བཅོས་གཏོང་ཐུབ་པ་ཁུངས་སྐྱེལ་བྱས།

མོའི་ཤུལ་བཞག་དེ་ད་ལྟ་ཕོ་མོའི་སྡེ་ཁུལ་དུ་བཞུར་བཞིན་པའི་ཆུ་གཙང་མའི་ཐིགས་པ་རེ་རེའི་ནང་དུ་བྲིས་ཡོད།

49. Flowing Against the Freeze, Matayen's Taps Brought Life to -40°C,

In the icy heart of Ladakh, where temperatures drop as low as -40°C, the remote village of Matayen has defied the odds to achieve a life-changing milestone. Known as the gateway to some of the world's coldest inhabited areas, Matayen and its 60 households have faced a relentless battle for one of life's most basic need, water. For generations, villagers, particularly women and elders, endured daily journeys across treacherous, ice-covered paths, carrying heavy loads of water from distant sources. This was not merely a routine task; it was a feat of survival, often risking injury on dangerous trails.

But today, Matayen's story has changed. For the first time ever, clean, running water flows directly to the village, a dream come truly made possible by the Indian government's ambitious Jal Jeevan Mission (JJM). Engineers from the Public Health Engineering Department (PHED) in Kargil overcame incredible challenges to make this possible, laying pipes five feet underground and insulating them to withstand the brutal achieved in one of the world's most unforgiving landscapes.

Transforming the lives of people with FHTCs in the freezing temperature.
Source: PHED, Ladakh

"Yontan tangmi, choong gaam nak po chu nal-thok paani asla loong sheda zung," Bilal Ahmed Sheikh tha-stong mo khitsang chey. *"Sring-mo tangmi khar chu chhut thangthang chay, nang langmi nachang lang tsangtsa sa-tang chay."*

"In all my years, I never thought our village would have tap water," said Bilal Ahmed Sheikh with amazement. *"Before, water was so scarce that bathing or keeping clean was almost impossible."*

Similarly, Khalida Bano shared her relief: *"Nga maang sring-mo tangmi, tsangma-chhut paani khar chu nangmi la sa-no thongsa chay, le butcha tang sa cheth mo chay," nang-ka chho mo khitsang chey.*

"Earlier, untreated water made illnesses common, but now we have clean water and health," she expressed with happiness.

The initiative also trained five local women in water quality monitoring. Using distributed water testing kits, they ensure safe drinking water, earning respect and a livelihood within their community.

Bilal Ahmed Sheikh, a 43-year-old resident, expressed astonishment and joy, “In all my years, I never imagined we’d have tap water in our village. Bathing was rare, and we couldn’t clean properly because of the scarcity.” Another resident, Khalida Bano, shared that illnesses due to untreated water were common, but thanks to JJM, clean water and health are now within reach. As part of the initiative, water testing kits have been distributed, and five local women have been trained to monitor water quality regularly—gaining both a source of income and respect in their community.

Now, with round-the-clock access to clean, safe water, Matayen is experiencing a profound transformation. Children can attend school with better hygiene, health standards have dramatically improved, and the village’s overall quality of life has soared. This achievement is not just a win for Matayen, it’s a testament to the power of innovation, determination, and resilience. Matayen’s story now stands as an inspiring beacon, proving that even the harshest challenges can be overcome with vision and dedication.

Bilal Ahmed Sheikh, a 43-year-old resident, expressed astonishment and joy, “In all my years, I never imagined we’d have tap water in our village. Bathing was rare, and we couldn’t clean properly because of the scarcity.”

49. འཁྱགས་ཟིལ་ལ་ཁ་གཏད་གཙོག་པ་དང་། མ་ཏ་ཡིན་གྱི་ཆུ་རགས་ཀྱིས་འཚོ་བ་-40°C ལ་སླེབས་ཡོད

ལ་དྭགས་ཀྱི་འཁྱགས་རོམ་གྱི་སྙིང་ཁམས་ནང་དྲོད་ཚད་-40°C བར་ཆག་པའི་མཐའ་མཚམས་གྲོང་གསེབ་མ་ཏ་ཡིན་གྱིས་མི་ཚེ་འགྱུར་བ་གཏོང་བའི་ལམ་ཚད་རྗེ་རིང་ཞིག་ཐོབ་པར་དཀའ་ངལ་ལ་ཁ་ག་ཏད་གཙོག་གི་ཡོད།
འཛམ་གླིང་གི་མི་འབོར་གྲང་མོ་ཆེ་ཤོས་ཀྱི་ས་ཁུལ་ཁ་ཤས་ཀྱི་སྒོ་ཆེན་དུ་ངོས་འཛིན་བྱེད་པའི་མ་ཏ་ཡིན་དང་དེའི་ཁྱིམ་ཚང་༤༠ ལ་མི་ཚེའི་གཞི་རྩའི་དགོས་མཁོ་ཆེ་ཤོས་ཆུ་ཡི་ཆེད་དུ་དམག་འཁྲུག་སྲུ་མཐུད་ནས་འཐུད་ཡོད།
མི་རབས་དུ་མའི་རིང་ལ་གྲོང་ཚོའི་མི་མང་དང་།
ལྷག་པར་དུ་བུད་མེད་དང་རྒན་གོན་ཚོས་ཉིན་ལྟར་འཁྱགས་རོམ་གྱི་ས་ཁེངས་པའི་ལམ་བརྒྱུད་ནས་ཐག་རིང་གི་ཆུ་ཁུངས་ནས་ཆུ་ལྤིད་པོ་འཁྱེར་ནས་ཉིན་ལྟར་འགྲུལ་བཞུད་བྱེད་པར་བཟོད་སྒོམ་བྱེད་ཀྱི་ཡོད།
འདི་ནི་རྒྱུན་ལྡན་གྱི་ལས་ཀ་ཁོ་ན་མ་རེད།

དེ་ནི་འཚོ་གནས་ཀྱི་བྲུས་རྗེས་ཤིག་ཡིན་པ་དང་།
ཉིན་ཁ་ཅན་གྱི་ལམ་ཐོག་ཏུ་རྨས་སྐྱོན་ཕོག་པའི་ཉེན་ཁ་ཡང་ཡང་ཡོད། འོན་ཀྱང་དེ་རིང་སྣ་ཏ་ཡིན་གྱི་ལོ་རྒྱུས་ལ་འགྱུར་བ་ཕྱིན་ཡོད།
ཐེངས་དང་པོ་ཆུ་གཙང་མ་དང་རྒྱུག་བཞིན་པ་དེ་གྲོང་ཚོའི་ནང་དུ་ཐད་ཀར་རྒྱུག་བཞིན་ཡོད།

ཀར་སྐྱིལ་གྱི་སྤྱི་པའི་འཕྲོད་བསྟེན་བཟོ་སྐྲུན་ལས་ཁུངས་ཀྱི་བཟོ་སྐྲུན་པ་ཚོས་འདི་ལྟར་བྱེད་ཐུབ་པའི་ཆེད་དུ་ཡིད་ཆེས་བྱེད་ཐུབ་པའི་འགྲན་སློང་མང་པོ་ལས་རྒྱལ་ནས་ས་འོག་ལ་པེ་ཊེ་ལྡེ་ཙམ་གྱི་མདོང་ལམ་བཙུགས་ནས་དགུན་ཁའི་འཁྱགས་རོམ་དྲག་པོ་དེ་ལ་གདོང་ལེན་བྱེད་པར་དེ་དག་ལ་འགོག་རྐྱེན་བཟོས་ཡོད།
གྲུབ་འབྲས་དེ་འཛམ་གླིང་གི་དགོངས་ཡང་མེད་པའི་ས་ཆ་གཅིག་གི་ནང་ལ་འབྱུང་མ་ཐུབ་པའི་གནས་སྟངས་ཤིག་རེད།

ལོ་༤༣
ཡིན་པའི་གནས་སྡོད་པ་ཧྲི་ལལ་ཨ་ཧ་མེ་ཊེ་ཤེ་ཁི་ཡིས་ཡ་མཚན་དང་དགའ་སྤྲོ་བརྗོད་དོན། ཆུ་བཤལ་བྱེད་པ་དེ་དཀོན་པོ་ཡིན་པ་དང་། དཀོན་པོ་ཡོད་པའི་རྐྱེན་གྱིས་ང་ཚོས་གཙང་མ་བཟོ་ཐུབ་ཀྱི་མེད།”
གཞན་ཡང་ཁ་ལི་ཊ་ཐྣ་ནོ་ཡིས་ཆུ་གཙང་མ་བཟོས་པའི་ནད་གཞི་དེ་རྒྱུན་ལྡན་ཡིན་སོང་།

འོན་ཀྱང་ཛེ་ཛེ་ཨེམ་གྱི་ཐུགས་རྗེ་ལ་བརྟེན་ནས་ཆུ་གཙང་མ་དང་འཕྲོད་བསྟེན་ད་ལྟ་ཐོབ་ཐུབ་ཀྱི་ཡོད།
ལས་གཞིའི་ཆ་ཤས་ཤིག་ཡིན་པའི་ཆ་ནས་ཆུ་ཚོད་ལྟའི་ཡོ་ཆས་བཀྲམ་ཡོད་པ་དང་།
ས་གནས་ཀྱི་བུད་མེད་ལྔ་ལ་ཆུའི་སྤུས་ཚད་ལ་རྒྱུན་དུ་ལྟ་རྟོག་བྱེད་པའི་སྦྱོང་བརྡར་སྤྲད་ཡོད།
ད་ལྟ་ཆུ་ཚོད་གཅིག་གི་ནང་ལ་ཆུ་གཙང་མ་དང་བདེ་འཇགས་ལྡན་པ་ཐོབ་ཐུབ་པའི་དབང་གིས་མ་ཏ་ཡིན་ལ་འགྱུར་བ་གཏིང་ཟབ་པོ་བྱུང་བཞིན་ཡོད།
ཐུ་གུ་ཚོ་འཕྲོད་བསྟེན་ཡག་པོ་ཡོད་པའི་སློབ་གྲྭར་འགྲོ་ཐུབ་པ་དང་། འཕྲོད་བསྟེན་གྱི་ཚད་གཞི་མངོན་གསལ་དོད་པོས་ཡར་རྒྱས་ཕྱིན་པ་དང་།
མཐར་ཕྱིན་འདི་མ་ཐ་ཡིན་ལ་རྒྱལ་ཁ་ཙམ་མ་ཡིན་པར་གསར་གཏོད་དང་། བློ་ཐག་ཆོད་པོ། བརྟན་ཞིང་བཅས་ཀྱི་སྟོབས་ཤུགས་ལ་མངོན་གསལ་བྱེད་ཀྱི་ཡོད།
མཐའ་མའི་སྒྲུང་འདི་ད་ལྟ་སེམས་ཤུགས་འཕེལ་བའི་འོད་སྣང་ཞིག་ཏུ་གྱུར་ཡོད།

Transforming the lives of people with FHTCs in the freezing temperature.
Source: PHED, Ladak

ཧྲི་ལལ་ཨ་ཧ་མེ་ཊེ་ཤེ་ཁི་ཐ་སྟོང་མོ་ཁི་ཚང་ཆེ།
"   སྲིང་མོ་ཏང་མི་ཁར་ཆུ་ཆུཏ་ཐང་ཐང་ཆ།
ནང་ལང་མི་ན་ཆང་ལང་ཚང་ས་ཏང་ཆ།"

"ངའི་ལོ་མང་རིང་ང་ཚོའི་གྲོང་གསེབ་ལ་ཆུ་ཁུངས་ཡོད་སྲིད་པར་ངས་ནམ་ཡང་བསམ་སྐྱོང་མེད།" ཅེས་ཧྲི་ལལ་ཨ་ཧ་མེ་ཊེ་ཤེ་ཁི་ཡིས་ཡ་མཚན་ཆེན་པོས་བཤད།

" སྔོན་མ་ཆུ་དེ་འདྲ་དཀོན་པོ་ཡོད་པས་ཁྲུས་བྱེད་པའམ་གཙང་མ་བཟོ་རྒྱུ་དེ་ཧ་ལམ་མི་སྲིད་པ་རེད།"

དེ་དང་འདྲ་བར་ཁ་ལི་ཊ་ཧྥ་ནོ་ཡིས་ཕོ་མོའི་སེམས་གསོ་བརྗེ་རེས་བྱས་དོན།   " ང་མང་སྲིང་མོ་ཏང་མི།
ཚང་མ་ཆུཏ་པླ་ནེ་ཁར་ཆུ་ནང་མི་ལ་ས་ནོ་ཐོང་ས་ཅེ།
ལེ་བྱཆ་ཏང་ས་ཆེཐ་མོ་ཅེ།"

" སྔོན་ཆད་གཙང་མ་བཟོས་པའི་ཆུ་ཡིས་ནད་གཞི་ཁྱབ་ཆེ་བ་བཟོས་ཡོད་ཀྱང་།
ད་ལྟ་ང་ཚོར་ཆུ་གཙང་མ་དང་འཕྲོད་བསྟེན་ཡོད།" ཅེས་མོ་རང་གིས་དགའ་སྤྲོའི་ངང་བརྗོད་ཡོད།

ལས་གཞི་དེས་ད་དྲུང་ས་གནས་བུད་མེད་ལྔ་ལ་ཆུའི་སྤྲུས་ཚད་ལྟ་ཞིབ་ཀྱི་སྦྱོང་བརྡར་སྤྲད་ཡོད།
ཆུ་ཚོད་ལྔའི་ཡོ་ཆས་བཀྲམ་སྤེལ་བྱས་པ་བེད་སྤྱད་དེ་ཁོང་ཚོས་འཐུང་ཆུ་བདེ་འཇགས་དང་།   བརྩི་བཀུར་ཐོབ་པ།
ཁོང་ཚོའི་སྤྱི་ཚོགས་ནང་འཚོ་གནས་ཐོབ་པར་ཁག་ཐེག་བྱེད་ཀྱི་ཡོད།

པར་ ༩༣
ཡིན་པའི་གནས་སྟོད་པ་ཧྲི་ལལ་ཨ་ཧ་མེ་ཊེ་ཤེ་ཁི་ཡིས་ཡ་མཚན་དང་དགའ་སྤྲོ་བརྗོད་དོན། ཆུ་བཤལ་བྱེད་པ་དེ་དཀོན་པོ་ཡིན་པ་དང་། དཀོན་པོ་ཡོད་པའི་རྐྱེན་གྱིས་ང་ཚོས་གཙང་མ་བཟོ་ཐུབ་ཀྱི་མེད།"

The UT of Jammu and Kashmir

50. Jal Diwali: The Gift of Water in Machil, Shojan, and Narastan

In the snow-clad valleys and rugged mountains of Jammu & Kashmir, life has always been a test of resilience against nature's extremes. For the residents of Machil, Shojan, and Narastan, securing a single pot of water was a daily ordeal. Isolated by geography and blanketed in snow for much of the year, they trekked long distances through dangerous, rocky terrain just to fetch water. Women and children bore this burden, their days consumed by the arduous task of bringing home life's most basic necessity.

In Machil, perched near the Line of Control, nearly 80 households depended on faraway streams. Mothers worried as their children skipped school to carry water. In Shojan and Narastan, tribal families braved icy trails and wild animals, often with frozen hands and aching limbs, as they fetched water from distant, unreliable sources. Every journey was a battle, fought silently but endured heavily.

Then came the Jal Jeevan Mission (JJM), like a lifeline extended by the mountains themselves. The Jal Shakti Department, alongside Pani Samitis and local villagers, embarked on the incredible challenge of bringing water to these remote communities. Through sheer determination and collective effort, pipelines were laid across treacherous terrain, ensuring clean water flowed directly into homes for the first time.

The benefits of the mission ripple through every aspect of village life. Women, once bound by the daily grind of fetching water, now use their time to focus on their families and earn livelihoods. Children, free from water-fetching duties, are back in classrooms, dreaming of brighter futures.

Crucially, the mission empowered the community to take ownership of their water systems. Villagers, trained in water quality testing using Field Testing Kits, now play an active role in maintaining their water supply. "Yi panun paani chukh," says Tariq Ahmed of Shojan. ("This water is ours, and it is our responsibility.")

Today, as clean water flows into their homes, the people of these villages celebrate what they've named "Jal Diwali." For them, it is more than a festival—it is the triumph of hope, dignity, and progress.

What was once a life defined by scarcity has transformed into one filled with possibilities. The Jal Jeevan Mission has not only brought water to these remote villages but also restored their right to dream and thrive amidst the mountains they call home.

"Yi chukh chani hawael," says Amina Begum, a resident of Machil, in disbelief. ("This feels like a blessing.") She recalls the struggles of the past: "Rath wandai chi manz, namuch khus na raath paani lawun." ("In the dead of winter, we couldn't rest until water was fetched, no matter how late it was.")

The transformation has been profound. In Narastan, 12-year-old Zahra shares how life has changed for her: "Schoolas manz mein gharas sukh rozna, walvath chuna paani maaz gaatschun." ("I now go to school peacefully because I no longer have to fetch water.") She smiles shyly before adding, "Yim sukh ha chukh neawan koun." ("These comforts feel like a new life.")

In Narastan, J&K, young girls, who once sacrificed school to help their families, are now free to pursue their studies. They no longer miss classes to gather water – their education, and their dreams, are within reach again.

Source: PHED, J&K

50. جل دیوالی: مچل، شوجن اور نارستان میں پانی کا تحفہ

کرنا روز کی آزمائش تھی۔ جغرافیائی محل وقوع کی وجہ سے باقی علاقوں سے الگ تھلگ اور سال کے بیشتر حصے۔تک برف میں لپٹے ہوئے ان علاقوں کے باشندوں نےصرف پانی لانے کے لیے خطرناک، پتھریلے خطوں سے طویل فاصلے طے کئے ہیں۔ خواتین اور بچے یہ بوجھ اٹھاتے ہیں، ان کے دن گھریلو زندگی کی بنیادی
ضرورت لانے کے مشکل کام میں گزر جاتے ہیں۔
لائن آف کنٹرول کے قریب واقع مژھل میں تقریباً ۸۰ گھرانوں کا انحصار دور دراز کی ندیوں پر تھا۔ مائیں پریشان تھیں کیونکہ ان کے بچوں نے پانی لانے کے لیے اسکول کو خیرباد کیا تھا۔ شوجن اور نارستان میں، قبائلی خاندانوں نے دور دراز،نا قابل بھروسہ ذرایع سے پانی حاصل کرنے کے دوران اکثر شدید سردی سے کانپتے ہوئے ہاتھوں اور درد درد سے کراہتے اعضاء کے ساتھ برفیلے پگڈنڈیوں اور جنگلی جانوروں کا بہادری سے مقابلہ کیا۔ان کا ہر سفر ایک جنگ تھا، جس کا انہتائی برداشت کرتے ہوئے انہوں نے خاموشی سے مقابلہ کیا۔

اس کے بعد جل جیون مشن (جے جے ایم) آیا،
جیسے ان پہاڑوں نے خود بخود اپنی جیون ریکھا کو وسیع کر دیا ہے۔ محکمہ جل شکتی نے پانی سمیتیوں اور مقامی دیہاتیوں کے ساتھ مل کر ان دور افتادہ آبادیوں تک پانی پہنچانے کے ناقابل یقین چیلنج کا آغاز کیا۔ گھروں تک پہلی بار براہ راست صاف پانی پہنچانے کو یقینی بنانے کے لئے پُر عزم اور اجتماعی کوششوں کے ذریعے، دشوار گذار پہاڑیوں سے گزرتے ہوئے پائپ لائنیں بچھائی گئیں۔
اس مشن کے فوائد دیہی زندگی کے ہر پہلو میں نظر آرہے ہیں۔ خواتین، جو کبھی روزانہ پانی لانے کے چکر میں میلوں کی مصافت طے کر کے تھک ہار جاتی تھیں، اب اپنا وقت اپنے خاندان پر توجہ موکوز کرنے اور روزی روٹی کمانے کے لیے استعمال کرتی ہیں۔ بچے، پانی لانے کی ذمہ داری سے آزاد ہو کر اب روشن مستقبل کے خواب دیکھ کر کلاس رومز میں واپس آئے ہیں۔
اس مشن نے خاص طور پر کمیونٹی کو اپنے پانی کے نظام پر حق جتلانے کا اختیار دیا۔ فیلڈ ٹیسٹنگ کٹس کا استعمال کرتے ہوئے پانی کے معیار کی جانچ میں تربیت یافتہ دیہاتی اب اپنی پانی کی فراہمی کو برقرار رکھنے میں ایک فعال کردار ادا کرتے ہیں۔ شوجن کے طارق احمد کہتے ہیں: ”یہ ہے پُنُن آب چھُ، تہ یہِ چھے سانی ذمہ دآری“ (”یہ پانی ہمارا ہے اور یہ ہماری ذمہ داری ہے۔“)
آج جیسے ہی ان کے گھروں میں صاف پانی بہتا ہے، تو یہ لوگ جشن مناتے ہیں جسے۔انہوں نے ”جل دیوالی“ کا نام دیا ہے۔ ان کے لیے یہ ایک تہوار سے کم نہیں ہے۔ یہ امید، وقار اور ترقی کی فتح ہے۔
جوزندگی کبھی قلت اور محرومی سے متعین ہوتی تھی اب امکانات سے بھری ہوئی زندگی میں بدل گئی ہے۔ جل جیون مشن نے نہصرف ان دور دراز دیہاتوں میں پانی پہنچایا ہے بلکہ ان کے خواب دیکھنے اور ان پہاڑوں جنہیں وہ اپنے گھر کہتے ہیں کے درمیان جینے کا حق بھی بحال کیا ہے۔
۲۔ جل جیون مشن نے جموں و کشمیر کے پالی باشندوں کے نلوں کے ذریعے پانی کے خواب کو شرمندہئ تعبیر کیا ہے:

In Narastan, J&K, young girls, who once sacrificed school to help their families, are now free to pursue their studies. They no longer miss classes to gather water – their education, and their dreams, are within reach again.

Source: PHED J&K

“Yi chukh chani hawael,” says Amina Begum, a resident of Machil, in disbelief. (“This feels like a blessing.”) She recalls the struggles of the past: *“Rath wandai chi manz, namuch khus na raath paani lawun.”* (“In the dead of winter, we couldn’t rest until water was fetched, no matter how late it was.”)

51. Jal Jeevan Mission Fulfills Piped Water Dream of Palli Residents of Jammu & Kashmir

Union government's Jal Jeevan Mission has fulfilled the piped water dream of Palli villagers, prompting the dwellers to thank the Prime Minister, Shri Narendra Modi for providing water connections to every household in their hamlet.

Nestled in the wheat fields on the right side of the Jammu and Punjab national highway, the mood in the village was festive on Sunday when the prime minister was in their locality to address representatives of the Panchayati Raj Institutions across the country, officials said.

Randhir Kaul, Sarpanch of Palli Panchayat expressed gratitude to PM Modi.

Under the ambitious Jal Jeevan Mission launched by the PM in 2019, Palli village of Samba has been fully saturated with 448 Functional Household Tap Connections (FHTCs) at a cost of Rs 143.40 lakh, officials said. A school teacher and 'Pani Samiti' member of Palli village, Sunaina hailed the Government's initiative to save women from drudgery, particularly school-going girls who had to fetch water from long distances.

The Palli village water supply project also included a tube well of 6000 Gallons of discharge capacity per hour.

“We have also constructed the sump tank as part of the scheme which is 30,000 gallons of capacity. The water will be stored in a 30,000-gallon capacity sump tank which will suffice the water requirement of Palli village,” a senior engineer of J&K Jal Shakti Department said.

On August 15, 2019, the Prime Minister launched the Jal Jeevan scheme to provide piped water to all households in the country in the coming years. In his Independence Day address, Shri Narender Modi ji, honourable Prime Minister, had said half of the country's households do not have access to piped water. To ensure that every household gets clean piped water in rural areas, the Prime Minister set the target of covering all households by 2024 despite challenges.

The UT of J&K has already achieved the target of providing tap water to all 22,422 schools and 23,926 Anganwadi Centres in the union territory ahead of time, the officials said. According to official figures, 4,86,000 households have been provided with functional tap water connections in the union territory since the launch of the scheme- on 15 August 2019. To ensure a potable drinking water supply, the J&K Jal Shakti Department has also opened 97 water quality testing laboratories across the UT for the general public to test water samples at a nominal rate.

Happy faces of children using the Tap Connection provided under JJM scheme.
Source: PHED J&K

Water Quality test being conducted in AWC.
Source: PHED, J&K

"Palli gaam chu bohat taraqqi dekhis 2019 chus, jab se Jal Jeevan Mission shuru hui. Aajkal ladkiyan, jo pehle door se paani lane mein waqt guzaarti thi, apna waqt ab padhayi mein laga sakti hain, taki unke career bright ho sakein," she said.

"Palli village has witnessed massive development after the inception of Jal Jeevan Mission in 2019. Girls can now invest the time, which they used to spend in fetching water from distant areas, in studies for brighter careers," she said.

"Main, pandrah saal ki Nandini Sharma, ab paani ka bottle ghar se nahi laati, kyunki school mein saf paani ka supply mil gaya hai," she added.

"Sixteen-year-old Nandini Sharma said, she has stopped bringing bottled water from home after her school was provided with a pure drinking water supply.”

۵۱. جل جیون مشن نے جموں و کشمیر کے پلی کے رہائشیوں کے پائپ پانی کے خواب کو پورا کیا۔

مرکزی حکومت کے جل جیون مشن نے پالی گاؤں کے عوام کے نلوں کے ذریعے پانی کے خواب کو شرمندۂ تعبیر کیا ہے، جس کے لئے وہاں کے باشندوں نے اپنے گاؤں کے ہر گھر میں پانی کے کنکشن فراہم کرنے کے لیے وزیر اعظم جناب نریندر مودی کا شکریہ ادا کیا ہے۔

عہدیداروں نے بتایا کہ جموں اور پنجاب قومی شاہراہ کے دائیں جانب لہلہاتے ہوئے گندم کے کھیتوں میں واقع گاؤں میں اتوار کو اس وقت جشن کا سا ماحول تھا جب وزیر اعظم ملک بھر کے پنچایتی راج اداروں کے نمائندوں سے خطاب کرنے کے لیے ان کے علاقے میں موجود تھے۔

عہدیداروں نے مزید بتایا کہ ۲۰۱۹ میں وزیر اعظم کے ذریعہ شروع کیے گئے پُر جوش جل جیون مشن کے تحت سامبا کے پالی گاؤں کو ۱۴۳,۴۰ لاکھ روپے کی لاگت سے ۴۴۸ قابل استعمال گھریلو نل کنکشن (ایف ایچ ٹی سئیز) سے مکمل طور پر سیچوریٹ کیا گیا ہے۔ اسکول کے ایک مُدرس اور پالی گاؤں کی 'پانی سمیتی' کی رکن، سنینا نے خواتین، خاص طور پر اسکول جانے والی لڑکیوں کو جنہیں دور دراز سے پانی لانا پڑتا ہے، کو مشقت سے بچانے کے لیے حکومت کے اس اقدام کی ستائش کی۔

جے اینڈ کے جل شکتی محکمہ کے ایک سینئر انجینئر نے کہا: "ہم نے اس سکیم کے ایک حصے کے طور پر ۳۰,۰۰۰ گیلن گنجائش والا ایک سمپ ٹینک بھی بنایا ہے۔ پانی کو ۳۰,۰۰۰ گیلن کی گنجائش والے سمپ ٹینک میں ذخیرہ کیا جائے گا جو پالی گاؤں کی پانی کی ضرورت کو پورا کرے گا"۔

۱۵ اگست ۲۰۱۹ کو وزیر اعظم نے آنے والے سالوں میں ملک کے تمام گھرانوں کو نلوں کے ذریعے پانی فراہم کرنے کے لیے جل جیون اسکیم کا آغاز کیا۔ یوم آزادی کے موقع پر اپنے خطاب میں جناب نریندر مودی جی، عزت مآب وزیر اعظم نے کہا تھا کہ ملک کے آدھے گھرانوں کو نلوں کے ذریعے پانی تک رسائی نہیں ہے۔ اس بات کو یقینی بنانے کے لیے کہ دیہی علاقوں میں ہر گھر کو نلوں کے ذریعے صاف پانی ملا، وزیر اعظم نے چیلنجوں کے باوجود ۲۰۲۴ تک تمام گھرانوں کو اس سکیم کے دائرے میں لانے کا ہدف مقرر کیا۔

عہدیداروں کا مزید کہنا ہے کہ جموں و کشمیر کے یو ٹی نے وقت سے پہلے ہی یونین ٹیریٹری میں تمام ۲۲,۴۲۲ اسکولوں اور ۲۳,۹۲۶ آنگن واڑی مراکز کو نل کا پانی فراہم کرنے کا ہدف حاصل کرلیا ہے سرکاری اعداد و شمار کے مطابق ۱۵ اگست ۲۰۱۹ کو اسکیم کے آغاز کے بعد سے مرکزی زیر انتظام علاقے میں ۴,۸۶,۰۰۰ گھرانوں کو نل کے ذریعے پانی کے فعال کنکشن فراہم کیے گئے ہیں۔ پینے کے صاف پانی کی فراہمی کو یقینی بنانے کے لیے جموں و کشمیر کے جل شکتی محکمے نے عام لوگوں کے لیے پانی کے نمونوں کی معمولی شرح پر جانچ کرنے کے لیے پورے یو ٹی میں پانی کے معیار کی جانچ کرنے والی ۹۷ لیبارٹریز بھی کھولی ہیں۔

Happy faces of children using the Tap Connection provided under JJM scheme.
Source: PHED J&K

Water Quality test being conducted in AWC.
Source: PHED, J&K

Follow, like and subscribe

Jal Jeevan Mission, India | @jaljeevan_ | Jal Jeevan Mission

@jaljeevanmission | jjm.gov.in | Jal Jeevan Mission

Government of India
Ministry of Jal Shakti
Department of Drinking Water & Sanitation
National Jal Jeevan Mission
New Delhi - 110 003
e - mail: rnd-ddws@gov.in

© JalJeevanMission-2024